Ranjit

10 Apr 1985

07:05 PM

Panchkulaula

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

Ranjit

लिंग	: पुल्लिंग
जन्म तिथि	: **10/04/1985**
दिन	: बुधवार
जन्म समय	: **19:05:00 घंटे**
इष्ट	: 32:38:09 घटी
स्थान	: **Panchkulaula**
देश	: India

अक्षांश	: 30:43:00 उत्तर
रेखांश	: 76:47:00 पूर्व
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	: -00:22:52 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	: 18:42:08 घंटे
वेलान्तर	: -00:01:22 घंटे
साम्पातिक काल	: 07:57:03 घंटे
सूर्योदय	: 06:01:44 घंटे
सूर्यास्त	: 18:47:16 घंटे
दिनमान	: 12:45:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	: उत्तर
ऋतु	: वसन्त
सूर्य के अंश	: 26:58:37 मीन
लग्न के अंश	: 01:35:31 तुला

अवकहड़ा चक्र	
लग्न–लग्नाधिपति	: तुला – शुक्र
राशि–स्वामी	: **धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	: **मूल – 3**
नक्षत्र स्वामी	: केतु
योग	: परिघ
करण	: वणिज
गण	: राक्षस
योनि	: श्वान
नाड़ी	: आद्य
वर्ण	: क्षत्रिय
वश्य	: मानव
वर्ग	: मूषक
युँजा	: अन्त्य
हंसक	: अग्नि
जन्म नामाक्षर	: भा–भारत
पाया(राशि–नक्षत्र)	: ताम्र – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: मेष

Ranjit

पंचांग

दादा का नाम	:
पिता का नाम	:
माता का नाम	:
जाति	:
गोत्र	:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	चैत्र	20
पंजाबी	संवत : 2041	चैत्र	28
बंगाली	सन् : 1391	चैत्र	27
तमिल	संवत : 2041	पंगुनी	28
केरल	कोल्लम : 1160	मीनम	28
नेपाली	संवत : 2041	चैत्र	28
चैत्रादि	संवत : 2042	वैशाख	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2042	चैत्र	कृष्ण 6

पंचांग	
सूर्योदय कालीन तिथि	: 6
तिथि समाप्ति काल	: 23:20:34
जन्म तिथि	: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल	: 07:26:51 घंटे
जन्म योग	: मूल
सूर्योदय कालीन योग	: वरियान
योग समाप्ति काल	: 13:05:13 घंटे
जन्म योग	: परिघ
सूर्योदय कालीन करण	: गर
करण समाप्ति काल	: 12:05:15 घंटे
जन्म करण	: वणिज
भयात	: 29:05:22
भभोग	: 58:10:34
भोग्य दशा काल	: केतु 3 वर्ष 5 मा 20 दि

घात चक्र	
मास	: श्रावण
तिथि	: 3-8-13
दिन	: शुक्रवार
नक्षत्र	: भरणी
योग	: वज्र
करण	: तैतिल
प्रहर	: 1
वर्ग	: मार्जार
लग्न	: धनु
सूर्य	: तुला
चन्द्र	: मीन
मंगल	: वृश्चिक
बुध	: सिंह
गुरु	: धनु
शुक्र	: कुम्भ
शनि	: कन्या
राहु	: कुम्भ

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

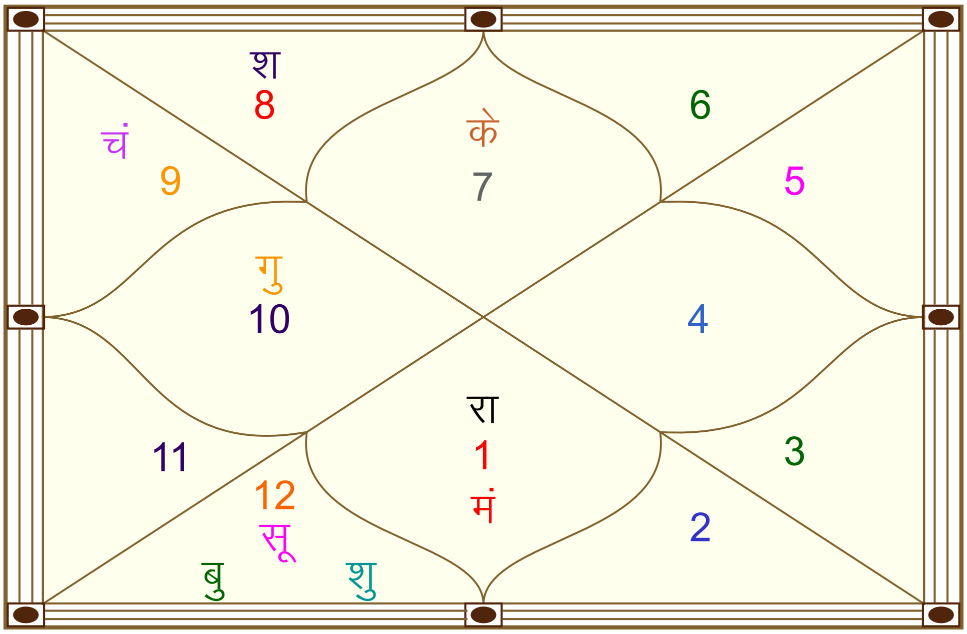

चन्द्र कुंडली

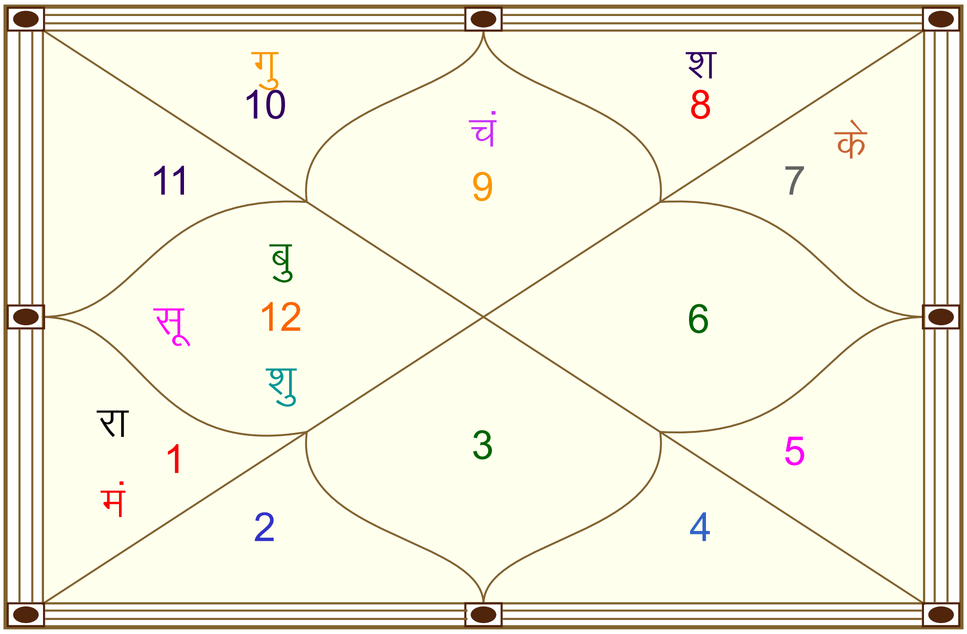

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

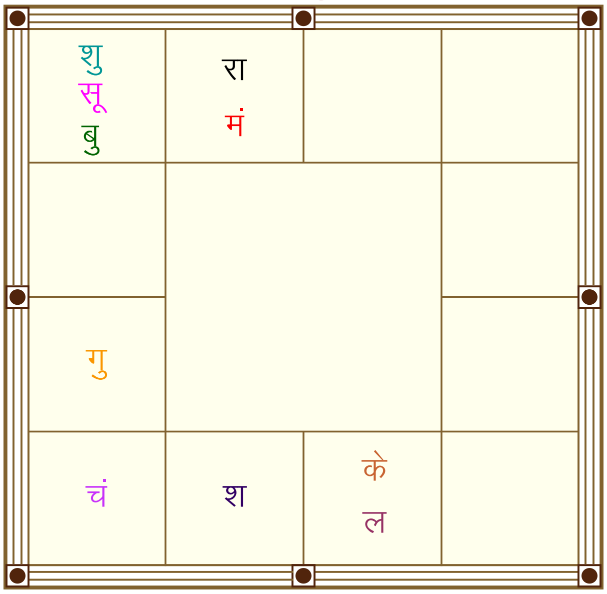

लग्न कुंडली

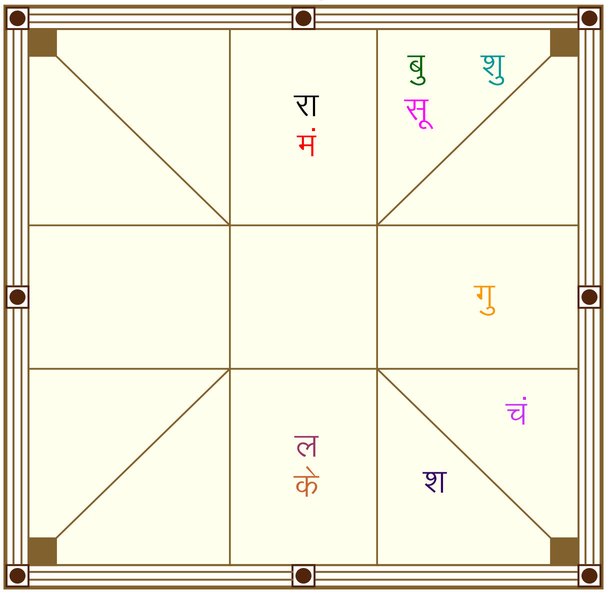

विंशोत्तरी	
केतु 3वर्ष 5मा 20दि	
केतु	
10/04/1985	
01/10/2101	
केतु	30/09/1988
शुक्र	30/09/2008
सूर्य	30/09/2014
चन्द्र	30/09/2024
मंगल	01/10/2031
राहु	30/09/2049
गुरु	30/09/2065
शनि	30/09/2084
बुध	01/10/2101

योगिनी	
उल्का 2वर्ष 11मा 22दि	
सिद्धा	
02/04/2024	
02/04/2031	
सिद्धा	12/08/2025
संकटा	03/03/2027
मंगला	13/05/2027
पिंगला	02/10/2027
धान्या	02/05/2028
भ्रामरी	10/02/2029
भद्रिका	31/01/2030
उल्का	02/04/2031

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

Ranjit

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	01:35:31	308:42:11	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	———
सूर्य			मीन	26:58:37	00:58:53	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			धनु	06:43:02	13:45:02	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
मंगल			मेष	25:15:17	00:42:26	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	स्वराशि
बुध	व	अ	मीन	14:59:14	00:33:37	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	नीच राशि
गुरु			मक	18:49:46	00:09:04	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	नीच राशि
शुक्र	व		मीन	16:27:03	00:32:19	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	उच्च राशि
शनि	व		वृश्चि	03:32:44	00:03:07	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	शत्रु राशि
राहु			मेष	24:50:15	00:01:21	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
केतु			तुला	24:50:15	00:01:21	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	24:11:23	00:00:56	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	———
नेप	व		धनु	09:57:41	00:00:11	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	———
प्लूटो	व		तुला	10:04:38	00:01:38	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	गुरु	———
दशम भाव			कर्क	03:33:16	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	शनि	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:38:51

लग्न–चलित

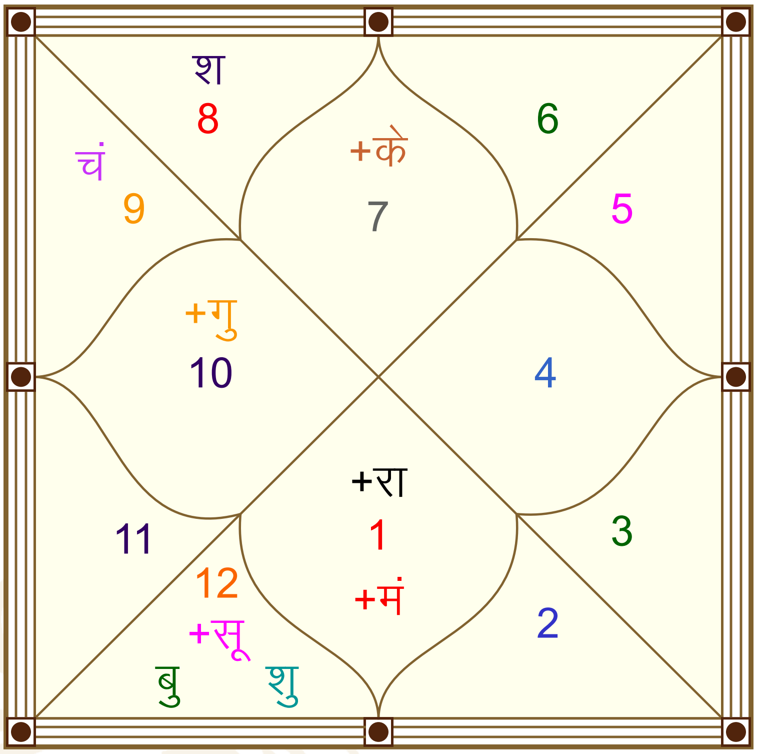

चन्द्र कुंडली

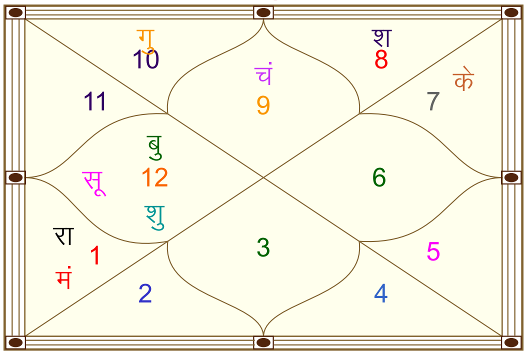

नवमांश कुंडली

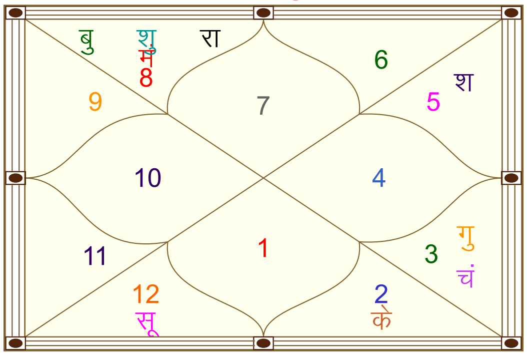

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	16:55:09	तुला	01:35:31
2	तुला	16:55:09	वृश्चिक	02:14:46
3	वृश्चिक	17:34:24	धनु	02:54:01
4	धनु	18:13:38	मकर	03:33:16
5	मकर	18:13:38	कुम्भ	02:54:01
6	कुम्भ	17:34:24	मीन	02:14:46
7	मीन	16:55:09	मेष	01:35:31
8	मेष	16:55:09	वृष	02:14:46
9	वृष	17:34:24	मिथुन	02:54:01
10	मिथुन	18:13:38	कर्क	03:33:16
11	कर्क	18:13:38	सिंह	02:54:01
12	सिंह	17:34:24	कन्या	02:14:46

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	01:35:31
2	वृश्चिक	00:14:03
3	धनु	01:07:35
4	मकर	03:33:16
5	कुम्भ	05:50:40
6	मीन	05:39:45
7	मेष	01:35:31
8	वृष	00:14:03
9	मिथुन	01:07:35
10	कर्क	03:33:16
11	सिंह	05:50:40
12	कन्या	05:39:45

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

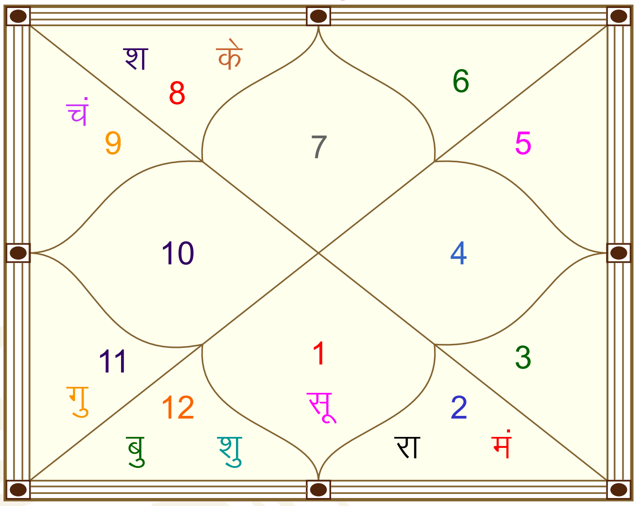

भाव कुंडली

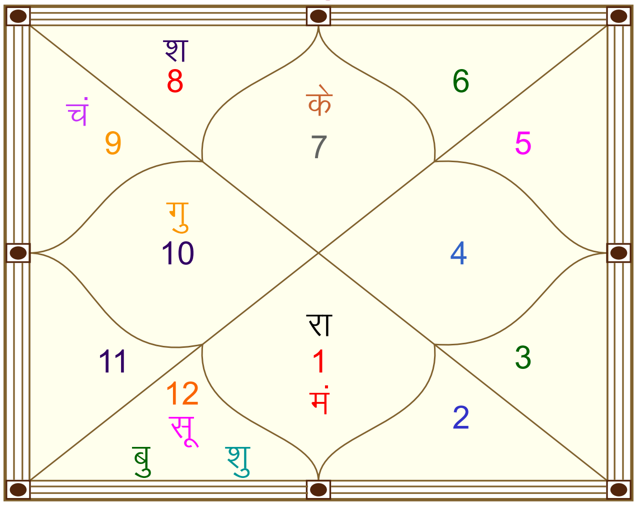

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	मुदित	शयन	12.37	46 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	शक्त	प्रकाश	2.02	67 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.86	46 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	युवा	विकल	उपवेशन	0.00	24 %
गुरु	भ्रातृ	धन	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.65	73 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	दीप्त	नृत्यलिप्सा	22.59	34 %
शनि	कलत्र	आयु	मृत	खल	आगम	1.85	54 %
राहु	–––	ज्ञान	मृत	खल	आगमन	0.00	48 %
केतु	–––	मोक्ष	मृत	निपीदित	नृत्यलिप्सा	0.00	48 %
कुल						**43.34**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

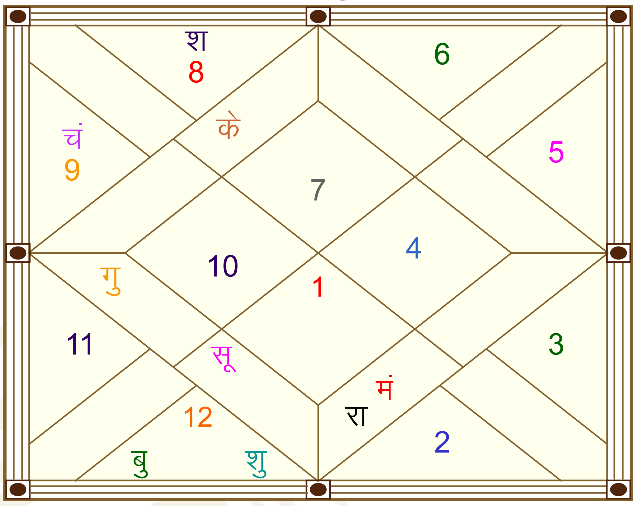

लग्न–चलित

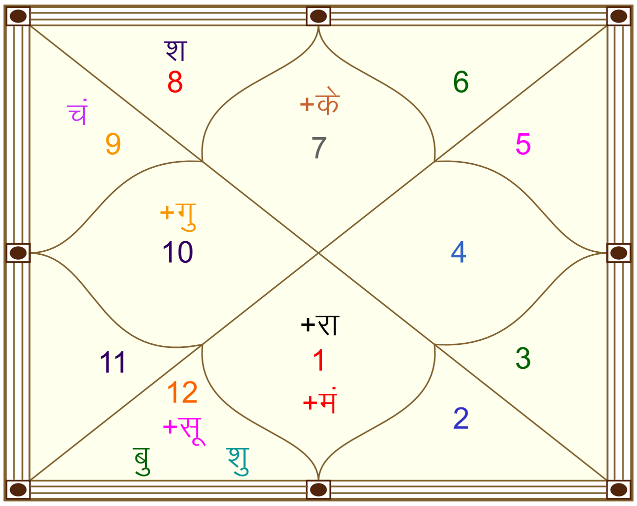

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

सुदर्शन चक्र

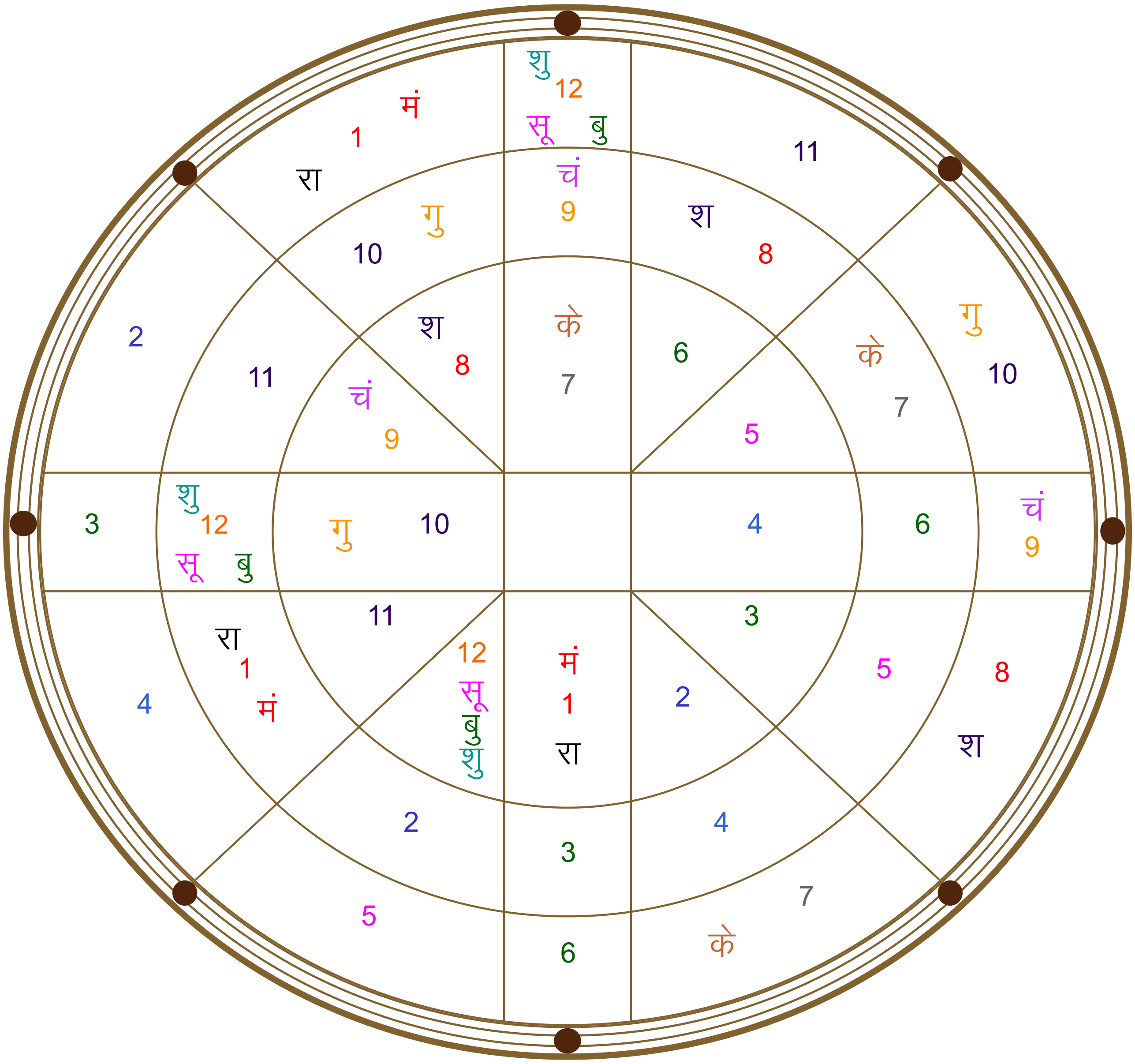

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हेतु समें इस पद्धति से संबंधित आंकड यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

Ranjit

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 5 मास 1 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	27:04:34	गुरु	बुध	गुरु	शुक्र
चंद्र		धनु	06:48:59	गुरु	केतु	राहु	केतु
मंगल		मेष	25:21:14	मंगल	शुक्र	बुध	गुरु
बुध	व	मीन	15:05:11	गुरु	शनि	गुरु	गुरु
गुरु		मक	18:55:44	शनि	चंद्र	बुध	राहु
शुक्र	व	मीन	16:33:01	गुरु	शनि	गुरु	राहु
शनि	व	वृश्चि	03:38:41	मंगल	शनि	शनि	शनि
राहु		मेष	24:56:12	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र
केतु		तुला	24:56:12	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल
हर्ष	व	वृश्चि	24:17:21	मंगल	बुध	राहु	राहु
नेप	व	धनु	10:03:38	गुरु	केतु	शनि	केतु
प्लूटो	व	तुला	10:10:35	शुक्र	राहु	गुरु	मंगल

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	01:41:28	शुक्र	मंगल	बुध	शनि
2	वृश्चि	00:20:00	मंगल	गुरु	चंद्र	शुक्र
3	धनु	01:13:32	गुरु	केतु	शुक्र	सूर्य
4	मक	03:39:13	शनि	सूर्य	शनि	केतु
5	कुंभ	05:56:37	शनि	मंगल	चंद्र	गुरु
6	मीन	05:45:43	गुरु	शनि	बुध	केतु
7	मेष	01:41:28	मंगल	केतु	शुक्र	राहु
8	वृष	00:20:00	शुक्र	सूर्य	राहु	बुध
9	मिथु	01:13:32	बुध	मंगल	बुध	राहु
10	कर्क	03:39:13	चंद्र	शनि	शनि	शनि
11	सिंह	05:56:37	सूर्य	केतु	राहु	गुरु
12	कन्या	05:45:43	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:32:54

फॉरच्युना : मिथुन 11:25:54

लग्न कुंडली

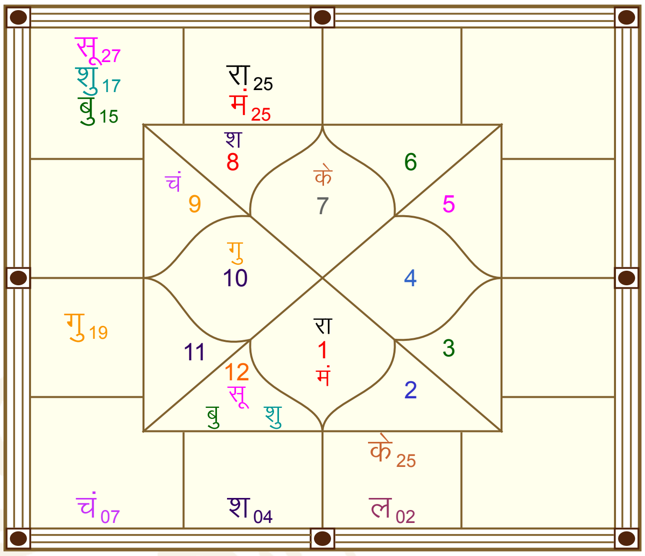

भाव कुंडली

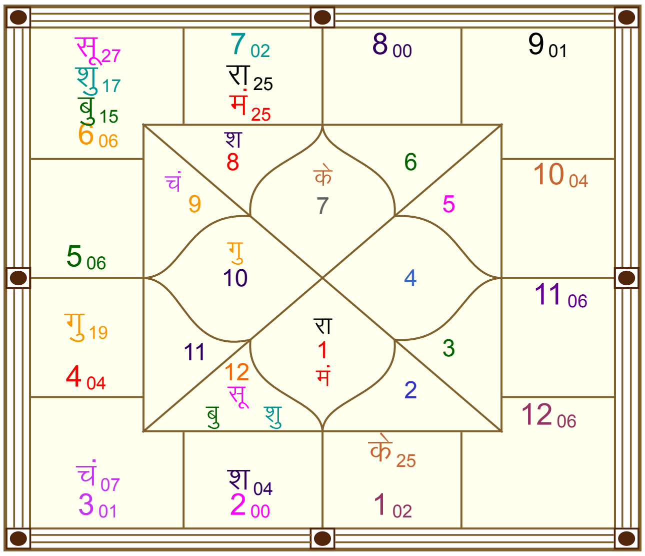

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगल– शुक्र– राहु– केतु,
2	मंगल– बुध, शुक्र, शनि+
3	चंद्र, गुरु+ केतु–
4	बुध– गुरु, शुक्र– शनि, केतु,
5	बुध– शुक्र– शनि,
6	सूर्य+ मंगल, बुध, गुरु– शुक्र, राहु, केतु–
7	मंगल, राहु,
8	मंगल– शुक्र– राहु–
9	सूर्य– बुध–
10	चंद्र– गुरु–
11	सूर्य–
12	सूर्य– बुध–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6+ 9- 11- 12-
चंद्र	1, 3, 10-
मंगल	1- 2- 6, 7, 8-
बुध	2, 4- 5- 6, 9- 12-
गुरु	3+ 4, 6- 10-
शुक्र	1- 2, 4- 5- 6, 8-
शनि	2+ 4, 5,
राहु	1- 6, 7, 8-
केतु	1, 3- 4, 6-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	राहु

Ranjit

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	चं	के	मं रा	शु
2	बु शु श	श	--	मं
3	गु	चं	के	गु
4	के	गु	बु शु श	श
5	--	--	बु शु श	श
6	सू मं रा	सू बु शु	के	गु
7	--	मं रा	--	मं
8	--	--	मं रा	शु
9	--	--	सू	बु
10	--	--	गु	चं
11	--	--	--	सू
12	--	--	सू	बु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	4,8,12	मीन	6
चंद्र	10	---	धनु	3
मंगल	2,7	1,5,9	मेष	7
बुध	9,12	---	मीन	6
गुरु	3,6	2	मकर	4
शुक्र	1,8	---	मीन	6
शनि	4,5	6,10	वृश्चिक	2
राहु	---	---	मेष	7
केतु	---	3,7,11	तुला	1

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	9,12	---	6	3,6	2	4
चंद्र	---	3,7,11	1	---	---	7
मंगल	1,8	---	6	9,12	---	6
बुध	4,5	6,10	2	3,6	2	4
गुरु	10	---	3	9,12	---	6
शुक्र	4,5	6,10	2	3,6	2	4
शनि	4,5	6,10	2	4,5	6,10	2
राहु	1,8	---	6	9,12	---	6
केतु	3,6	2	4	9,12	---	6

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह												
	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	356.98	246.72	25.25	344.99	288.83	346.45	213.55	24.84	204.84	234.19	249.96	190.08
सूर्य	——	——	——	युति	——	युति	——	——	——	——	——	सप्त
356.98	0.00	0.00	0.00	3.10	0.00	4.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.98
चंद्र	——	——	——	——	——	——	——	——	——	युति	युति	——
246.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.56	9.43	0.00
मंगल	——	8वां	——	——	——	——	सप्त	युति	सप्त	8वां	8वां	——
25.25	0.00	3.62	0.00	0.00	0.00	0.00	6.46	9.99	9.99	9.94	0.31	0.00
बुध	युति	——	नवां	——	——	युति	——	नवां	——	——	——	——
344.99	3.10	0.00	0.91	0.00	0.00	9.88	0.00	0.97	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	——	——	——	तृती	——	तृती	——	——	——	——	——	——
288.83	0.00	0.00	0.00	1.61	0.00	2.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	युति	——	——	युति	——	——	——	——	——	——	——	——
346.45	4.52	0.00	0.00	9.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	——	——	सप्त	——	——	——	——	सप्त	युति	——	——	——
213.55	0.00	0.00	6.46	0.00	0.00	0.00	0.00	6.12	6.12	0.00	0.00	0.00
राहु	——	——	युति	——	——	——	सप्त	——	सप्त	——	——	सप्त
24.84	0.00	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	6.12	0.00	10.00	0.00	0.00	0.25
केतु	——	——	सप्त	——	——	——	युति	सप्त	——	——	अष्ट	युति
204.84	0.00	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	6.12	10.00	0.00	0.00	0.98	0.25
हर्ष	पंच	युति	——	——	तृती	——	——	षष्ठ	——	——	——	——
234.19	2.24	2.56	0.00	0.00	0.50	0.00	0.00	0.53	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	——	युति	अष्टां	चतु	——	——	——	अष्टां	——	——	——	——
249.96	0.00	9.43	0.90	0.76	0.00	0.00	0.00	0.98	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	सप्त	तृती	——	——	——	——	——	सप्त	युति	अष्ट	तृती	——
190.08	1.98	1.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.25	0.25	0.18	3.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

	दृष्य भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	181.59	212.25	242.90	273.55	302.90	332.25	1.59	32.25	62.90	93.55	122.90	152.25
सूर्य	—	—	—	—	—	—	युति	—	तृती	—	पंच	—
356.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.85	0.00	0.06	0.00	0.06	0.00
चंद्र	—	—	युति	—	तृती	चतु	पंच	—	सप्त	—	—	—
246.72	0.00	0.00	9.21	0.00	1.62	1.17	0.68	0.00	9.21	0.00	0.00	0.00
मंगल	—	सप्त	—	—	—	—	—	युति	—	—	4था	—
25.25	0.00	7.44	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.44	0.00	0.00	6.96	0.00
बुध	—	—	—	—	—	युति	—	—	—	—	—	सप्त
344.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.34	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.34
गुरु	9वां	—	—	—	—	—	पंचा	—	5वां	—	सप्त	—
288.83	2.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.36	0.00	0.97	0.00	0.97	0.00
शुक्र	—	—	—	—	—	—	—	अष्ट	—	—	—	सप्त
346.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.32	0.00	0.00	0.00	0.83
शनि	—	युति	—	3रा	चतु	पंच	—	सप्त	—	—	10वा	—
213.55	0.00	9.91	0.00	10.00	2.96	2.83	0.00	9.91	0.00	0.00	9.98	0.00
राहु	—	सप्त	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
24.84	0.00	7.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	—	युति	—	—	—	—	—	सप्त	—	—	—	—
204.84	0.00	7.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.14	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	—	—	युति	नवां	—	—	—	—	सप्त	—	—	—
234.19	0.00	0.00	6.12	0.54	0.00	0.00	0.00	0.00	6.12	0.00	0.00	0.00
नेप	—	—	युति	—	—	—	—	—	सप्त	—	—	—
249.96	0.00	0.00	7.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.39	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	—	—	—	—	—	सप्त	—	—	—	—	—
190.08	6.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

भाव दृष्टि विचार

	दृष्य भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	181.59	210.23	241.13	273.55	305.84	335.66	1.59	30.23	61.13	93.55	125.84	155.66
सूर्य	—	—	—	—	—	—	युति	—	तृती	—	—	—
356.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.85	0.00	1.40	0.00	0.00	0.00
चंद्र	—	—	युति	—	तृती	चतु	पंच	—	सप्त	—	—	—
246.72	0.00	0.00	8.33	0.00	2.92	2.89	0.68	0.00	8.33	0.00	0.00	0.00
मंगल	—	सप्त	—	—	—	—	—	युति	—	—	4था	—
25.25	0.00	8.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.67	0.00	0.00	4.46	0.00
बुध	—	—	—	—	—	युति	—	अष्ट	—	—	—	सप्त
344.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.60	0.00	0.93	0.00	0.00	0.00	5.60
गुरु	9वां	—	—	—	—	—	पंचा	—	5वां	—	—	9वां
288.83	2.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.36	0.00	2.79	0.00	0.00	1.91
शुक्र	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	सप्त
346.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.27
शनि	—	युति	—	3रा	चतु	पंच	—	सप्त	—	—	10वा	—
213.55	0.00	9.40	0.00	10.00	2.47	2.55	0.00	9.40	0.00	0.00	9.71	0.00
राहु	—	सप्त	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
24.84	0.00	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	—	युति	—	—	—	—	—	सप्त	—	—	—	—
204.84	0.00	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	—	—	युति	नवां	पंचा	—	—	—	सप्त	—	—	—
234.19	0.00	0.00	7.48	0.54	0.86	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00
नेप	—	—	युति	—	तृती	चतु	—	—	सप्त	—	—	—
249.96	0.00	0.00	6.02	0.00	1.42	1.29	0.00	0.00	6.02	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	—	—	—	पंच	—	सप्त	—	—	—	—	—
190.08	6.31	0.00	0.00	0.00	1.34	0.00	6.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

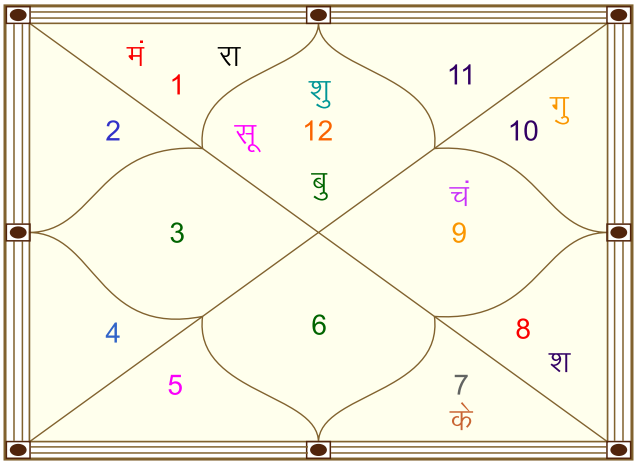

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

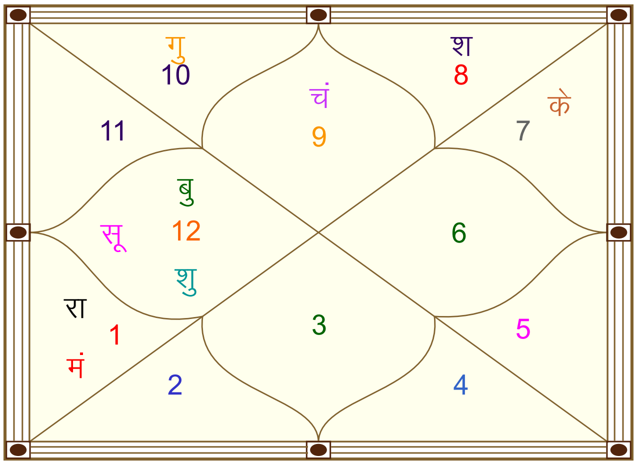

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

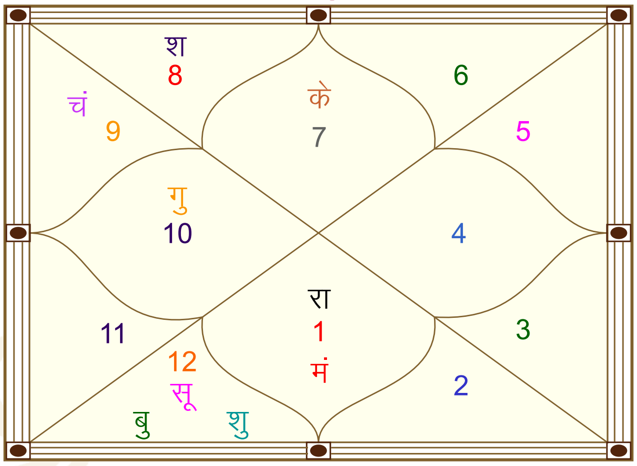

देह विचारः

होरा कुंडली

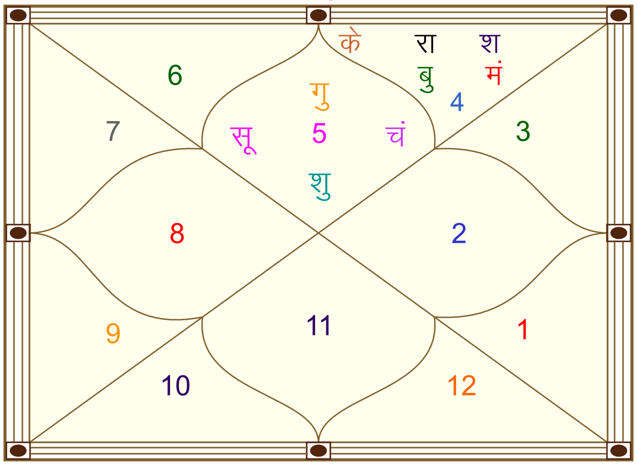

सम्पदाविचारः

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

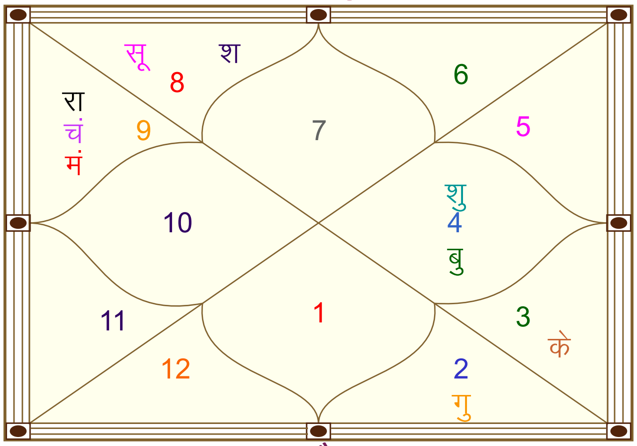

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

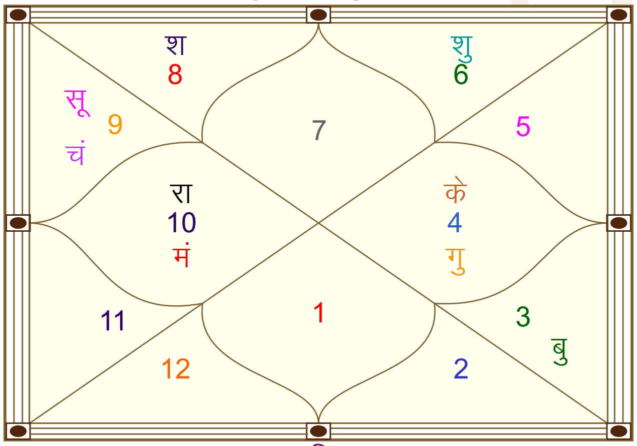

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

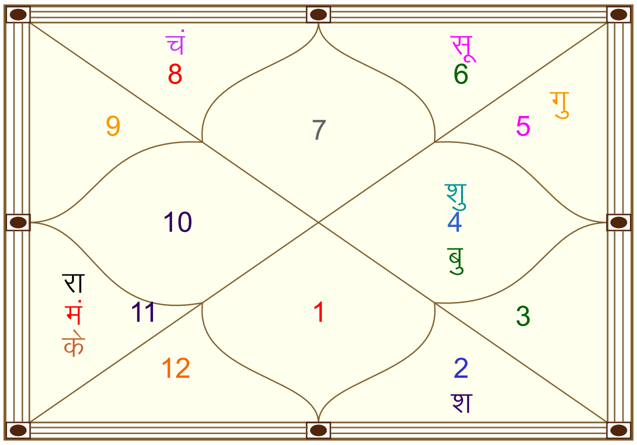

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

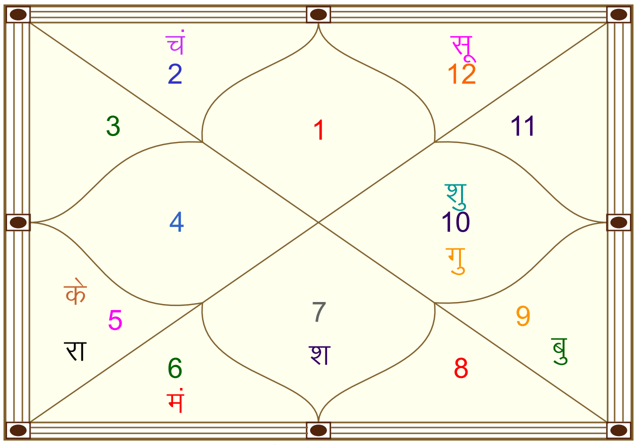

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

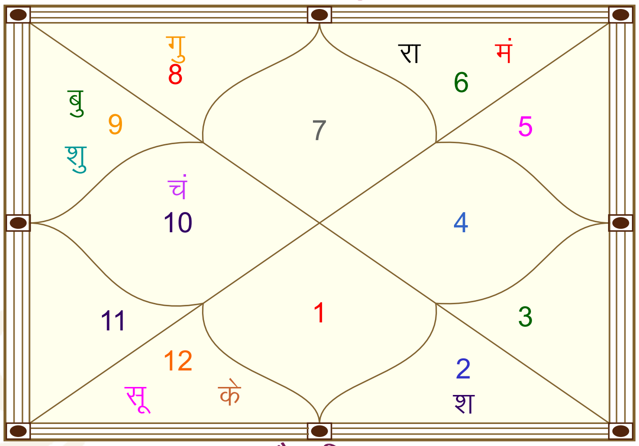

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

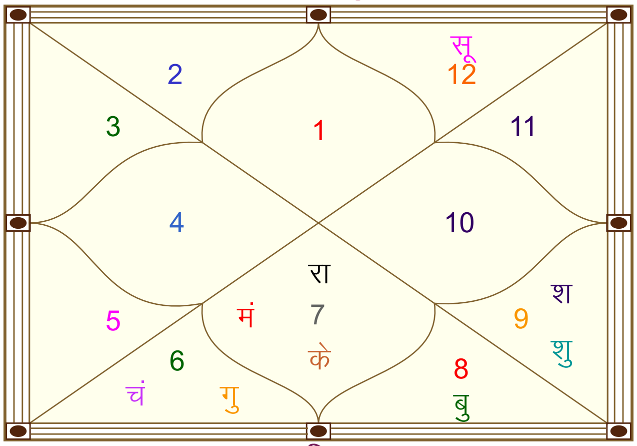

आयुविचारः

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

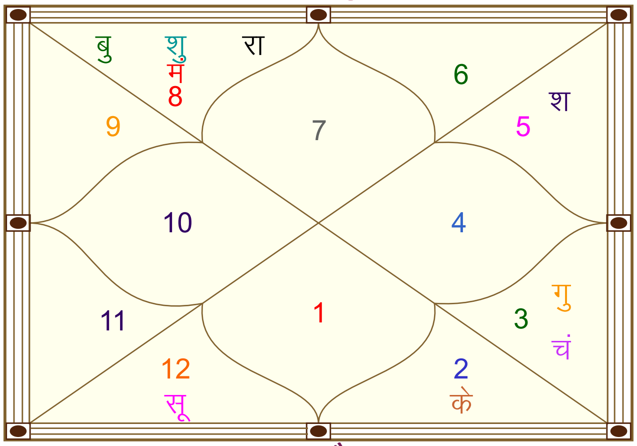

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

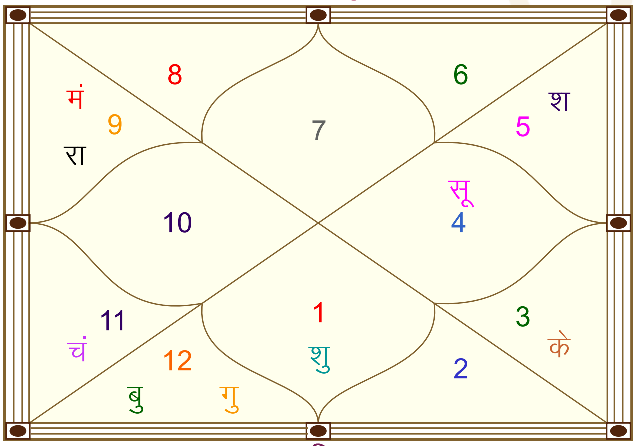

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

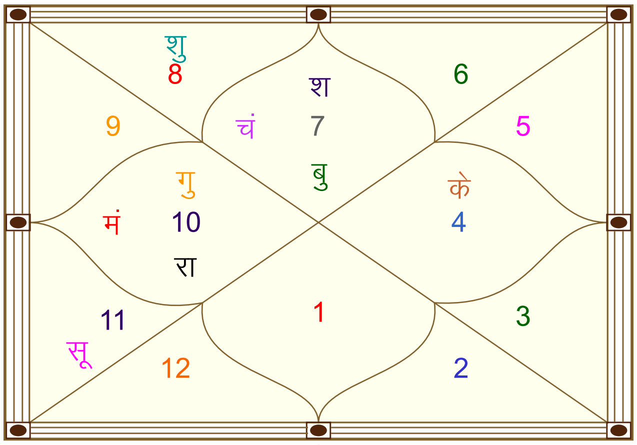

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

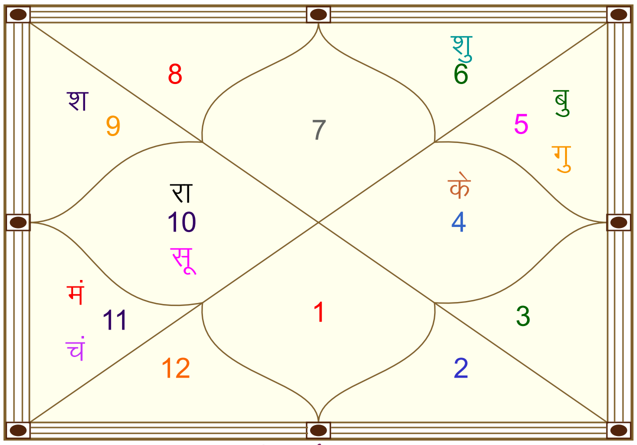

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

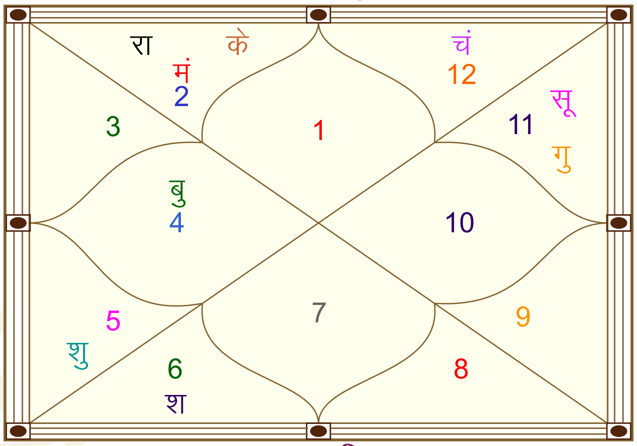

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

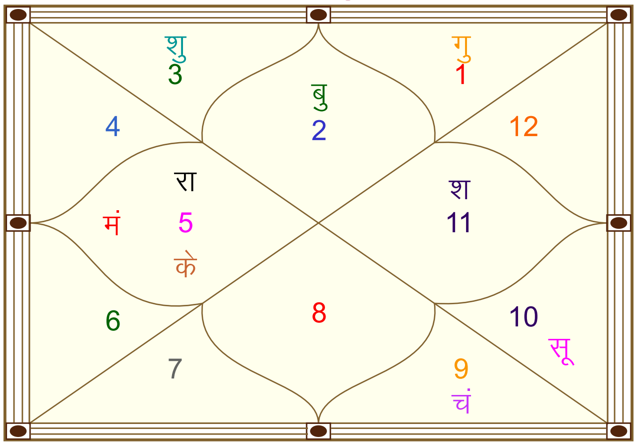

उपासनाज्ञानम्

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

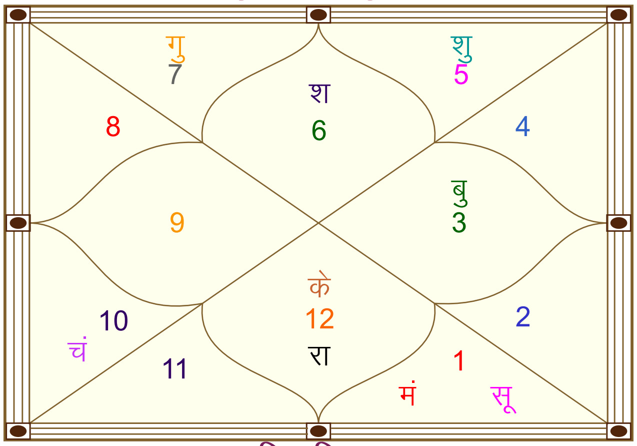

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

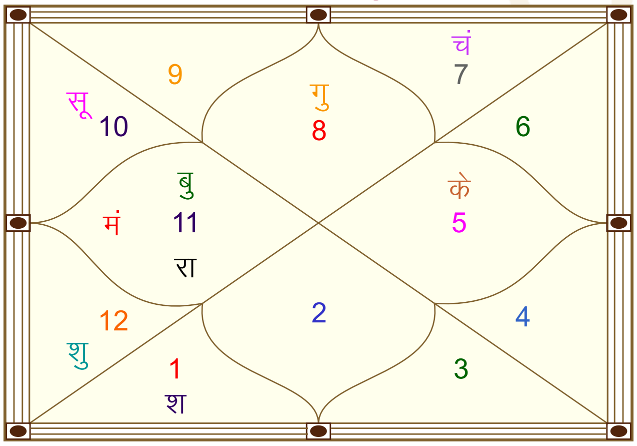

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

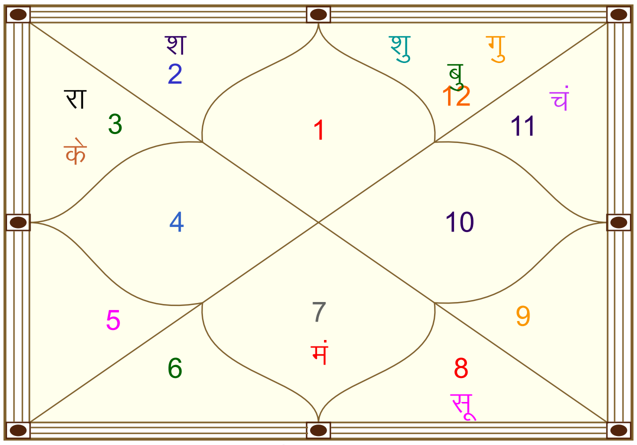

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

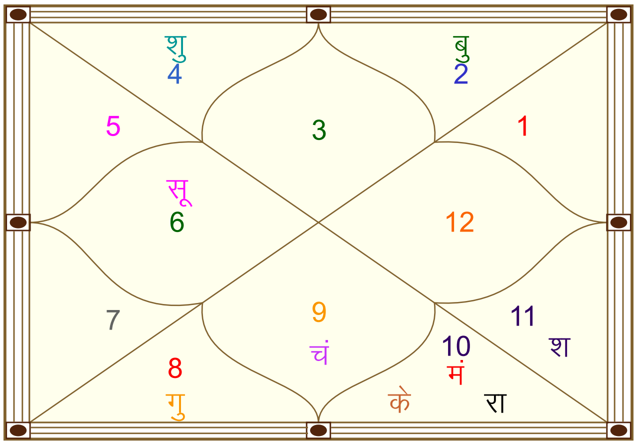

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

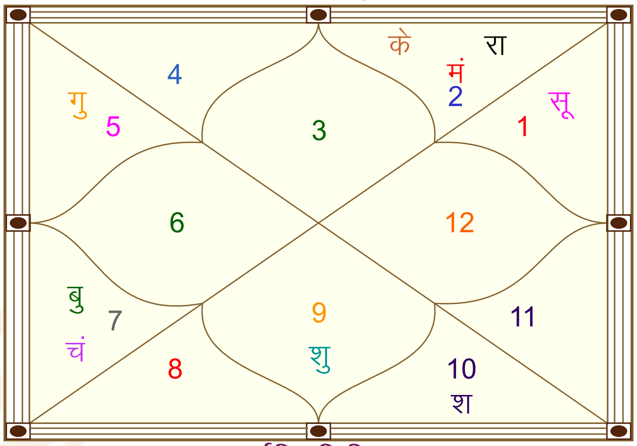

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

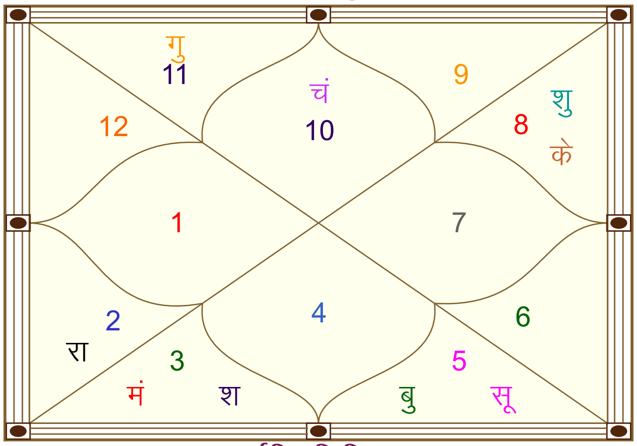

सर्वास्थितिविचारः

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	तुला	मीन	धनु	मेष	मीन	मक	मीन	वृश्चि	मेष	तुला
होरा	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	तुला	वृश्चि	धनु	धनु	कर्क	वृष	कर्क	वृश्चि	धनु	मिथु
चतुर्थांश	तुला	धनु	धनु	मक	मिथु	कर्क	कन्या	वृश्चि	मक	कर्क
सप्तमांश	तुला	मीन	मक	कन्या	धनु	वृश्चि	धनु	वृष	कन्या	मीन
नवमांश	तुला	मीन	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृष
दशमांश	तुला	कर्क	कुंभ	धनु	मीन	मीन	मेष	सिंह	धनु	मिथु
द्वादशांश	तुला	मक	कुंभ	कुंभ	सिंह	सिंह	कन्या	धनु	मक	कर्क
षोडशांश	मेष	कुंभ	मीन	वृष	कर्क	कुंभ	सिंह	कन्या	वृष	वृष
विंशांश	वृष	मक	धनु	सिंह	वृष	मेष	मिथु	कुंभ	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	कन्या	मेष	मक	मेष	मिथु	तुला	सिंह	कन्या	मीन	मीन
सप्तविंशांश	वृश्चि	मक	तुला	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	मीन	मेष	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	मेष	वृश्चि	कुंभ	तुला	मीन	मीन	मीन	वृष	मिथु	मिथु
खवेदांश	मिथु	कन्या	धनु	मक	वृष	वृश्चि	कर्क	कुंभ	मक	मक
अक्षवेदांश	मिथु	मेष	तुला	वृष	तुला	सिंह	धनु	मक	वृष	वृष
षष्ट्यंश	मक	सिंह	मक	मिथु	सिंह	कुंभ	वृश्चि	मिथु	वृष	वृश्चि

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	0 –––	0 –––	0 –––	0 –––
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
बुध	0 –––	0 –––	0 –––	2 भेदक
गुरु	1 –––	1 –––	2 पारिजात	3 कुसुम
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	0 –––	0 –––	0 –––	3 कुसुम
राहु	1 –––	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	0 –––	1 –––	1 –––	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	16.90	16.05	17.05	13.00	13.60	12.50	6.75	8.00	9.25
सप्तवर्ग	16.90	15.98	15.90	13.25	14.35	12.75	7.38	8.75	10.03
दशवर्ग	16.70	15.45	13.98	12.25	15.68	12.75	8.50	12.60	9.70
षोडशवर्ग	15.95	15.60	14.88	12.55	14.93	12.50	8.63	11.60	9.63

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	———	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	———	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	———	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	———	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	———	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	———	सम	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	———	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	———	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	———

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

षड्बल
और
अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न–भिन्न स्थिति षड्बल के अलग–अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	56	11	31	0	5	56	55
सप्तवर्गज बल	144	120	131	83	128	77	43
ओजयुग्मक बल	0	0	15	0	15	30	15
केन्द्र बल	15	15	60	15	60	15	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	215	146	237	113	207	178	144
कुल दिग्बल	28	51	37	6	24	36	11
नतोन्नत बल	27	33	33	60	27	27	33
पक्ष बल	23	74	23	23	37	37	23
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	81	60	53	35	8	35	55
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	146	227	109	163	161	159	112
कुल चेष्टाबल	0	0	11	53	23	56	49
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	13	-20	2	9	-23	9	-22
कुल षट्बल	462	456	414	369	427	481	301
रूप षट्बल	7.7	7.6	6.9	6.1	7.1	8.0	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.5	1.3	1.4	0.9	1.1	1.5	1.0
संबंधित पद	1	4	3	7	5	2	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	45.30	20.32	18.39	0.48	10.26	56.25	52.11
कष्ट फल	10.02	33.67	37.77	20.09	45.38	3.74	7.07

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	481	414	427	301	301	427	414	481	369	456	462	369
भावदिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	101	29	6	-17	-22	9	35	35	82	62	53	65
कुल भाव बल	642	453	473	284	299	476	479	556	471	518	564	484
रूप भाव बल	10.7	7.6	7.9	4.7	5.0	7.9	8.0	9.3	7.8	8.6	9.4	8.1
संबंधित पद	1	10	8	12	11	7	6	3	9	4	2	5

Ranjit

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

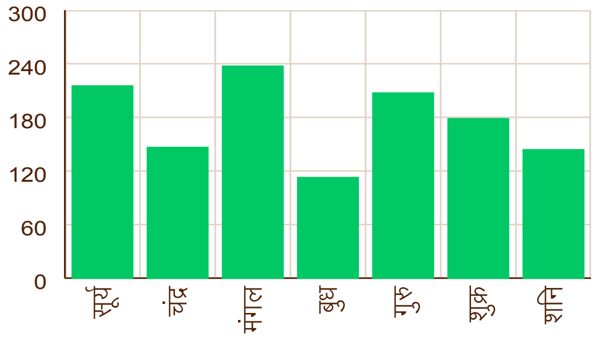

दिग्बल

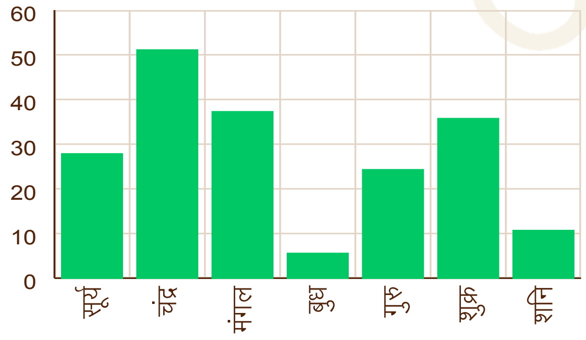

कालबल

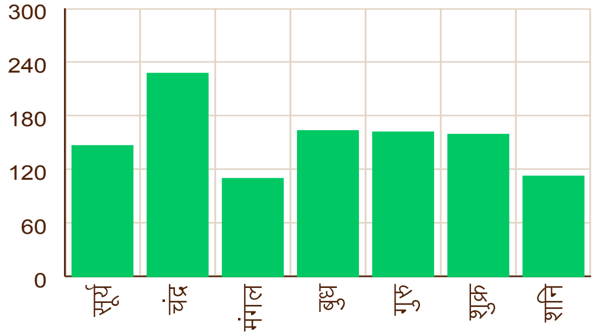

चेष्टाबल

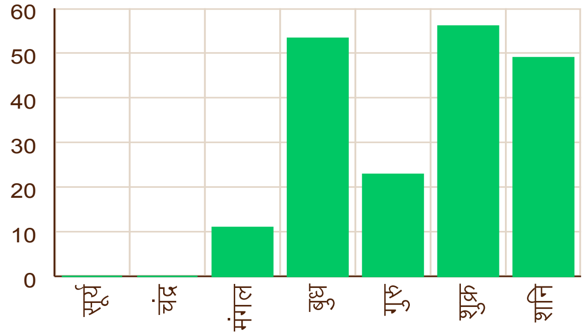

नैसर्गिक बल

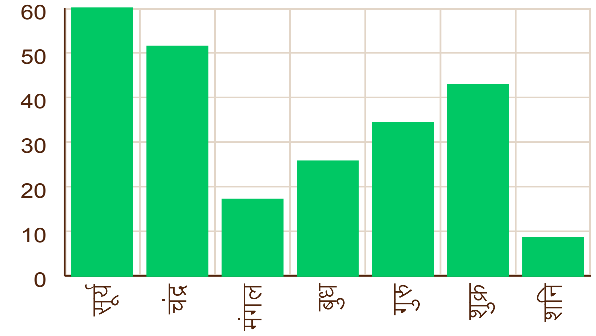

दृग्बल

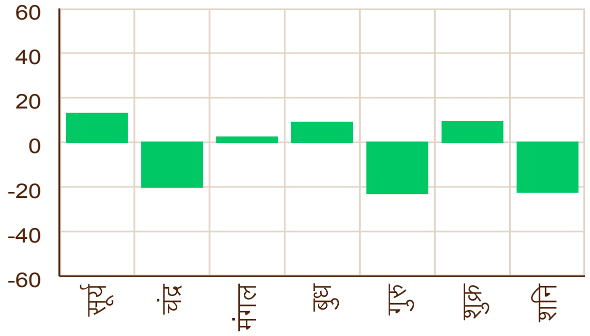

रूप षट्बल

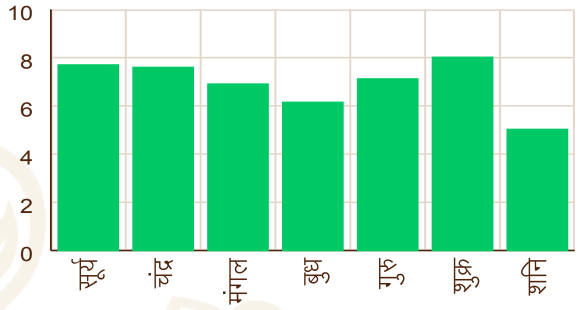

न्यूनतम षट्बल

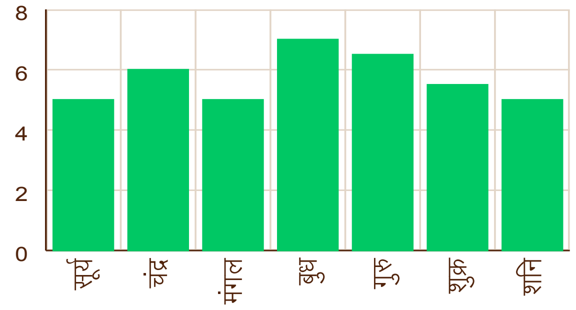

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

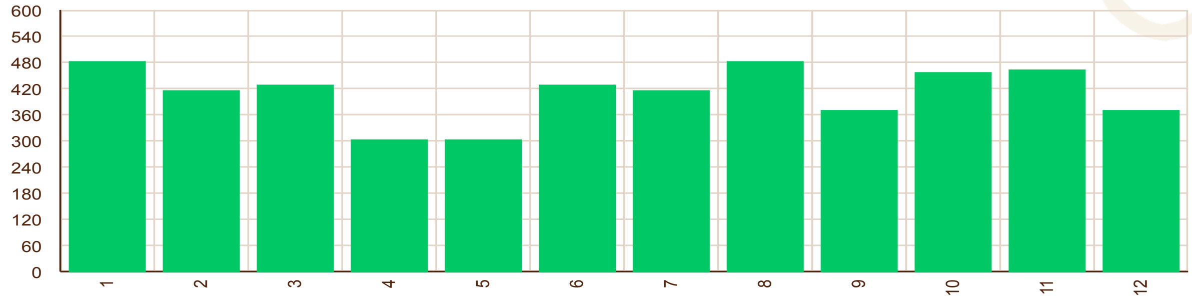

भावदिग्बल

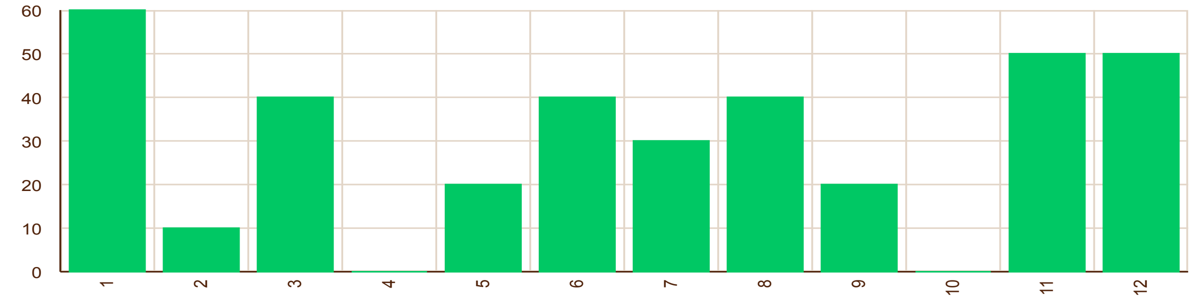

भावदृष्टि बल

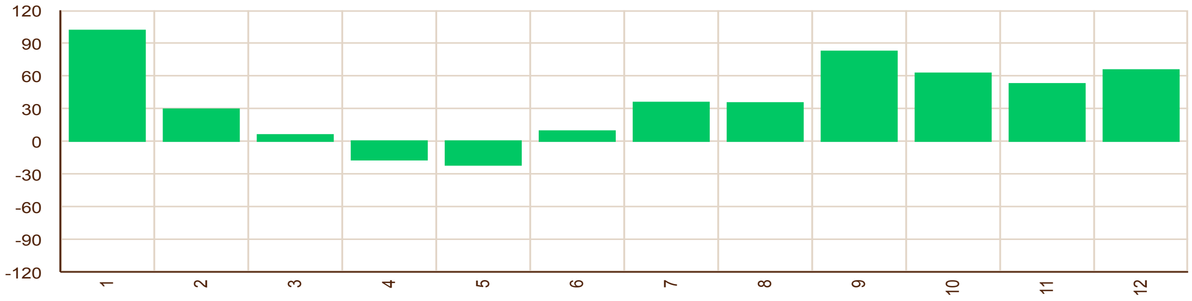

भाव बल

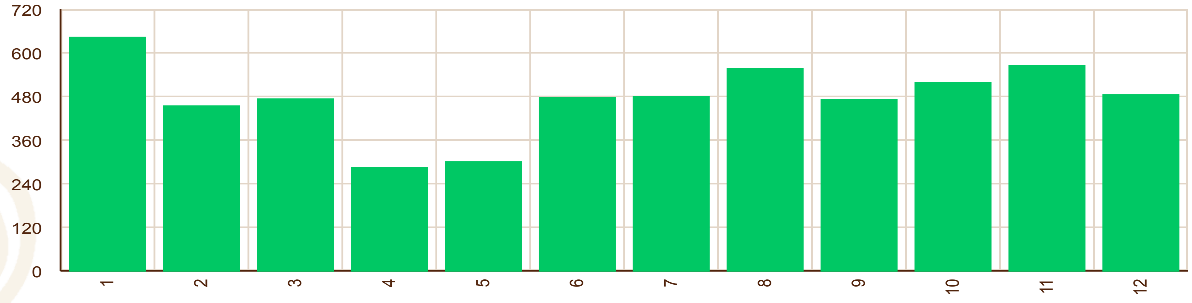

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

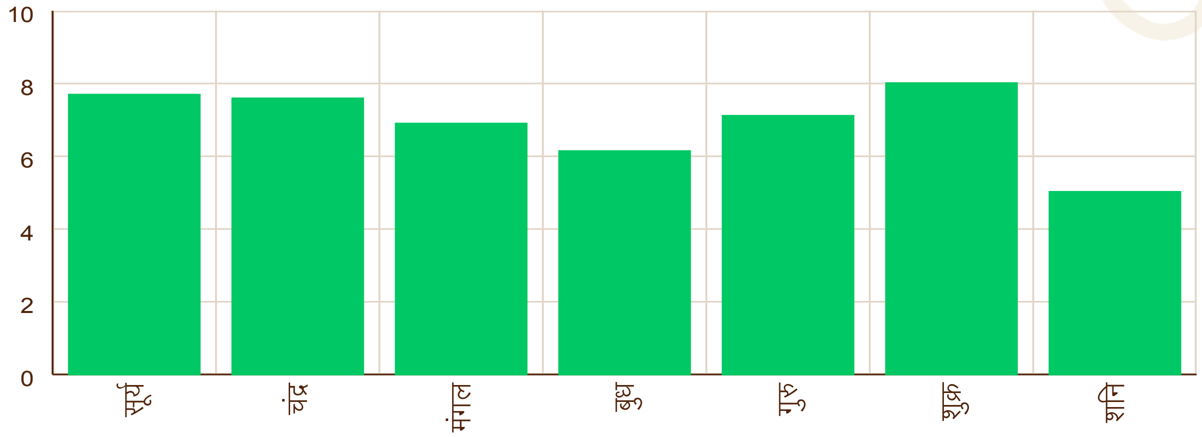

इष्ट — कष्ट फल

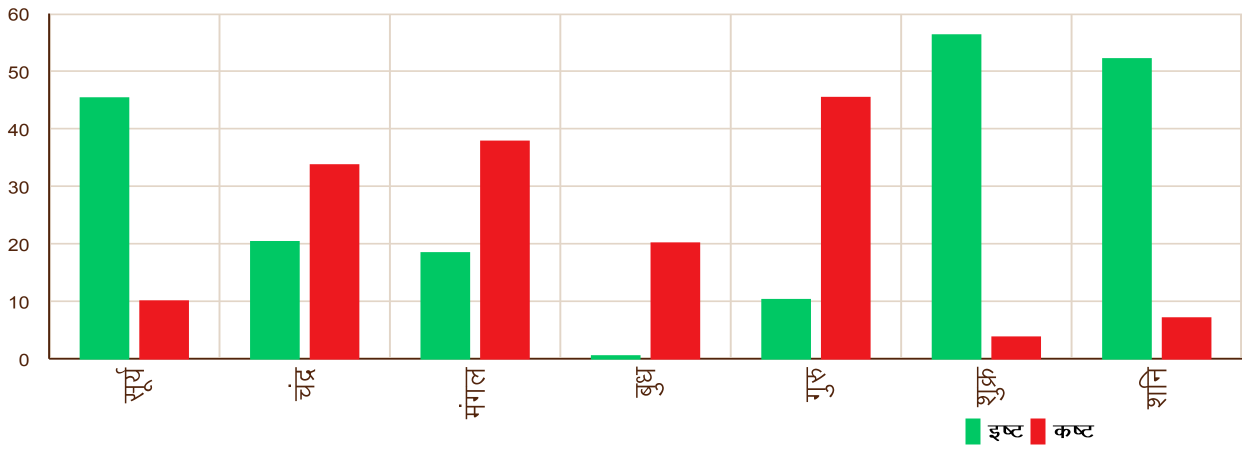

रूप भाव बल

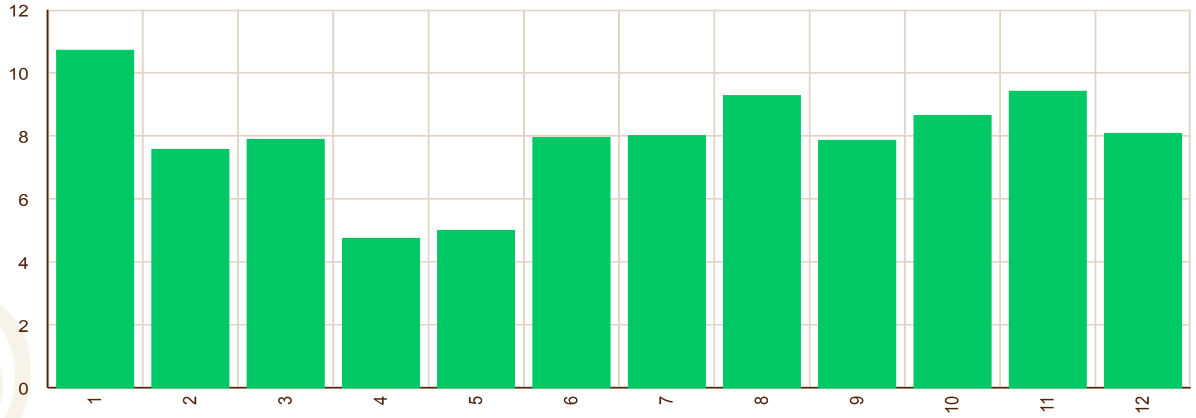

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	तुला	01:35:31	——	——	चित्रा	3	14
गुलिक	गु	कर्क	05:44:22	——	——	पुष्य	1	8
काल	का	कर्क	25:54:44	——	——	आश्लेषा	3	9
मृत्यु	मृ	कन्या	07:16:57	——	——	उ०फाल्गुनी	4	12
यमघंटक	यम	वृष	22:49:56	——	——	रोहिणी	4	4
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मेष	26:42:33	——	——	कृतिका	1	3
धूम	धू	सिंह	10:18:37	उच्च	——	मघा	4	10
व्यतिपात	व्य	वृश्चि	19:41:23	उच्च	——	ज्येष्ठा	1	18
परिवेश	परि	वृष	19:41:23	——	——	रोहिणी	3	4
इन्द्रचाप	इ	कुंभ	10:18:37	——	——	शतभिषा	2	24
उपकेतु	उप	कुंभ	26:58:37	उच्च	——	पू०भाद्रपद	3	25

प्राणपद	:	मिथु	13:16:18	कारकाँश लग्न	:	मीन	02:47:30
भाव लग्न	:	तुला	12:47:30	होरा लग्न	:	मेष	28:36:23
घटी लग्न	:	धनु	16:03:02	वर्णद लग्न	:	सिंह	29:48:06

उपग्रह कुंडली

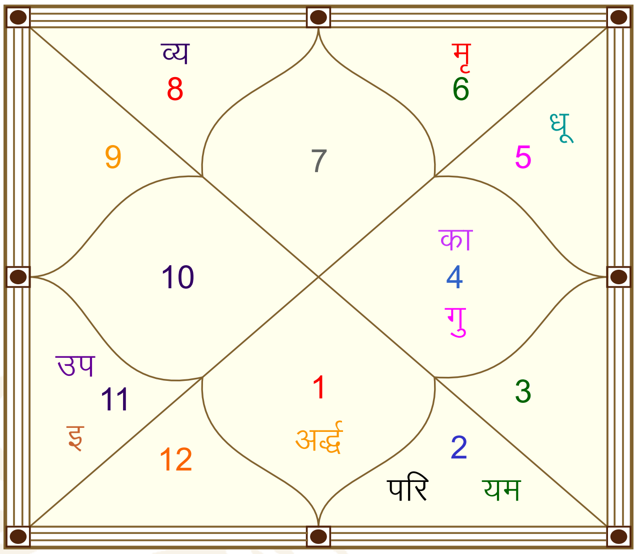

आरूढ़ कुंडली

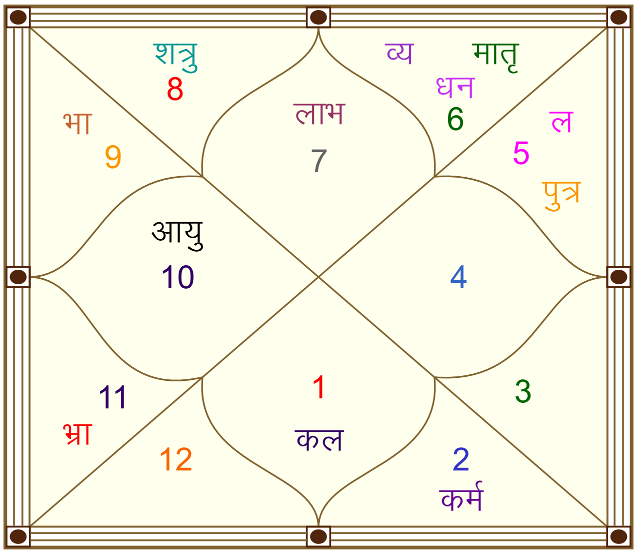

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

षन्नाडी चक्र

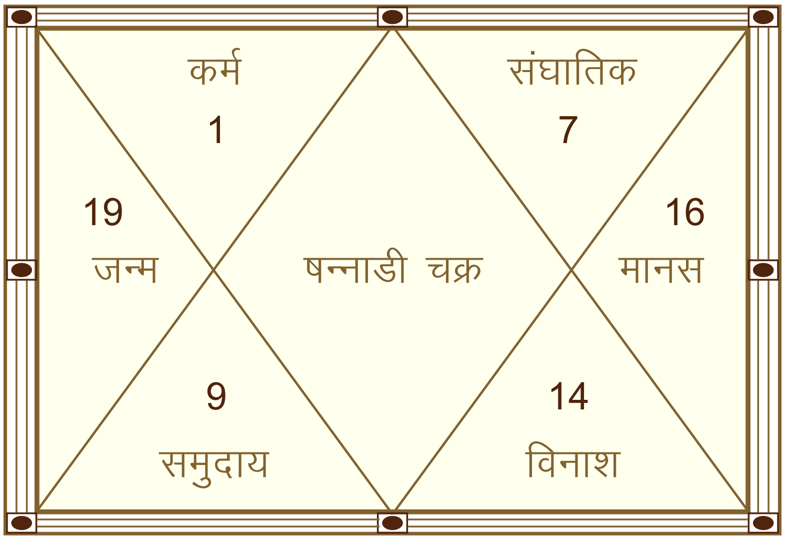

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
कुल	**2**	**2**	**5**	**3**	**4**	**4**	**6**	**3**	**5**	**5**	**4**	**5**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	**5**	**6**	**3**	**3**	**2**	**5**	**4**	**4**	**5**	**6**	**4**	**2**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
कुल	**1**	**5**	**2**	**5**	**5**	**1**	**5**	**3**	**3**	**4**	**4**	**1**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
कुल	**4**	**2**	**6**	**3**	**7**	**5**	**2**	**4**	**7**	**4**	**6**	**4**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	**8**	**3**	**5**	**8**	**2**	**4**	**5**	**5**	**1**	**6**	**6**	**3**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
कुल	**4**	**2**	**4**	**4**	**5**	**5**	**3**	**5**	**5**	**4**	**6**	**5**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	**2**	**4**	**6**	**4**	**4**	**2**	**2**	**3**	**1**	**4**	**3**	**4**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**5**	**4**	**5**	**3**	**4**	**4**	**49**

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	1	4	3	4	2	4	6	4	4	39
गुरु	8	2	4	5	5	1	6	6	3	8	3	5	56
मंगल	1	5	2	5	5	1	5	3	3	4	4	1	39
सूर्य	2	5	3	4	4	6	3	5	5	4	5	2	48
शुक्र	2	4	4	5	5	3	5	5	4	6	5	4	52
बुध	2	6	3	7	5	2	4	7	4	6	4	4	54
चंद्र	2	5	4	4	5	6	4	2	5	6	3	3	49
बिन्दु	19	29	23	31	33	22	31	30	28	40	28	23	337
रेखा	37	27	33	25	23	34	25	26	28	16	28	33	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	2	1	1	1	2	4	1	3	15
गुरु	5	1	1	0	2	0	3	1	0	7	0	0	20
मंगल	0	4	0	4	4	0	3	2	2	3	2	0	24
सूर्य	0	1	0	2	2	2	0	3	3	0	2	0	15
शुक्र	0	1	0	1	3	0	1	1	2	3	1	0	13
बुध	0	4	0	3	3	0	1	3	2	4	1	0	21
चंद्र	0	0	1	2	3	1	1	0	3	1	0	1	13
रेखा	5	11	2	12	19	4	10	11	14	22	7	4	121

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	2	1	1	1	2	4	0	3	14
गुरु	5	1	1	0	2	0	2	1	0	7	0	0	19
मंगल	0	1	0	4	4	0	3	2	2	3	0	0	19
सूर्य	0	1	0	2	2	2	0	3	3	0	2	0	15
शुक्र	0	0	0	1	3	0	0	1	2	3	0	0	10
बुध	0	3	0	3	3	0	1	3	2	4	0	0	19
चंद्र	0	0	0	2	3	0	1	0	3	1	0	1	11
रेखा	5	6	1	12	19	3	8	11	14	22	2	4	107

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	121	89	136	141	130	75	114
ग्रह पिंड	30	42	50	65	115	45	106
शोध्य पिंड	151	131	186	206	245	120	220

Ranjit

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

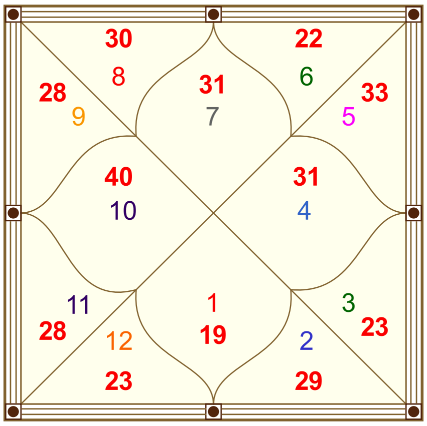

सूर्य का अष्टकवर्ग

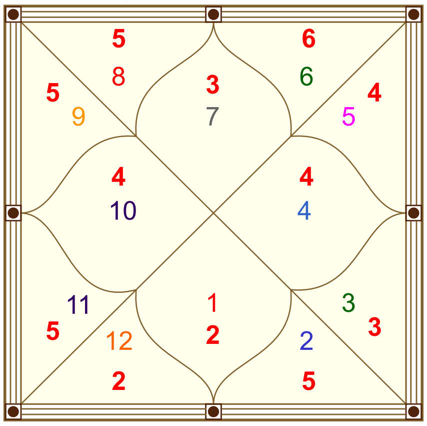

चंद्र का अष्टकवर्ग

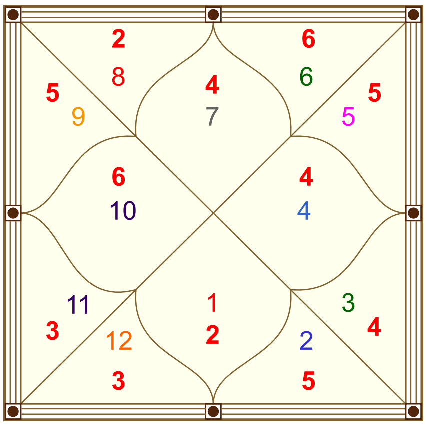

मंगल का अष्टकवर्ग

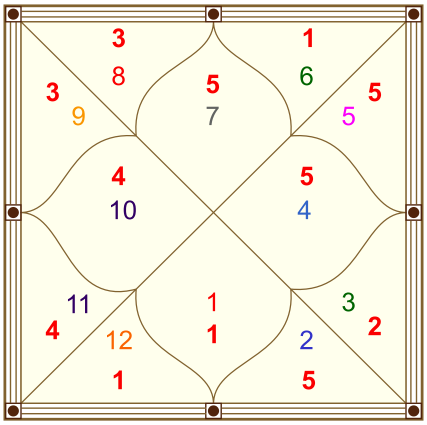

बुध का अष्टकवर्ग

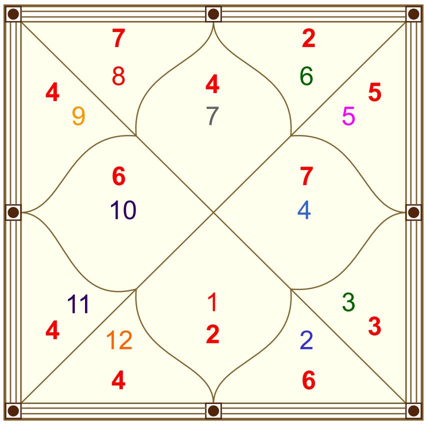

गुरू का अष्टकवर्ग

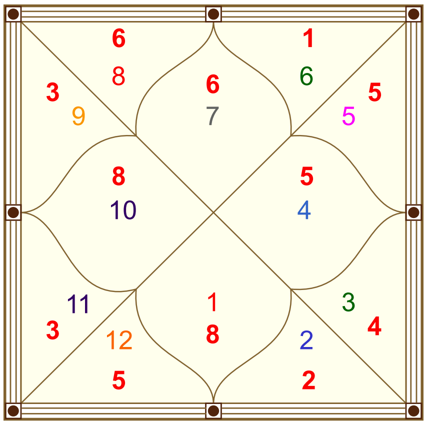

शुक्र का अष्टकवर्ग

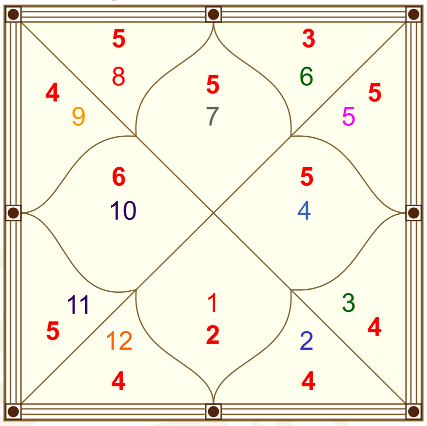

शनि का अष्टकवर्ग

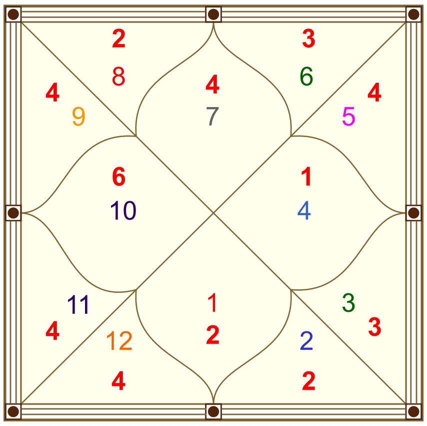

लग्न का अष्टकवर्ग

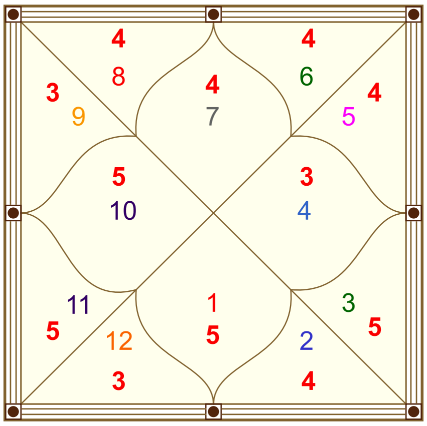

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

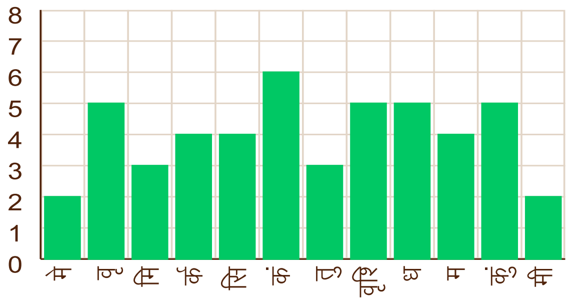

चन्द्र

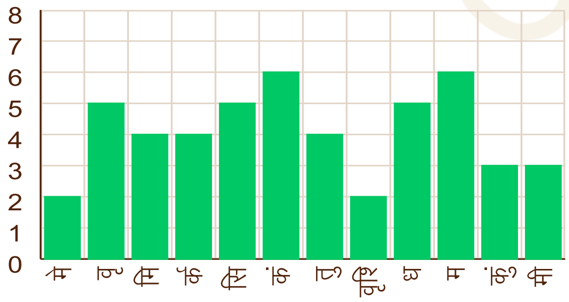

मंगल

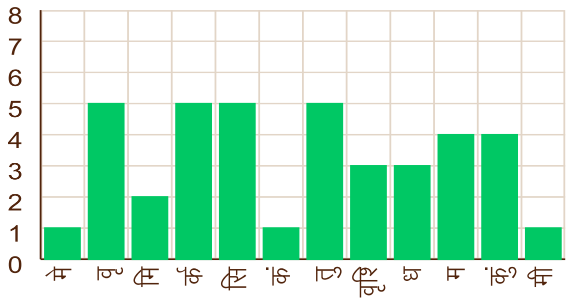

बुध

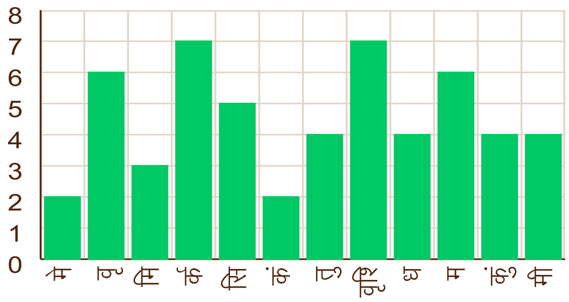

गुरु

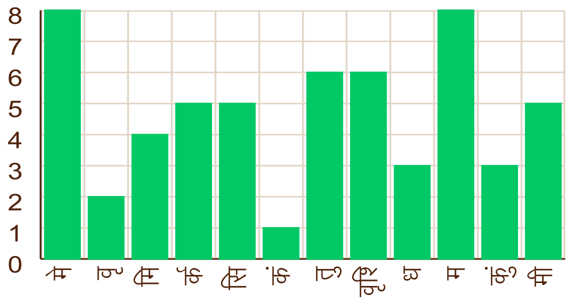

शुक्र

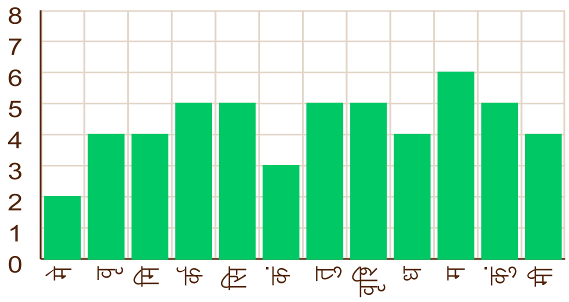

शनि

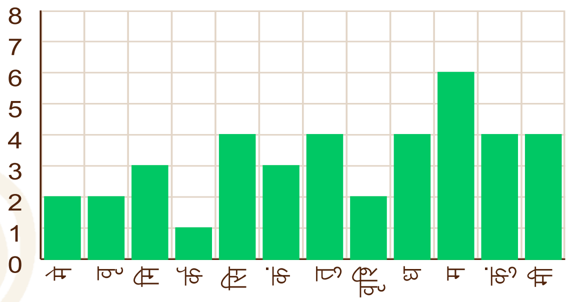

लग्न

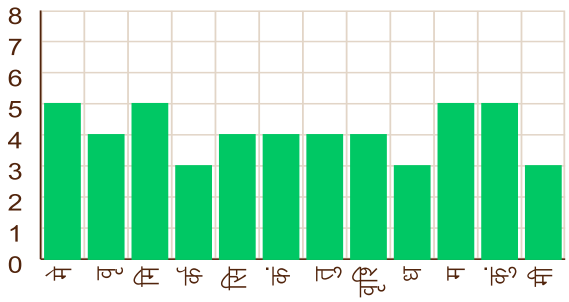

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

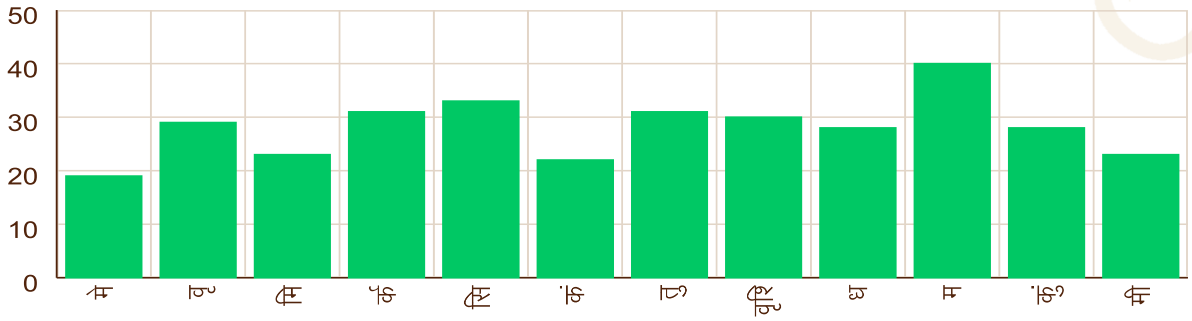

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

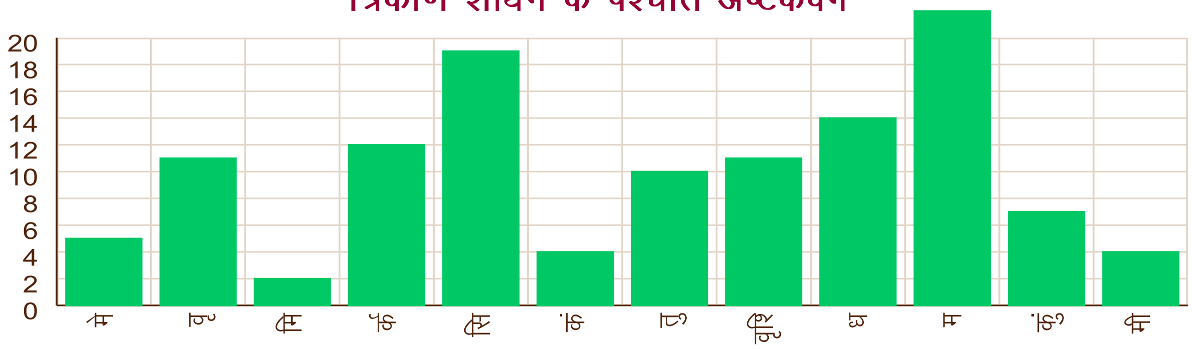

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

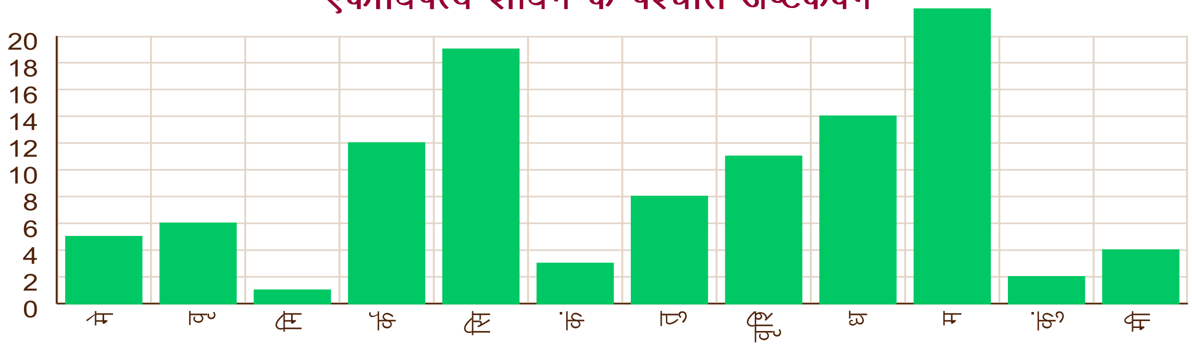

शोध्य पिंड

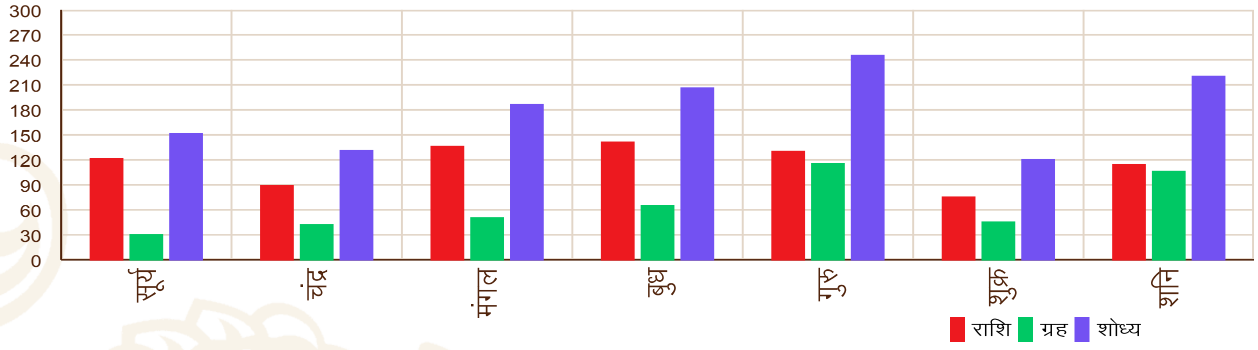

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology

303, Power Colony, Indl. Area,

Phase-2, Panchkula

+918728883111

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे–बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा–अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

Ranjit

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 5 मास 20 दिन

केतु 7 वर्ष	
10/04/1985	
30/09/1988	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
राहु	18/09/1985
गुरु	25/08/1986
शनि	04/10/1987
बुध	30/09/1988

शुक्र 20 वर्ष	
30/09/1988	
30/09/2008	
शुक्र	30/01/1992
सूर्य	30/01/1993
चंद्र	30/09/1994
मंगल	01/12/1995
राहु	30/11/1998
गुरु	31/07/2001
शनि	30/09/2004
बुध	01/08/2007
केतु	30/09/2008

सूर्य 6 वर्ष	
30/09/2008	
30/09/2014	
सूर्य	18/01/2009
चंद्र	19/07/2009
मंगल	24/11/2009
राहु	19/10/2010
गुरु	07/08/2011
शनि	19/07/2012
बुध	25/05/2013
केतु	30/09/2013
शुक्र	30/09/2014

चंद्र 10 वर्ष	
30/09/2014	
30/09/2024	
चंद्र	01/08/2015
मंगल	01/03/2016
राहु	31/08/2017
गुरु	31/12/2018
शनि	31/07/2020
बुध	31/12/2021
केतु	01/08/2022
शुक्र	31/03/2024
सूर्य	30/09/2024

मंगल 7 वर्ष	
30/09/2024	
01/10/2031	
मंगल	26/02/2025
राहु	17/03/2026
गुरु	21/02/2027
शनि	31/03/2028
बुध	29/03/2029
केतु	25/08/2029
शुक्र	25/10/2030
सूर्य	02/03/2031
चंद्र	01/10/2031

राहु 18 वर्ष	
01/10/2031	
30/09/2049	
राहु	13/06/2034
गुरु	05/11/2036
शनि	12/09/2039
बुध	01/04/2042
केतु	19/04/2043
शुक्र	19/04/2046
सूर्य	14/03/2047
चंद्र	12/09/2048
मंगल	30/09/2049

गुरु 16 वर्ष	
30/09/2049	
30/09/2065	
गुरु	18/11/2051
शनि	01/06/2054
बुध	06/09/2056
केतु	13/08/2057
शुक्र	13/04/2060
सूर्य	30/01/2061
चंद्र	01/06/2062
मंगल	08/05/2063
राहु	30/09/2065

शनि 19 वर्ष	
30/09/2065	
30/09/2084	
शनि	03/10/2068
बुध	13/06/2071
केतु	22/07/2072
शुक्र	22/09/2075
सूर्य	03/09/2076
चंद्र	04/04/2078
मंगल	14/05/2079
राहु	20/03/2082
गुरु	30/09/2084

बुध 17 वर्ष	
30/09/2084	
01/10/2101	
बुध	27/02/2087
केतु	24/02/2088
शुक्र	25/12/2090
सूर्य	31/10/2091
चंद्र	01/04/2093
मंगल	29/03/2094
राहु	15/10/2096
गुरु	21/01/2099
शनि	01/10/2101

केतु 7 वर्ष	
01/10/2101	
00/00/0000	
केतु	27/02/2102
शुक्र	29/04/2103
सूर्य	04/09/2103
चंद्र	04/04/2104
मंगल	01/09/2104
राहु	11/04/2105
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 5 मा 30 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु	
10/04/1985	
18/09/1985	
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
बुध	11/04/1985
केतु	04/05/1985
शुक्र	07/07/1985
सूर्य	26/07/1985
चंद्र	27/08/1985
मंगल	18/09/1985

केतु - गुरु	
18/09/1985	
25/08/1986	
गुरु	03/11/1985
शनि	26/12/1985
बुध	13/02/1986
केतु	05/03/1986
शुक्र	30/04/1986
सूर्य	18/05/1986
चंद्र	15/06/1986
मंगल	05/07/1986
राहु	25/08/1986

केतु - शनि	
25/08/1986	
04/10/1987	
शनि	28/10/1986
बुध	24/12/1986
केतु	17/01/1987
शुक्र	25/03/1987
सूर्य	15/04/1987
चंद्र	18/05/1987
मंगल	11/06/1987
राहु	11/08/1987
गुरु	04/10/1987

केतु - बुध	
04/10/1987	
30/09/1988	
बुध	24/11/1987
केतु	15/12/1987
शुक्र	14/02/1988
सूर्य	03/03/1988
चंद्र	02/04/1988
मंगल	23/04/1988
राहु	16/06/1988
गुरु	04/08/1988
शनि	30/09/1988

शुक्र - शुक्र	
30/09/1988	
30/01/1992	
शुक्र	21/04/1989
सूर्य	21/06/1989
चंद्र	30/09/1989
मंगल	10/12/1989
राहु	11/06/1990
गुरु	20/11/1990
शनि	01/06/1991
बुध	20/11/1991
केतु	30/01/1992

शुक्र - सूर्य	
30/01/1992	
30/01/1993	
सूर्य	18/02/1992
चंद्र	19/03/1992
मंगल	09/04/1992
राहु	03/06/1992
गुरु	22/07/1992
शनि	18/09/1992
बुध	09/11/1992
केतु	30/11/1992
शुक्र	30/01/1993

शुक्र - चंद्र	
30/01/1993	
30/09/1994	
चंद्र	21/03/1993
मंगल	26/04/1993
राहु	26/07/1993
गुरु	15/10/1993
शनि	20/01/1994
बुध	16/04/1994
केतु	22/05/1994
शुक्र	31/08/1994
सूर्य	30/09/1994

शुक्र - मंगल	
30/09/1994	
01/12/1995	
मंगल	25/10/1994
राहु	28/12/1994
गुरु	23/02/1995
शनि	02/05/1995
बुध	01/07/1995
केतु	26/07/1995
शुक्र	05/10/1995
सूर्य	26/10/1995
चंद्र	01/12/1995

शुक्र - राहु	
01/12/1995	
30/11/1998	
राहु	13/05/1996
गुरु	06/10/1996
शनि	29/03/1997
बुध	31/08/1997
केतु	03/11/1997
शुक्र	04/05/1998
सूर्य	28/06/1998
चंद्र	27/09/1998
मंगल	30/11/1998

शुक्र - गुरु	
30/11/1998	
31/07/2001	
गुरु	09/04/1999
शनि	10/09/1999
बुध	26/01/2000
केतु	23/03/2000
शुक्र	02/09/2000
सूर्य	20/10/2000
चंद्र	09/01/2001
मंगल	07/03/2001
राहु	31/07/2001

शुक्र - शनि	
31/07/2001	
30/09/2004	
शनि	30/01/2002
बुध	13/07/2002
केतु	19/09/2002
शुक्र	31/03/2003
सूर्य	27/05/2003
चंद्र	01/09/2003
मंगल	07/11/2003
राहु	29/04/2004
गुरु	30/09/2004

शुक्र - बुध	
30/09/2004	
01/08/2007	
बुध	24/02/2005
केतु	25/04/2005
शुक्र	14/10/2005
सूर्य	05/12/2005
चंद्र	01/03/2006
मंगल	01/05/2006
राहु	03/10/2006
गुरु	18/02/2007
शनि	01/08/2007

शुक्र - केतु	
01/08/2007	
30/09/2008	
केतु	26/08/2007
शुक्र	05/11/2007
सूर्य	26/11/2007
चंद्र	01/01/2008
मंगल	25/01/2008
राहु	29/03/2008
गुरु	25/05/2008
शनि	01/08/2008
बुध	30/09/2008

सूर्य - सूर्य	
30/09/2008	
18/01/2009	
सूर्य	05/10/2008
चंद्र	15/10/2008
मंगल	21/10/2008
राहु	06/11/2008
गुरु	21/11/2008
शनि	08/12/2008
बुध	24/12/2008
केतु	30/12/2008
शुक्र	18/01/2009

सूर्य - चंद्र	
18/01/2009	
19/07/2009	
चंद्र	02/02/2009
मंगल	12/02/2009
राहु	12/03/2009
गुरु	05/04/2009
शनि	04/05/2009
बुध	30/05/2009
केतु	10/06/2009
शुक्र	10/07/2009
सूर्य	19/07/2009

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल	
19/07/2009	
24/11/2009	
मंगल	27/07/2009
राहु	15/08/2009
गुरु	01/09/2009
शनि	21/09/2009
बुध	09/10/2009
केतु	17/10/2009
शुक्र	07/11/2009
सूर्य	13/11/2009
चंद्र	24/11/2009

सूर्य - राहु	
24/11/2009	
19/10/2010	
राहु	12/01/2010
गुरु	25/02/2010
शनि	18/04/2010
बुध	04/06/2010
केतु	23/06/2010
शुक्र	17/08/2010
सूर्य	02/09/2010
चंद्र	30/09/2010
मंगल	19/10/2010

सूर्य - गुरु	
19/10/2010	
07/08/2011	
गुरु	27/11/2010
शनि	12/01/2011
बुध	22/02/2011
केतु	11/03/2011
शुक्र	29/04/2011
सूर्य	14/05/2011
चंद्र	07/06/2011
मंगल	24/06/2011
राहु	07/08/2011

सूर्य - शनि	
07/08/2011	
19/07/2012	
शनि	01/10/2011
बुध	19/11/2011
केतु	09/12/2011
शुक्र	05/02/2012
सूर्य	22/02/2012
चंद्र	22/03/2012
मंगल	12/04/2012
राहु	03/06/2012
गुरु	19/07/2012

सूर्य - बुध	
19/07/2012	
25/05/2013	
बुध	01/09/2012
केतु	19/09/2012
शुक्र	10/11/2012
सूर्य	25/11/2012
चंद्र	21/12/2012
मंगल	08/01/2013
राहु	24/02/2013
गुरु	06/04/2013
शनि	25/05/2013

सूर्य - केतु	
25/05/2013	
30/09/2013	
केतु	02/06/2013
शुक्र	23/06/2013
सूर्य	30/06/2013
चंद्र	10/07/2013
मंगल	18/07/2013
राहु	06/08/2013
गुरु	23/08/2013
शनि	12/09/2013
बुध	30/09/2013

सूर्य - शुक्र	
30/09/2013	
30/09/2014	
शुक्र	30/11/2013
सूर्य	18/12/2013
चंद्र	18/01/2014
मंगल	08/02/2014
राहु	04/04/2014
गुरु	23/05/2014
शनि	19/07/2014
बुध	09/09/2014
केतु	30/09/2014

चंद्र - चंद्र	
30/09/2014	
01/08/2015	
चंद्र	26/10/2014
मंगल	13/11/2014
राहु	28/12/2014
गुरु	07/02/2015
शनि	27/03/2015
बुध	09/05/2015
केतु	27/05/2015
शुक्र	17/07/2015
सूर्य	01/08/2015

चंद्र - मंगल	
01/08/2015	
01/03/2016	
मंगल	13/08/2015
राहु	14/09/2015
गुरु	13/10/2015
शनि	15/11/2015
बुध	16/12/2015
केतु	28/12/2015
शुक्र	02/02/2016
सूर्य	12/02/2016
चंद्र	01/03/2016

चंद्र - राहु	
01/03/2016	
31/08/2017	
राहु	22/05/2016
गुरु	03/08/2016
शनि	29/10/2016
बुध	15/01/2017
केतु	15/02/2017
शुक्र	18/05/2017
सूर्य	14/06/2017
चंद्र	30/07/2017
मंगल	31/08/2017

चंद्र - गुरु	
31/08/2017	
31/12/2018	
गुरु	04/11/2017
शनि	20/01/2018
बुध	30/03/2018
केतु	27/04/2018
शुक्र	17/07/2018
सूर्य	11/08/2018
चंद्र	20/09/2018
मंगल	19/10/2018
राहु	31/12/2018

चंद्र - शनि	
31/12/2018	
31/07/2020	
शनि	01/04/2019
बुध	22/06/2019
केतु	26/07/2019
शुक्र	30/10/2019
सूर्य	28/11/2019
चंद्र	16/01/2020
मंगल	18/02/2020
राहु	15/05/2020
गुरु	31/07/2020

चंद्र - बुध	
31/07/2020	
31/12/2021	
बुध	12/10/2020
केतु	12/11/2020
शुक्र	06/02/2021
सूर्य	04/03/2021
चंद्र	16/04/2021
मंगल	16/05/2021
राहु	02/08/2021
गुरु	10/10/2021
शनि	31/12/2021

चंद्र - केतु	
31/12/2021	
01/08/2022	
केतु	12/01/2022
शुक्र	16/02/2022
सूर्य	27/02/2022
चंद्र	17/03/2022
मंगल	29/03/2022
राहु	30/04/2022
गुरु	29/05/2022
शनि	01/07/2022
बुध	01/08/2022

चंद्र - शुक्र	
01/08/2022	
31/03/2024	
शुक्र	10/11/2022
सूर्य	10/12/2022
चंद्र	30/01/2023
मंगल	07/03/2023
राहु	06/06/2023
गुरु	26/08/2023
शनि	01/12/2023
बुध	25/02/2024
केतु	31/03/2024

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य	
31/03/2024	30/09/2024
सूर्य	09/04/2024
चंद्र	25/04/2024
मंगल	05/05/2024
राहु	02/06/2024
गुरु	26/06/2024
शनि	25/07/2024
बुध	20/08/2024
केतु	31/08/2024
शुक्र	30/09/2024

मंगल - मंगल	
30/09/2024	26/02/2025
मंगल	09/10/2024
राहु	31/10/2024
गुरु	20/11/2024
शनि	14/12/2024
बुध	04/01/2025
केतु	12/01/2025
शुक्र	06/02/2025
सूर्य	14/02/2025
चंद्र	26/02/2025

मंगल - राहु	
26/02/2025	17/03/2026
राहु	25/04/2025
गुरु	15/06/2025
शनि	15/08/2025
बुध	08/10/2025
केतु	30/10/2025
शुक्र	02/01/2026
सूर्य	21/01/2026
चंद्र	22/02/2026
मंगल	17/03/2026

मंगल - गुरु	
17/03/2026	21/02/2027
गुरु	01/05/2026
शनि	24/06/2026
बुध	11/08/2026
केतु	31/08/2026
शुक्र	27/10/2026
सूर्य	13/11/2026
चंद्र	12/12/2026
मंगल	31/12/2026
राहु	21/02/2027

मंगल - शनि	
21/02/2027	31/03/2028
शनि	26/04/2027
बुध	22/06/2027
केतु	16/07/2027
शुक्र	21/09/2027
सूर्य	11/10/2027
चंद्र	14/11/2027
मंगल	08/12/2027
राहु	06/02/2028
गुरु	31/03/2028

मंगल - बुध	
31/03/2028	29/03/2029
बुध	22/05/2028
केतु	12/06/2028
शुक्र	11/08/2028
सूर्य	29/08/2028
चंद्र	28/09/2028
मंगल	20/10/2028
राहु	13/12/2028
गुरु	30/01/2029
शनि	29/03/2029

मंगल - केतु	
29/03/2029	25/08/2029
केतु	06/04/2029
शुक्र	01/05/2029
सूर्य	09/05/2029
चंद्र	21/05/2029
मंगल	30/05/2029
राहु	21/06/2029
गुरु	11/07/2029
शनि	04/08/2029
बुध	25/08/2029

मंगल - शुक्र	
25/08/2029	25/10/2030
शुक्र	04/11/2029
सूर्य	25/11/2029
चंद्र	31/12/2029
मंगल	24/01/2030
राहु	29/03/2030
गुरु	25/05/2030
शनि	01/08/2030
बुध	30/09/2030
केतु	25/10/2030

मंगल - सूर्य	
25/10/2030	02/03/2031
सूर्य	31/10/2030
चंद्र	11/11/2030
मंगल	18/11/2030
राहु	08/12/2030
गुरु	25/12/2030
शनि	14/01/2031
बुध	01/02/2031
केतु	08/02/2031
शुक्र	02/03/2031

मंगल - चंद्र	
02/03/2031	01/10/2031
चंद्र	19/03/2031
मंगल	01/04/2031
राहु	03/05/2031
गुरु	31/05/2031
शनि	04/07/2031
बुध	03/08/2031
केतु	16/08/2031
शुक्र	20/09/2031
सूर्य	01/10/2031

राहु - राहु	
01/10/2031	13/06/2034
राहु	26/02/2032
गुरु	06/07/2032
शनि	09/12/2032
बुध	28/04/2033
केतु	25/06/2033
शुक्र	06/12/2033
सूर्य	24/01/2034
चंद्र	16/04/2034
मंगल	13/06/2034

राहु - गुरु	
13/06/2034	05/11/2036
गुरु	08/10/2034
शनि	24/02/2035
बुध	28/06/2035
केतु	18/08/2035
शुक्र	11/01/2036
सूर्य	24/02/2036
चंद्र	07/05/2036
मंगल	27/06/2036
राहु	05/11/2036

राहु - शनि	
05/11/2036	12/09/2039
शनि	19/04/2037
बुध	14/09/2037
केतु	14/11/2037
शुक्र	06/05/2038
सूर्य	27/06/2038
चंद्र	22/09/2038
मंगल	22/11/2038
राहु	27/04/2039
गुरु	12/09/2039

राहु - बुध	
12/09/2039	01/04/2042
बुध	22/01/2040
केतु	17/03/2040
शुक्र	19/08/2040
सूर्य	05/10/2040
चंद्र	21/12/2040
मंगल	13/02/2041
राहु	03/07/2041
गुरु	04/11/2041
शनि	01/04/2042

राहु - केतु	
01/04/2042	19/04/2043
केतु	23/04/2042
शुक्र	26/06/2042
सूर्य	15/07/2042
चंद्र	16/08/2042
मंगल	08/09/2042
राहु	04/11/2042
गुरु	25/12/2042
शनि	24/02/2043
बुध	19/04/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र	
19/04/2043	
19/04/2046	
शुक्र	19/10/2043
सूर्य	13/12/2043
चंद्र	13/03/2044
मंगल	16/05/2044
राहु	27/10/2044
गुरु	22/03/2045
शनि	12/09/2045
बुध	14/02/2046
केतु	19/04/2046

राहु - सूर्य	
19/04/2046	
14/03/2047	
सूर्य	06/05/2046
चंद्र	02/06/2046
मंगल	21/06/2046
राहु	09/08/2046
गुरु	22/09/2046
शनि	13/11/2046
बुध	30/12/2046
केतु	18/01/2047
शुक्र	14/03/2047

राहु - चंद्र	
14/03/2047	
12/09/2048	
चंद्र	28/04/2047
मंगल	30/05/2047
राहु	21/08/2047
गुरु	02/11/2047
शनि	27/01/2048
बुध	14/04/2048
केतु	16/05/2048
शुक्र	15/08/2048
सूर्य	12/09/2048

राहु - मंगल	
12/09/2048	
30/09/2049	
मंगल	04/10/2048
राहु	01/12/2048
गुरु	21/01/2049
शनि	22/03/2049
बुध	16/05/2049
केतु	07/06/2049
शुक्र	10/08/2049
सूर्य	29/08/2049
चंद्र	30/09/2049

गुरु - गुरु	
30/09/2049	
18/11/2051	
गुरु	12/01/2050
शनि	15/05/2050
बुध	03/09/2050
केतु	18/10/2050
शुक्र	25/02/2051
सूर्य	05/04/2051
चंद्र	09/06/2051
मंगल	25/07/2051
राहु	18/11/2051

गुरु - शनि	
18/11/2051	
01/06/2054	
शनि	13/04/2052
बुध	22/08/2052
केतु	15/10/2052
शुक्र	18/03/2053
सूर्य	03/05/2053
चंद्र	20/07/2053
मंगल	12/09/2053
राहु	28/01/2054
गुरु	01/06/2054

गुरु - बुध	
01/06/2054	
06/09/2056	
बुध	26/09/2054
केतु	13/11/2054
शुक्र	31/03/2055
सूर्य	12/05/2055
चंद्र	20/07/2055
मंगल	06/09/2055
राहु	08/01/2056
गुरु	28/04/2056
शनि	06/09/2056

गुरु - केतु	
06/09/2056	
13/08/2057	
केतु	26/09/2056
शुक्र	21/11/2056
सूर्य	08/12/2056
चंद्र	06/01/2057
मंगल	26/01/2057
राहु	18/03/2057
गुरु	02/05/2057
शनि	25/06/2057
बुध	13/08/2057

गुरु - शुक्र	
13/08/2057	
13/04/2060	
शुक्र	22/01/2058
सूर्य	12/03/2058
चंद्र	01/06/2058
मंगल	28/07/2058
राहु	21/12/2058
गुरु	30/04/2059
शनि	01/10/2059
बुध	16/02/2060
केतु	13/04/2060

गुरु - सूर्य	
13/04/2060	
30/01/2061	
सूर्य	27/04/2060
चंद्र	21/05/2060
मंगल	08/06/2060
राहु	21/07/2060
गुरु	29/08/2060
शनि	15/10/2060
बुध	25/11/2060
केतु	12/12/2060
शुक्र	30/01/2061

गुरु - चंद्र	
30/01/2061	
01/06/2062	
चंद्र	11/03/2061
मंगल	09/04/2061
राहु	21/06/2061
गुरु	25/08/2061
शनि	10/11/2061
बुध	18/01/2062
केतु	15/02/2062
शुक्र	07/05/2062
सूर्य	01/06/2062

गुरु - मंगल	
01/06/2062	
08/05/2063	
मंगल	21/06/2062
राहु	11/08/2062
गुरु	25/09/2062
शनि	18/11/2062
बुध	05/01/2063
केतु	25/01/2063
शुक्र	23/03/2063
सूर्य	09/04/2063
चंद्र	08/05/2063

गुरु - राहु	
08/05/2063	
30/09/2065	
राहु	16/09/2063
गुरु	11/01/2064
शनि	29/05/2064
बुध	30/09/2064
केतु	20/11/2064
शुक्र	15/04/2065
सूर्य	29/05/2065
चंद्र	10/08/2065
मंगल	30/09/2065

शनि - शनि	
30/09/2065	
03/10/2068	
शनि	23/03/2066
बुध	26/08/2066
केतु	29/10/2066
शुक्र	30/04/2067
सूर्य	24/06/2067
चंद्र	24/09/2067
मंगल	27/11/2067
राहु	10/05/2068
गुरु	03/10/2068

शनि - बुध	
03/10/2068	
13/06/2071	
बुध	19/02/2069
केतु	18/04/2069
शुक्र	28/09/2069
सूर्य	17/11/2069
चंद्र	07/02/2070
मंगल	05/04/2070
राहु	30/08/2070
गुरु	08/01/2071
शनि	13/06/2071

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु	
13/06/2071	
22/07/2072	
केतु	07/07/2071
शुक्र	12/09/2071
सूर्य	02/10/2071
चंद्र	05/11/2071
मंगल	29/11/2071
राहु	29/01/2072
गुरु	23/03/2072
शनि	26/05/2072
बुध	22/07/2072

शनि - शुक्र	
22/07/2072	
22/09/2075	
शुक्र	31/01/2073
सूर्य	30/03/2073
चंद्र	04/07/2073
मंगल	09/09/2073
राहु	02/03/2074
गुरु	03/08/2074
शनि	02/02/2075
बुध	16/07/2075
केतु	22/09/2075

शनि - सूर्य	
22/09/2075	
03/09/2076	
सूर्य	09/10/2075
चंद्र	07/11/2075
मंगल	27/11/2075
राहु	18/01/2076
गुरु	04/03/2076
शनि	28/04/2076
बुध	17/06/2076
केतु	07/07/2076
शुक्र	03/09/2076

शनि - चंद्र	
03/09/2076	
04/04/2078	
चंद्र	21/10/2076
मंगल	24/11/2076
राहु	18/02/2077
गुरु	06/05/2077
शनि	06/08/2077
बुध	27/10/2077
केतु	30/11/2077
शुक्र	06/03/2078
सूर्य	04/04/2078

शनि - मंगल	
04/04/2078	
14/05/2079	
मंगल	28/04/2078
राहु	27/06/2078
गुरु	20/08/2078
शनि	23/10/2078
बुध	20/12/2078
केतु	12/01/2079
शुक्र	21/03/2079
सूर्य	10/04/2079
चंद्र	14/05/2079

शनि - राहु	
14/05/2079	
20/03/2082	
राहु	17/10/2079
गुरु	04/03/2080
शनि	15/08/2080
बुध	10/01/2081
केतु	12/03/2081
शुक्र	01/09/2081
सूर्य	23/10/2081
चंद्र	18/01/2082
मंगल	20/03/2082

शनि - गुरु	
20/03/2082	
30/09/2084	
गुरु	21/07/2082
शनि	15/12/2082
बुध	25/04/2083
केतु	18/06/2083
शुक्र	19/11/2083
सूर्य	04/01/2084
चंद्र	21/03/2084
मंगल	14/05/2084
राहु	30/09/2084

बुध - बुध	
30/09/2084	
27/02/2087	
बुध	02/02/2085
केतु	25/03/2085
शुक्र	19/08/2085
सूर्य	01/10/2085
चंद्र	14/12/2085
मंगल	03/02/2086
राहु	15/06/2086
गुरु	10/10/2086
शनि	27/02/2087

बुध - केतु	
27/02/2087	
24/02/2088	
केतु	20/03/2087
शुक्र	19/05/2087
सूर्य	06/06/2087
चंद्र	06/07/2087
मंगल	28/07/2087
राहु	20/09/2087
गुरु	07/11/2087
शनि	04/01/2088
बुध	24/02/2088

बुध - शुक्र	
24/02/2088	
25/12/2090	
शुक्र	14/08/2088
सूर्य	05/10/2088
चंद्र	30/12/2088
मंगल	01/03/2089
राहु	03/08/2089
गुरु	19/12/2089
शनि	01/06/2090
बुध	25/10/2090
केतु	25/12/2090

बुध - सूर्य	
25/12/2090	
31/10/2091	
सूर्य	09/01/2091
चंद्र	04/02/2091
मंगल	22/02/2091
राहु	10/04/2091
गुरु	21/05/2091
शनि	09/07/2091
बुध	22/08/2091
केतु	09/09/2091
शुक्र	31/10/2091

बुध - चंद्र	
31/10/2091	
01/04/2093	
चंद्र	13/12/2091
मंगल	12/01/2092
राहु	30/03/2092
गुरु	07/06/2092
शनि	28/08/2092
बुध	09/11/2092
केतु	09/12/2092
शुक्र	06/03/2093
सूर्य	01/04/2093

बुध - मंगल	
01/04/2093	
29/03/2094	
मंगल	22/04/2093
राहु	15/06/2093
गुरु	02/08/2093
शनि	29/09/2093
बुध	19/11/2093
केतु	10/12/2093
शुक्र	09/02/2094
सूर्य	27/02/2094
चंद्र	29/03/2094

बुध - राहु	
29/03/2094	
15/10/2096	
राहु	16/08/2094
गुरु	18/12/2094
शनि	14/05/2095
बुध	23/09/2095
केतु	16/11/2095
शुक्र	20/04/2096
सूर्य	05/06/2096
चंद्र	22/08/2096
मंगल	15/10/2096

बुध - गुरु	
15/10/2096	
21/01/2099	
गुरु	03/02/2097
शनि	14/06/2097
बुध	09/10/2097
केतु	26/11/2097
शुक्र	13/04/2098
सूर्य	25/05/2098
चंद्र	02/08/2098
मंगल	19/09/2098
राहु	21/01/2099

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - राहु - मंगल	
22/02/2026 18:10	
17/03/2026 03:05	
मंगल	24/02/2026 01:29
राहु	27/02/2026 10:01
गुरु	02/03/2026 09:37
शनि	05/03/2026 22:38
बुध	09/03/2026 02:41
केतु	10/03/2026 10:01
शुक्र	14/03/2026 03:30
सूर्य	15/03/2026 06:20
चंद्र	17/03/2026 03:05

मंगल - गुरु - गुरु	
17/03/2026 03:05	
01/05/2026 13:58	
गुरु	23/03/2026 04:32
शनि	30/03/2026 09:15
बुध	05/04/2026 19:48
केतु	08/04/2026 11:26
शुक्र	16/04/2026 01:15
सूर्य	18/04/2026 07:47
चंद्र	22/04/2026 02:42
मंगल	24/04/2026 18:20
राहु	01/05/2026 13:58

मंगल - गुरु - शनि	
01/05/2026 13:58	
24/06/2026 13:23	
शनि	10/05/2026 03:04
बुध	17/05/2026 18:35
केतु	20/05/2026 22:09
शुक्र	29/05/2026 22:04
सूर्य	01/06/2026 14:50
चंद्र	06/06/2026 02:47
मंगल	09/06/2026 06:21
राहु	17/06/2026 08:40
गुरु	24/06/2026 13:23

मंगल - गुरु - बुध	
24/06/2026 13:23	
11/08/2026 20:27	
बुध	01/07/2026 09:35
केतु	04/07/2026 05:12
शुक्र	12/07/2026 06:22
सूर्य	14/07/2026 16:20
चंद्र	18/07/2026 16:55
मंगल	21/07/2026 12:32
राहु	28/07/2026 18:23
गुरु	04/08/2026 04:56
शनि	11/08/2026 20:27

मंगल - गुरु - केतु	
11/08/2026 20:27	
31/08/2026 17:42	
केतु	13/08/2026 00:17
शुक्र	16/08/2026 07:50
सूर्य	17/08/2026 07:41
चंद्र	18/08/2026 23:28
मंगल	20/08/2026 03:18
राहु	23/08/2026 02:53
गुरु	25/08/2026 18:32
शनि	28/08/2026 22:06
बुध	31/08/2026 17:42

मंगल - गुरु - शुक्र	
31/08/2026 17:42	
27/10/2026 13:18	
शुक्र	10/09/2026 04:58
सूर्य	13/09/2026 01:09
चंद्र	17/09/2026 18:47
मंगल	21/09/2026 02:20
राहु	29/09/2026 14:52
गुरु	07/10/2026 04:41
शनि	16/10/2026 04:35
बुध	24/10/2026 05:46
केतु	27/10/2026 13:18

मंगल - गुरु - सूर्य	
27/10/2026 13:18	
13/11/2026 14:23	
सूर्य	28/10/2026 09:45
चंद्र	29/10/2026 19:51
मंगल	30/10/2026 19:43
राहु	02/11/2026 09:04
गुरु	04/11/2026 15:37
शनि	07/11/2026 08:23
बुध	09/11/2026 18:20
केतु	10/11/2026 18:12
शुक्र	13/11/2026 14:23

मंगल - गुरु - चंद्र	
13/11/2026 14:23	
12/12/2026 00:11	
चंद्र	15/11/2026 23:12
मंगल	17/11/2026 14:58
राहु	21/11/2026 21:15
गुरु	25/11/2026 16:09
शनि	30/11/2026 04:06
बुध	04/12/2026 04:41
केतु	05/12/2026 20:28
शुक्र	10/12/2026 14:06
सूर्य	12/12/2026 00:11

मंगल - गुरु - मंगल	
12/12/2026 00:11	
31/12/2026 21:27	
मंगल	13/12/2026 04:01
राहु	16/12/2026 03:37
गुरु	18/12/2026 19:15
शनि	21/12/2026 22:49
बुध	24/12/2026 18:26
केतु	25/12/2026 22:16
शुक्र	29/12/2026 05:49
सूर्य	30/12/2026 05:40
चंद्र	31/12/2026 21:27

मंगल - गुरु - राहु	
31/12/2026 21:27	
21/02/2027 00:41	
राहु	08/01/2027 13:32
गुरु	15/01/2027 09:10
शनि	23/01/2027 11:28
बुध	30/01/2027 17:20
केतु	02/02/2027 16:55
शुक्र	11/02/2027 05:28
सूर्य	13/02/2027 18:49
चंद्र	18/02/2027 01:06
मंगल	21/02/2027 00:41

मंगल - शनि - शनि	
21/02/2027 00:41	
26/04/2027 03:00	
शनि	03/03/2027 04:15
बुध	12/03/2027 06:11
केतु	15/03/2027 23:55
शुक्र	26/03/2027 16:18
सूर्य	29/03/2027 21:13
चंद्र	04/04/2027 05:24
मंगल	07/04/2027 23:08
राहु	17/04/2027 13:53
गुरु	26/04/2027 03:00

मंगल - शनि - बुध	
26/04/2027 03:00	
22/06/2027 11:23	
बुध	04/05/2027 05:59
केतु	07/05/2027 14:16
शुक्र	17/05/2027 03:40
सूर्य	20/05/2027 00:29
चंद्र	24/05/2027 19:11
मंगल	28/05/2027 03:29
राहु	05/06/2027 17:56
गुरु	13/06/2027 09:27
शनि	22/06/2027 11:23

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शनि - केतु	
22/06/2027 11:23	
16/07/2027 02:08	
केतु	23/06/2027 20:26
शुक्र	27/06/2027 18:54
सूर्य	28/06/2027 23:14
चंद्र	30/06/2027 22:28
मंगल	02/07/2027 07:31
राहु	05/07/2027 20:32
गुरु	09/07/2027 00:06
शनि	12/07/2027 17:50
बुध	16/07/2027 02:08

मंगल - शनि - शुक्र	
16/07/2027 02:08	
21/09/2027 13:24	
शुक्र	27/07/2027 08:00
सूर्य	30/07/2027 16:58
चंद्र	05/08/2027 07:54
मंगल	09/08/2027 06:22
राहु	19/08/2027 09:15
गुरु	28/08/2027 09:10
शनि	08/09/2027 01:33
बुध	17/09/2027 14:57
केतु	21/09/2027 13:24

मंगल - शनि - सूर्य	
21/09/2027 13:24	
11/10/2027 19:11	
सूर्य	22/09/2027 13:41
चंद्र	24/09/2027 06:10
मंगल	25/09/2027 10:31
राहु	28/09/2027 11:23
गुरु	01/10/2027 04:09
शनि	04/10/2027 09:04
बुध	07/10/2027 05:53
केतु	08/10/2027 10:13
शुक्र	11/10/2027 19:11

मंगल - शनि - चंद्र	
11/10/2027 19:11	
14/11/2027 12:49	
चंद्र	14/10/2027 14:39
मंगल	16/10/2027 13:53
राहु	21/10/2027 15:20
गुरु	26/10/2027 03:17
शनि	31/10/2027 11:28
बुध	05/11/2027 06:10
केतु	07/11/2027 05:24
शुक्र	12/11/2027 20:20
सूर्य	14/11/2027 12:49

मंगल - शनि - मंगल	
14/11/2027 12:49	
08/12/2027 03:34	
मंगल	15/11/2027 21:53
राहु	19/11/2027 10:54
गुरु	22/11/2027 14:28
शनि	26/11/2027 08:12
बुध	29/11/2027 16:29
केतु	01/12/2027 01:33
शुक्र	05/12/2027 00:00
सूर्य	06/12/2027 04:20
चंद्र	08/12/2027 03:34

मंगल - शनि - राहु	
08/12/2027 03:34	
06/02/2028 20:55	
राहु	17/12/2027 06:10
गुरु	25/12/2027 08:29
शनि	03/01/2028 23:14
बुध	12/01/2028 13:41
केतु	16/01/2028 02:42
शुक्र	26/01/2028 05:35
सूर्य	29/01/2028 06:27
चंद्र	03/02/2028 07:54
मंगल	06/02/2028 20:55

मंगल - शनि - गुरु	
06/02/2028 20:55	
31/03/2028 20:20	
गुरु	14/02/2028 01:38
शनि	22/02/2028 14:45
बुध	01/03/2028 06:16
केतु	04/03/2028 09:50
शुक्र	13/03/2028 09:44
सूर्य	16/03/2028 02:30
चंद्र	20/03/2028 14:27
मंगल	23/03/2028 18:01
राहु	31/03/2028 20:20

मंगल - बुध - बुध	
31/03/2028 20:20	
22/05/2028 03:50	
बुध	08/04/2028 02:48
केतु	11/04/2028 02:38
शुक्र	19/04/2028 15:53
सूर्य	22/04/2028 05:28
चंद्र	26/04/2028 12:05
मंगल	29/04/2028 11:55
राहु	07/05/2028 04:39
गुरु	14/05/2028 00:51
शनि	22/05/2028 03:50

मंगल - बुध - केतु	
22/05/2028 03:50	
12/06/2028 06:55	
केतु	23/05/2028 09:25
शुक्र	26/05/2028 21:56
सूर्य	27/05/2028 23:17
चंद्र	29/05/2028 17:33
मंगल	30/05/2028 23:07
राहु	03/06/2028 03:11
गुरु	05/06/2028 22:48
शनि	09/06/2028 07:05
बुध	12/06/2028 06:55

मंगल - बुध - शुक्र	
12/06/2028 06:55	
11/08/2028 15:45	
शुक्र	22/06/2028 08:24
सूर्य	25/06/2028 08:50
चंद्र	30/06/2028 09:34
मंगल	03/07/2028 22:05
राहु	12/07/2028 23:25
गुरु	21/07/2028 00:35
शनि	30/07/2028 13:59
बुध	08/08/2028 03:14
केतु	11/08/2028 15:45

मंगल - बुध - सूर्य	
11/08/2028 15:45	
29/08/2028 18:24	
सूर्य	12/08/2028 13:29
चंद्र	14/08/2028 01:42
मंगल	15/08/2028 03:03
राहु	17/08/2028 20:15
गुरु	20/08/2028 06:12
शनि	23/08/2028 03:02
बुध	25/08/2028 16:36
केतु	26/08/2028 17:57
शुक्र	29/08/2028 18:24

मंगल - बुध - चंद्र	
29/08/2028 18:24	
28/09/2028 22:49	
चंद्र	01/09/2028 06:46
मंगल	03/09/2028 01:01
राहु	07/09/2028 13:41
गुरु	11/09/2028 14:16
शनि	16/09/2028 08:58
बुध	20/09/2028 15:36
केतु	22/09/2028 09:51
शुक्र	27/09/2028 10:35
सूर्य	28/09/2028 22:49

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - बुध - मंगल	
28/09/2028 22:49	
20/10/2028 01:54	
मंगल	30/09/2028 04:23
राहु	03/10/2028 08:27
गुरु	06/10/2028 04:04
शनि	09/10/2028 12:21
बुध	12/10/2028 12:11
केतु	13/10/2028 17:46
शुक्र	17/10/2028 06:17
सूर्य	18/10/2028 07:38
चंद्र	20/10/2028 01:54

मंगल - बुध - राहु	
20/10/2028 01:54	
13/12/2028 09:50	
राहु	28/10/2028 05:29
गुरु	04/11/2028 11:21
शनि	13/11/2028 01:48
बुध	20/11/2028 18:32
केतु	23/11/2028 22:36
शुक्र	02/12/2028 23:55
सूर्य	05/12/2028 17:07
चंद्र	10/12/2028 05:47
मंगल	13/12/2028 09:50

मंगल - बुध - गुरु	
13/12/2028 09:50	
30/01/2029 16:54	
गुरु	19/12/2028 20:23
शनि	27/12/2028 11:54
बुध	03/01/2029 08:06
केतु	06/01/2029 03:43
शुक्र	14/01/2029 04:53
सूर्य	16/01/2029 14:50
चंद्र	20/01/2029 15:26
मंगल	23/01/2029 11:02
राहु	30/01/2029 16:54

मंगल - बुध - शनि	
30/01/2029 16:54	
29/03/2029 01:17	
शनि	08/02/2029 18:50
बुध	16/02/2029 21:49
केतु	20/02/2029 06:06
शुक्र	01/03/2029 19:30
सूर्य	04/03/2029 16:19
चंद्र	09/03/2029 11:01
मंगल	12/03/2029 19:19
राहु	21/03/2029 09:46
गुरु	29/03/2029 01:17

मंगल - केतु - केतु	
29/03/2029 01:17	
06/04/2029 18:05	
केतु	29/03/2029 13:28
शुक्र	31/03/2029 00:16
सूर्य	31/03/2029 10:42
चंद्र	01/04/2029 04:06
मंगल	01/04/2029 16:17
राहु	02/04/2029 23:36
गुरु	04/04/2029 03:27
शनि	05/04/2029 12:30
बुध	06/04/2029 18:05

मंगल - केतु - शुक्र	
06/04/2029 18:05	
01/05/2029 14:40	
शुक्र	10/04/2029 21:31
सूर्य	12/04/2029 03:21
चंद्र	14/04/2029 05:03
मंगल	15/04/2029 15:51
राहु	19/04/2029 09:21
गुरु	22/04/2029 16:53
शनि	26/04/2029 15:21
बुध	30/04/2029 03:52
केतु	01/05/2029 14:40

मंगल - केतु - सूर्य	
01/05/2029 14:40	
09/05/2029 01:38	
सूर्य	01/05/2029 23:37
चंद्र	02/05/2029 14:31
मंगल	03/05/2029 00:58
राहु	04/05/2029 03:49
गुरु	05/05/2029 03:40
शनि	06/05/2029 08:01
बुध	07/05/2029 09:22
केतु	07/05/2029 19:48
शुक्र	09/05/2029 01:38

मंगल - केतु - चंद्र	
09/05/2029 01:38	
21/05/2029 11:55	
चंद्र	10/05/2029 02:29
मंगल	10/05/2029 19:53
राहु	12/05/2029 16:38
गुरु	14/05/2029 08:24
शनि	16/05/2029 07:38
बुध	18/05/2029 01:53
केतु	18/05/2029 19:17
शुक्र	20/05/2029 21:00
सूर्य	21/05/2029 11:55

मंगल - केतु - मंगल	
21/05/2029 11:55	
30/05/2029 04:43	
मंगल	22/05/2029 00:06
राहु	23/05/2029 07:25
गुरु	24/05/2029 11:16
शनि	25/05/2029 20:19
बुध	27/05/2029 01:54
केतु	27/05/2029 14:05
शुक्र	29/05/2029 00:53
सूर्य	29/05/2029 11:19
चंद्र	30/05/2029 04:43

मंगल - केतु - राहु	
30/05/2029 04:43	
21/06/2029 13:38	
राहु	02/06/2029 13:16
गुरु	05/06/2029 12:51
शनि	09/06/2029 01:52
बुध	12/06/2029 05:55
केतु	13/06/2029 13:15
शुक्र	17/06/2029 06:44
सूर्य	18/06/2029 09:35
चंद्र	20/06/2029 06:19
मंगल	21/06/2029 13:38

मंगल - केतु - गुरु	
21/06/2029 13:38	
11/07/2029 10:54	
गुरु	24/06/2029 05:16
शनि	27/06/2029 08:50
बुध	30/06/2029 04:27
केतु	01/07/2029 08:17
शुक्र	04/07/2029 15:50
सूर्य	05/07/2029 15:42
चंद्र	07/07/2029 07:28
मंगल	08/07/2029 11:19
राहु	11/07/2029 10:54

मंगल - केतु - शनि	
11/07/2029 10:54	
04/08/2029 01:39	
शनि	15/07/2029 04:38
बुध	18/07/2029 12:55
केतु	19/07/2029 21:59
शुक्र	23/07/2029 20:26
सूर्य	25/07/2029 00:47
चंद्र	27/07/2029 00:00
मंगल	28/07/2029 09:04
राहु	31/07/2029 22:05
गुरु	04/08/2029 01:39

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - केतु - बुध	
04/08/2029 01:39	
25/08/2029 04:44	
बुध	07/08/2029 01:29
केतु	08/08/2029 07:04
शुक्र	11/08/2029 19:35
सूर्य	12/08/2029 20:56
चंद्र	14/08/2029 15:11
मंगल	15/08/2029 20:46
राहु	19/08/2029 00:50
गुरु	21/08/2029 20:27
शनि	25/08/2029 04:44

मंगल - शुक्र - शुक्र	
25/08/2029 04:44	
04/11/2029 05:14	
शुक्र	06/09/2029 00:49
सूर्य	09/09/2029 14:03
चंद्र	15/09/2029 12:05
मंगल	19/09/2029 15:31
राहु	30/09/2029 07:11
गुरु	09/10/2029 18:27
शनि	21/10/2029 00:20
बुध	31/10/2029 01:48
केतु	04/11/2029 05:14

मंगल - शुक्र - सूर्य	
04/11/2029 05:14	
25/11/2029 12:35	
सूर्य	05/11/2029 06:48
चंद्र	07/11/2029 01:25
मंगल	08/11/2029 07:15
राहु	11/11/2029 11:57
गुरु	14/11/2029 08:08
शनि	17/11/2029 17:05
बुध	20/11/2029 17:32
केतु	21/11/2029 23:22
शुक्र	25/11/2029 12:35

मंगल - शुक्र - चंद्र	
25/11/2029 12:35	
31/12/2029 00:50	
चंद्र	28/11/2029 11:36
मंगल	30/11/2029 13:19
राहु	05/12/2029 21:09
गुरु	10/12/2029 14:47
शनि	16/12/2029 05:44
बुध	21/12/2029 06:28
केतु	23/12/2029 08:11
शुक्र	29/12/2029 06:13
सूर्य	31/12/2029 00:50

मंगल - शुक्र - मंगल	
31/12/2029 00:50	
24/01/2030 21:25	
मंगल	01/01/2030 11:38
राहु	05/01/2030 05:07
गुरु	08/01/2030 12:40
शनि	12/01/2030 11:07
बुध	15/01/2030 23:38
केतु	17/01/2030 10:26
शुक्र	21/01/2030 13:52
सूर्य	22/01/2030 19:42
चंद्र	24/01/2030 21:25

मंगल - शुक्र - राहु	
24/01/2030 21:25	
29/03/2030 19:28	
राहु	03/02/2030 11:31
गुरु	12/02/2030 00:03
शनि	22/02/2030 02:57
बुध	03/03/2030 04:16
केतु	06/03/2030 21:45
शुक्र	17/03/2030 13:26
सूर्य	20/03/2030 18:08
चंद्र	26/03/2030 01:58
मंगल	29/03/2030 19:28

मंगल - शुक्र - गुरु	
29/03/2030 19:28	
25/05/2030 15:04	
गुरु	06/04/2030 09:16
शनि	15/04/2030 09:11
बुध	23/04/2030 10:21
केतु	26/04/2030 17:54
शुक्र	06/05/2030 05:10
सूर्य	09/05/2030 01:21
चंद्र	13/05/2030 18:59
मंगल	17/05/2030 02:31
राहु	25/05/2030 15:04

मंगल - शुक्र - शनि	
25/05/2030 15:04	
01/08/2030 02:20	
शनि	05/06/2030 07:27
बुध	14/06/2030 20:50
केतु	18/06/2030 19:18
शुक्र	30/06/2030 01:11
सूर्य	03/07/2030 10:09
चंद्र	09/07/2030 01:05
मंगल	12/07/2030 23:32
राहु	23/07/2030 02:26
गुरु	01/08/2030 02:20

मंगल - शुक्र - बुध	
01/08/2030 02:20	
30/09/2030 11:10	
बुध	09/08/2030 15:35
केतु	13/08/2030 04:06
शुक्र	23/08/2030 05:34
सूर्य	26/08/2030 06:01
चंद्र	31/08/2030 06:45
मंगल	03/09/2030 19:16
राहु	12/09/2030 20:35
गुरु	20/09/2030 21:46
शनि	30/09/2030 11:10

मंगल - शुक्र - केतु	
30/09/2030 11:10	
25/10/2030 07:44	
केतु	01/10/2030 21:58
शुक्र	06/10/2030 01:23
सूर्य	07/10/2030 07:13
चंद्र	09/10/2030 08:56
मंगल	10/10/2030 19:44
राहु	14/10/2030 13:13
गुरु	17/10/2030 20:46
शनि	21/10/2030 19:13
बुध	25/10/2030 07:44

मंगल - सूर्य - सूर्य	
25/10/2030 07:44	
31/10/2030 17:08	
सूर्य	25/10/2030 15:24
चंद्र	26/10/2030 04:11
मंगल	26/10/2030 13:08
राहु	27/10/2030 12:09
गुरु	28/10/2030 08:36
शनि	29/10/2030 08:53
बुध	30/10/2030 06:37
केतु	30/10/2030 15:34
शुक्र	31/10/2030 17:08

मंगल - सूर्य - चंद्र	
31/10/2030 17:08	
11/11/2030 08:49	
चंद्र	01/11/2030 14:27
मंगल	02/11/2030 05:22
राहु	03/11/2030 19:43
गुरु	05/11/2030 05:48
शनि	06/11/2030 22:17
बुध	08/11/2030 10:30
केतु	09/11/2030 01:25
शुक्र	10/11/2030 20:02
सूर्य	11/11/2030 08:49

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - राहु - मंगल - गुरु	
27/02/2026 10:01	
02/03/2026 09:37	
गुरु	27/02/2026 19:34
शनि	28/02/2026 06:54
बुध	28/02/2026 17:03
केतु	28/02/2026 21:13
शुक्र	01/03/2026 09:09
सूर्य	01/03/2026 12:44
चंद्र	01/03/2026 18:42
मंगल	01/03/2026 22:52
राहु	02/03/2026 09:37

मंगल - राहु - मंगल - शनि	
02/03/2026 09:37	
05/03/2026 22:38	
शनि	02/03/2026 23:04
बुध	03/03/2026 11:07
केतु	03/03/2026 16:05
शुक्र	04/03/2026 06:15
सूर्य	04/03/2026 10:30
चंद्र	04/03/2026 17:35
मंगल	04/03/2026 22:32
राहु	05/03/2026 11:17
गुरु	05/03/2026 22:38

मंगल - राहु - मंगल - बुध	
05/03/2026 22:38	
09/03/2026 02:41	
बुध	06/03/2026 09:24
केतु	06/03/2026 13:50
शुक्र	07/03/2026 02:31
सूर्य	07/03/2026 06:19
चंद्र	07/03/2026 12:39
मंगल	07/03/2026 17:06
राहु	08/03/2026 04:30
गुरु	08/03/2026 14:39
शनि	09/03/2026 02:41

मंगल - राहु - मंगल - केतु	
09/03/2026 02:41	
10/03/2026 10:01	
केतु	09/03/2026 04:31
शुक्र	09/03/2026 09:44
सूर्य	09/03/2026 11:18
चंद्र	09/03/2026 13:55
मंगल	09/03/2026 15:44
राहु	09/03/2026 20:26
गुरु	10/03/2026 00:37
शनि	10/03/2026 05:34
बुध	10/03/2026 10:01

मंगल - राहु - मंगल - शुक्र	
10/03/2026 10:01	
14/03/2026 03:30	
शुक्र	11/03/2026 00:55
सूर्य	11/03/2026 05:24
चंद्र	11/03/2026 12:51
मंगल	11/03/2026 18:04
राहु	12/03/2026 07:30
गुरु	12/03/2026 19:26
शनि	13/03/2026 09:36
बुध	13/03/2026 22:16
केतु	14/03/2026 03:30

मंगल - राहु - मंगल - सूर्य	
14/03/2026 03:30	
15/03/2026 06:20	
सूर्य	14/03/2026 04:50
चंद्र	14/03/2026 07:04
मंगल	14/03/2026 08:38
राहु	14/03/2026 12:40
गुरु	14/03/2026 16:15
शनि	14/03/2026 20:30
बुध	15/03/2026 00:18
केतु	15/03/2026 01:52
शुक्र	15/03/2026 06:20

मंगल - राहु - मंगल - चंद्र	
15/03/2026 06:20	
17/03/2026 03:05	
चंद्र	15/03/2026 10:04
मंगल	15/03/2026 12:41
राहु	15/03/2026 19:23
गुरु	16/03/2026 01:21
शनि	16/03/2026 08:26
बुध	16/03/2026 14:47
केतु	16/03/2026 17:23
शुक्र	17/03/2026 00:51
सूर्य	17/03/2026 03:05

मंगल - गुरु - गुरु - गुरु	
17/03/2026 03:05	
23/03/2026 04:32	
गुरु	17/03/2026 22:29
शनि	18/03/2026 21:30
बुध	19/03/2026 18:07
केतु	20/03/2026 02:36
शुक्र	21/03/2026 02:50
सूर्य	21/03/2026 10:07
चंद्र	21/03/2026 22:14
मंगल	22/03/2026 06:43
राहु	23/03/2026 04:32

मंगल - गुरु - गुरु - शनि	
23/03/2026 04:32	
30/03/2026 09:15	
शनि	24/03/2026 07:53
बुध	25/03/2026 08:21
केतु	25/03/2026 18:26
शुक्र	26/03/2026 23:13
सूर्य	27/03/2026 07:51
चंद्र	27/03/2026 22:15
मंगल	28/03/2026 08:19
राहु	29/03/2026 10:14
गुरु	30/03/2026 09:15

मंगल - गुरु - गुरु - बुध	
30/03/2026 09:15	
05/04/2026 19:48	
बुध	31/03/2026 07:09
केतु	31/03/2026 16:10
शुक्र	01/04/2026 17:55
सूर्य	02/04/2026 01:39
चंद्र	02/04/2026 14:32
मंगल	02/04/2026 23:33
राहु	03/04/2026 22:43
गुरु	04/04/2026 19:20
शनि	05/04/2026 19:48

मंगल - गुरु - गुरु - केतु	
05/04/2026 19:48	
08/04/2026 11:26	
केतु	05/04/2026 23:31
शुक्र	06/04/2026 10:07
सूर्य	06/04/2026 13:18
चंद्र	06/04/2026 18:36
मंगल	06/04/2026 22:19
राहु	07/04/2026 07:51
गुरु	07/04/2026 16:21
शनि	08/04/2026 02:25
बुध	08/04/2026 11:26

मंगल - गुरु - गुरु - शुक्र	
08/04/2026 11:26	
16/04/2026 01:15	
शुक्र	09/04/2026 17:44
सूर्य	10/04/2026 02:50
चंद्र	10/04/2026 17:59
मंगल	11/04/2026 04:35
राहु	12/04/2026 07:51
गुरु	13/04/2026 08:06
शनि	14/04/2026 12:53
बुध	15/04/2026 14:38
केतु	16/04/2026 01:15

Ranjit

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - गुरु - गुरु - सूर्य	
16/04/2026 01:15	
18/04/2026 07:47	
सूर्य	16/04/2026 03:58
चंद्र	16/04/2026 08:31
मंगल	16/04/2026 11:42
राहु	16/04/2026 19:53
गुरु	17/04/2026 03:09
शनि	17/04/2026 11:47
बुध	17/04/2026 19:31
केतु	17/04/2026 22:42
शुक्र	18/04/2026 07:47

मंगल - गुरु - गुरु - चंद्र	
18/04/2026 07:47	
22/04/2026 02:42	
चंद्र	18/04/2026 15:22
मंगल	18/04/2026 20:40
राहु	19/04/2026 10:18
गुरु	19/04/2026 22:26
शनि	20/04/2026 12:49
बुध	21/04/2026 01:42
केतु	21/04/2026 07:00
शुक्र	21/04/2026 22:09
सूर्य	22/04/2026 02:42

मंगल - गुरु - गुरु - मंगल	
22/04/2026 02:42	
24/04/2026 18:20	
मंगल	22/04/2026 06:25
राहु	22/04/2026 15:57
गुरु	23/04/2026 00:26
शनि	23/04/2026 10:31
बुध	23/04/2026 19:32
केतु	23/04/2026 23:14
शुक्र	24/04/2026 09:51
सूर्य	24/04/2026 13:02
चंद्र	24/04/2026 18:20

मंगल - गुरु - गुरु - राहु	
24/04/2026 18:20	
01/05/2026 13:58	
राहु	25/04/2026 18:53
गुरु	26/04/2026 16:42
शनि	27/04/2026 18:36
बुध	28/04/2026 17:47
केतु	29/04/2026 03:20
शुक्र	30/04/2026 06:36
सूर्य	30/04/2026 14:47
चंद्र	01/05/2026 04:25
मंगल	01/05/2026 13:58

मंगल - गुरु - शनि - शनि	
01/05/2026 13:58	
10/05/2026 03:04	
शनि	02/05/2026 22:26
बुध	04/05/2026 03:30
केतु	04/05/2026 15:28
शुक्र	06/05/2026 01:39
सूर्य	06/05/2026 11:54
चंद्र	07/05/2026 05:00
मंगल	07/05/2026 16:57
राहु	08/05/2026 23:43
गुरु	10/05/2026 03:04

मंगल - गुरु - शनि - बुध	
10/05/2026 03:04	
17/05/2026 18:35	
बुध	11/05/2026 05:04
केतु	11/05/2026 15:47
शुक्र	12/05/2026 22:22
सूर्य	13/05/2026 07:32
चंद्र	13/05/2026 22:50
मंगल	14/05/2026 09:32
राहु	15/05/2026 13:04
गुरु	16/05/2026 13:32
शनि	17/05/2026 18:35

मंगल - गुरु - शनि - केतु	
17/05/2026 18:35	
20/05/2026 22:09	
केतु	17/05/2026 23:00
शुक्र	18/05/2026 11:36
सूर्य	18/05/2026 15:22
चंद्र	18/05/2026 21:40
मंगल	19/05/2026 02:05
राहु	19/05/2026 13:25
गुरु	19/05/2026 23:29
शनि	20/05/2026 11:27
बुध	20/05/2026 22:09

मंगल - गुरु - शनि - शुक्र	
20/05/2026 22:09	
29/05/2026 22:04	
शुक्र	22/05/2026 10:08
सूर्य	22/05/2026 20:56
चंद्र	23/05/2026 14:56
मंगल	24/05/2026 03:31
राहु	25/05/2026 11:54
गुरु	26/05/2026 16:42
शनि	28/05/2026 02:53
बुध	29/05/2026 09:28
केतु	29/05/2026 22:04

मंगल - गुरु - शनि - सूर्य	
29/05/2026 22:04	
01/06/2026 14:50	
सूर्य	30/05/2026 01:18
चंद्र	30/05/2026 06:42
मंगल	30/05/2026 10:28
राहु	30/05/2026 20:11
गुरु	31/05/2026 04:50
शनि	31/05/2026 15:05
बुध	01/06/2026 00:15
केतु	01/06/2026 04:02
शुक्र	01/06/2026 14:50

मंगल - गुरु - शनि - चंद्र	
01/06/2026 14:50	
06/06/2026 02:47	
चंद्र	01/06/2026 23:50
मंगल	02/06/2026 06:07
राहु	02/06/2026 22:19
गुरु	03/06/2026 12:43
शनि	04/06/2026 05:48
बुध	04/06/2026 21:06
केतु	05/06/2026 03:24
शुक्र	05/06/2026 21:23
सूर्य	06/06/2026 02:47

मंगल - गुरु - शनि - मंगल	
06/06/2026 02:47	
09/06/2026 06:21	
मंगल	06/06/2026 07:11
राहु	06/06/2026 18:31
गुरु	07/06/2026 04:36
शनि	07/06/2026 16:34
बुध	08/06/2026 03:16
केतु	08/06/2026 07:41
शुक्र	08/06/2026 20:16
सूर्य	09/06/2026 00:03
चंद्र	09/06/2026 06:21

मंगल - गुरु - शनि - राहु	
09/06/2026 06:21	
17/06/2026 08:40	
राहु	10/06/2026 11:30
गुरु	11/06/2026 13:24
शनि	12/06/2026 20:10
बुध	13/06/2026 23:42
केतु	14/06/2026 11:02
शुक्र	15/06/2026 19:25
सूर्य	16/06/2026 05:08
चंद्र	16/06/2026 21:20
मंगल	17/06/2026 08:40

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 11 मास 11 दिन

शनि 14 वर्ष	
10/04/1985	
22/03/1992	
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
बुध	14/09/1985
शुक्र	17/11/1987
सूर्य	16/03/1989
मंगल	27/08/1990
गुरु	22/03/1992

केतु 15 वर्ष	
22/03/1992	
22/03/2007	
केतु	28/02/1994
चंद्र	25/03/1996
बुध	06/06/1998
शुक्र	03/10/2000
सूर्य	06/03/2002
मंगल	24/09/2003
गुरु	30/05/2005
शनि	22/03/2007

चंद्र 16 वर्ष	
22/03/2007	
22/03/2023	
चंद्र	05/06/2009
बुध	10/10/2011
शुक्र	04/04/2014
सूर्य	10/10/2015
मंगल	05/06/2017
गुरु	22/03/2019
शनि	25/02/2021
केतु	22/03/2023

बुध 17 वर्ष	
22/03/2023	
22/03/2040	
बुध	17/09/2025
शुक्र	08/05/2028
सूर्य	18/12/2029
मंगल	21/09/2031
गुरु	17/08/2033
शनि	05/09/2035
केतु	16/11/2037
चंद्र	22/03/2040

शुक्र 18 वर्ष	
22/03/2040	
22/03/2058	
शुक्र	06/01/2043
सूर्य	20/09/2044
मंगल	01/08/2046
गुरु	07/08/2048
शनि	10/10/2050
केतु	06/02/2053
चंद्र	02/08/2055
बुध	22/03/2058

सूर्य 11 वर्ष	
22/03/2058	
22/03/2069	
सूर्य	07/04/2059
मंगल	27/05/2060
गुरु	20/08/2061
शनि	18/12/2062
केतु	20/05/2064
चंद्र	26/11/2065
बुध	07/07/2067
शुक्र	22/03/2069

मंगल 12 वर्ष	
22/03/2069	
22/03/2081	
मंगल	18/06/2070
गुरु	23/10/2071
शनि	03/04/2073
केतु	22/10/2074
चंद्र	18/06/2076
बुध	22/03/2078
शुक्र	31/01/2080
सूर्य	22/03/2081

गुरु 13 वर्ष	
22/03/2081	
22/03/2094	
गुरु	05/09/2082
शनि	31/03/2084
केतु	05/12/2085
चंद्र	21/09/2087
बुध	17/08/2089
शुक्र	24/08/2091
सूर्य	16/11/2092
मंगल	22/03/2094

शनि 14 वर्ष	
22/03/2094	
00/00/0000	
शनि	29/11/2095
केतु	21/09/2097
चंद्र	27/08/2099
बुध	11/04/2101
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Ranjit

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध	
10/04/1985	
14/09/1985	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
केतु	03/06/1985
चंद्र	14/09/1985

शनि - शुक्र	
14/09/1985	
17/11/1987	
शुक्र	15/01/1986
सूर्य	01/04/1986
मंगल	22/06/1986
गुरु	19/09/1986
शनि	23/12/1986
केतु	05/04/1987
चंद्र	23/07/1987
बुध	17/11/1987

शनि - सूर्य	
17/11/1987	
16/03/1989	
सूर्य	02/01/1988
मंगल	21/02/1988
गुरु	15/04/1988
शनि	13/06/1988
केतु	14/08/1988
चंद्र	20/10/1988
बुध	30/12/1988
शुक्र	16/03/1989

शनि - मंगल	
16/03/1989	
27/08/1990	
मंगल	09/05/1989
गुरु	08/07/1989
शनि	09/09/1989
केतु	17/11/1989
चंद्र	29/01/1990
बुध	16/04/1990
शुक्र	07/07/1990
सूर्य	27/08/1990

शनि - गुरु	
27/08/1990	
22/03/1992	
गुरु	30/10/1990
शनि	07/01/1991
केतु	22/03/1991
चंद्र	09/06/1991
बुध	01/09/1991
शुक्र	29/11/1991
सूर्य	22/01/1992
मंगल	22/03/1992

केतु - केतु	
22/03/1992	
28/02/1994	
केतु	21/06/1992
चंद्र	27/09/1992
बुध	09/01/1993
शुक्र	29/04/1993
सूर्य	05/07/1993
मंगल	16/09/1993
गुरु	05/12/1993
शनि	28/02/1994

केतु - चंद्र	
28/02/1994	
25/03/1996	
चंद्र	12/06/1994
बुध	01/10/1994
शुक्र	26/01/1995
सूर्य	08/04/1995
मंगल	25/06/1995
गुरु	18/09/1995
शनि	18/12/1995
केतु	25/03/1996

केतु - बुध	
25/03/1996	
06/06/1998	
बुध	20/07/1996
शुक्र	22/11/1996
सूर्य	06/02/1997
मंगल	30/04/1997
गुरु	29/07/1997
शनि	03/11/1997
केतु	15/02/1998
चंद्र	06/06/1998

केतु - शुक्र	
06/06/1998	
03/10/2000	
शुक्र	16/10/1998
सूर्य	04/01/1999
मंगल	02/04/1999
गुरु	06/07/1999
शनि	17/10/1999
केतु	04/02/2000
चंद्र	31/05/2000
बुध	03/10/2000

केतु - सूर्य	
03/10/2000	
06/03/2002	
सूर्य	21/11/2000
मंगल	14/01/2001
गुरु	13/03/2001
शनि	15/05/2001
केतु	21/07/2001
चंद्र	01/10/2001
बुध	16/12/2001
शुक्र	06/03/2002

केतु - मंगल	
06/03/2002	
24/09/2003	
मंगल	04/05/2002
गुरु	07/07/2002
शनि	13/09/2002
केतु	25/11/2002
चंद्र	11/02/2003
बुध	05/05/2003
शुक्र	01/08/2003
सूर्य	24/09/2003

केतु - गुरु	
24/09/2003	
30/05/2005	
गुरु	02/12/2003
शनि	14/02/2004
केतु	03/05/2004
चंद्र	27/07/2004
बुध	25/10/2004
शुक्र	28/01/2005
सूर्य	28/03/2005
मंगल	30/05/2005

केतु - शनि	
30/05/2005	
22/03/2007	
शनि	18/08/2005
केतु	11/11/2005
चंद्र	11/02/2006
बुध	19/05/2006
शुक्र	29/08/2006
सूर्य	31/10/2006
मंगल	07/01/2007
गुरु	22/03/2007

चंद्र - चंद्र	
22/03/2007	
05/06/2009	
चंद्र	12/07/2007
बुध	07/11/2007
शुक्र	11/03/2008
सूर्य	26/05/2008
मंगल	18/08/2008
गुरु	16/11/2008
शनि	21/02/2009
केतु	05/06/2009

चंद्र - बुध	
05/06/2009	
10/10/2011	
बुध	09/10/2009
शुक्र	19/02/2010
सूर्य	11/05/2010
मंगल	08/08/2010
गुरु	12/11/2010
शनि	23/02/2011
केतु	14/06/2011
चंद्र	10/10/2011

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र	
10/10/2011	04/04/2014
शुक्र	28/02/2012
सूर्य	24/05/2012
मंगल	25/08/2012
गुरु	05/12/2012
शनि	25/03/2013
केतु	20/07/2013
चंद्र	22/11/2013
बुध	04/04/2014

चंद्र - सूर्य	
04/04/2014	10/10/2015
सूर्य	26/05/2014
मंगल	23/07/2014
गुरु	23/09/2014
शनि	29/11/2014
केतु	08/02/2015
चंद्र	26/04/2015
बुध	16/07/2015
शुक्र	10/10/2015

चंद्र - मंगल	
10/10/2015	05/06/2017
मंगल	11/12/2015
गुरु	17/02/2016
शनि	30/04/2016
केतु	17/07/2016
चंद्र	09/10/2016
बुध	05/01/2017
शुक्र	09/04/2017
सूर्य	05/06/2017

चंद्र - गुरु	
05/06/2017	22/03/2019
गुरु	18/08/2017
शनि	05/11/2017
केतु	29/01/2018
चंद्र	29/04/2018
बुध	03/08/2018
शुक्र	13/11/2018
सूर्य	14/01/2019
मंगल	22/03/2019

चंद्र - शनि	
22/03/2019	25/02/2021
शनि	16/06/2019
केतु	15/09/2019
चंद्र	21/12/2019
बुध	02/04/2020
शुक्र	21/07/2020
सूर्य	26/09/2020
मंगल	08/12/2020
गुरु	25/02/2021

चंद्र - केतु	
25/02/2021	22/03/2023
केतु	02/06/2021
चंद्र	15/09/2021
बुध	03/01/2022
शुक्र	01/05/2022
सूर्य	11/07/2022
मंगल	28/09/2022
गुरु	21/12/2022
शनि	22/03/2023

बुध - बुध	
22/03/2023	17/09/2025
बुध	03/08/2023
शुक्र	22/12/2023
सूर्य	17/03/2024
मंगल	19/06/2024
गुरु	29/09/2024
शनि	17/01/2025
केतु	15/05/2025
चंद्र	17/09/2025

बुध - शुक्र	
17/09/2025	08/05/2028
शुक्र	14/02/2026
सूर्य	16/05/2026
मंगल	24/08/2026
गुरु	10/12/2026
शनि	05/04/2027
केतु	08/08/2027
चंद्र	19/12/2027
बुध	08/05/2028

बुध - सूर्य	
08/05/2028	18/12/2029
सूर्य	03/07/2028
मंगल	02/09/2028
गुरु	07/11/2028
शनि	17/01/2029
केतु	03/04/2029
चंद्र	23/06/2029
बुध	17/09/2029
शुक्र	18/12/2029

बुध - मंगल	
18/12/2029	21/09/2031
मंगल	22/02/2030
गुरु	05/05/2030
शनि	22/07/2030
केतु	13/10/2030
चंद्र	09/01/2031
बुध	13/04/2031
शुक्र	22/07/2031
सूर्य	21/09/2031

बुध - गुरु	
21/09/2031	17/08/2033
गुरु	08/12/2031
शनि	01/03/2032
केतु	30/05/2032
चंद्र	03/09/2032
बुध	14/12/2032
शुक्र	01/04/2033
सूर्य	06/06/2033
मंगल	17/08/2033

बुध - शनि	
17/08/2033	05/09/2035
शनि	15/11/2033
केतु	20/02/2034
चंद्र	04/06/2034
बुध	21/09/2034
शुक्र	16/01/2035
सूर्य	28/03/2035
मंगल	13/06/2035
गुरु	05/09/2035

बुध - केतु	
05/09/2035	16/11/2037
केतु	18/12/2035
चंद्र	07/04/2036
बुध	03/08/2036
शुक्र	05/12/2036
सूर्य	19/02/2037
मंगल	13/05/2037
गुरु	11/08/2037
शनि	16/11/2037

बुध - चंद्र	
16/11/2037	22/03/2040
चंद्र	14/03/2038
बुध	18/07/2038
शुक्र	28/11/2038
सूर्य	17/02/2039
मंगल	17/05/2039
गुरु	21/08/2039
शनि	02/12/2039
केतु	22/03/2040

शुक्र - शुक्र	
22/03/2040	06/01/2043
शुक्र	27/08/2040
सूर्य	02/12/2040
मंगल	17/03/2041
गुरु	10/07/2041
शनि	10/11/2041
केतु	22/03/2042
चंद्र	09/08/2042
बुध	06/01/2043

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य	
06/01/2043	
20/09/2044	
सूर्य	06/03/2043
मंगल	09/05/2043
गुरु	18/07/2043
शनि	02/10/2043
केतु	21/12/2043
चंद्र	16/03/2044
बुध	16/06/2044
शुक्र	20/09/2044

शुक्र - मंगल	
20/09/2044	
01/08/2046	
मंगल	30/11/2044
गुरु	14/02/2045
शनि	07/05/2045
केतु	03/08/2045
चंद्र	05/11/2045
बुध	12/02/2046
शुक्र	29/05/2046
सूर्य	01/08/2046

शुक्र - गुरु	
01/08/2046	
07/08/2048	
गुरु	23/10/2046
शनि	20/01/2047
केतु	25/04/2047
चंद्र	05/08/2047
बुध	21/11/2047
शुक्र	14/03/2048
सूर्य	23/05/2048
मंगल	07/08/2048

शुक्र - शनि	
07/08/2048	
10/10/2050	
शनि	11/11/2048
केतु	22/02/2049
चंद्र	11/06/2049
बुध	05/10/2049
शुक्र	05/02/2050
सूर्य	22/04/2050
मंगल	13/07/2050
गुरु	10/10/2050

शुक्र - केतु	
10/10/2050	
06/02/2053	
केतु	28/01/2051
चंद्र	25/05/2051
बुध	26/09/2051
शुक्र	05/02/2052
सूर्य	26/04/2052
मंगल	23/07/2052
गुरु	26/10/2052
शनि	06/02/2053

शुक्र - चंद्र	
06/02/2053	
02/08/2055	
चंद्र	11/06/2053
बुध	22/10/2053
शुक्र	12/03/2054
सूर्य	06/06/2054
मंगल	07/09/2054
गुरु	18/12/2054
शनि	06/04/2055
केतु	02/08/2055

शुक्र - बुध	
02/08/2055	
22/03/2058	
बुध	21/12/2055
शुक्र	18/05/2056
सूर्य	18/08/2056
मंगल	25/11/2056
गुरु	13/03/2057
शनि	08/07/2057
केतु	09/11/2057
चंद्र	22/03/2058

सूर्य - सूर्य	
22/03/2058	
07/04/2059	
सूर्य	27/04/2058
मंगल	06/06/2058
गुरु	18/07/2058
शनि	02/09/2058
केतु	22/10/2058
चंद्र	13/12/2058
बुध	07/02/2059
शुक्र	07/04/2059

सूर्य - मंगल	
07/04/2059	
27/05/2060	
मंगल	20/05/2059
गुरु	06/07/2059
शनि	25/08/2059
केतु	18/10/2059
चंद्र	14/12/2059
बुध	13/02/2060
शुक्र	17/04/2060
सूर्य	27/05/2060

सूर्य - गुरु	
27/05/2060	
20/08/2061	
गुरु	16/07/2060
शनि	09/09/2060
केतु	06/11/2060
चंद्र	07/01/2061
बुध	14/03/2061
शुक्र	23/05/2061
सूर्य	04/07/2061
मंगल	20/08/2061

सूर्य - शनि	
20/08/2061	
18/12/2062	
शनि	18/10/2061
केतु	19/12/2061
चंद्र	24/02/2062
बुध	06/05/2062
शुक्र	20/07/2062
सूर्य	04/09/2062
मंगल	25/10/2062
गुरु	18/12/2062

सूर्य - केतु	
18/12/2062	
20/05/2064	
केतु	23/02/2063
चंद्र	06/05/2063
बुध	21/07/2063
शुक्र	10/10/2063
सूर्य	28/11/2063
मंगल	21/01/2064
गुरु	19/03/2064
शनि	20/05/2064

सूर्य - चंद्र	
20/05/2064	
26/11/2065	
चंद्र	05/08/2064
बुध	25/10/2064
शुक्र	19/01/2065
सूर्य	13/03/2065
मंगल	09/05/2065
गुरु	10/07/2065
शनि	15/09/2065
केतु	26/11/2065

सूर्य - बुध	
26/11/2065	
07/07/2067	
बुध	20/02/2066
शुक्र	22/05/2066
सूर्य	17/07/2066
मंगल	16/09/2066
गुरु	21/11/2066
शनि	31/01/2067
केतु	17/04/2067
चंद्र	07/07/2067

सूर्य - शुक्र	
07/07/2067	
22/03/2069	
शुक्र	12/10/2067
सूर्य	10/12/2067
मंगल	13/02/2068
गुरु	23/04/2068
शनि	07/07/2068
केतु	26/09/2068
चंद्र	21/12/2068
बुध	22/03/2069

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल	
22/03/2069	
18/06/2070	
मंगल	08/05/2069
गुरु	28/06/2069
शनि	21/08/2069
केतु	19/10/2069
चंद्र	21/12/2069
बुध	25/02/2070
शुक्र	06/05/2070
सूर्य	18/06/2070

मंगल - गुरु	
18/06/2070	
23/10/2071	
गुरु	12/08/2070
शनि	11/10/2070
केतु	13/12/2070
चंद्र	19/02/2071
बुध	02/05/2071
शुक्र	17/07/2071
सूर्य	02/09/2071
मंगल	23/10/2071

मंगल - शनि	
23/10/2071	
03/04/2073	
शनि	25/12/2071
केतु	03/03/2072
चंद्र	15/05/2072
बुध	31/07/2072
शुक्र	21/10/2072
सूर्य	10/12/2072
मंगल	03/02/2073
गुरु	03/04/2073

मंगल - केतु	
03/04/2073	
22/10/2074	
केतु	16/06/2073
चंद्र	02/09/2073
बुध	24/11/2073
शुक्र	20/02/2074
सूर्य	15/04/2074
मंगल	12/06/2074
गुरु	15/08/2074
शनि	22/10/2074

मंगल - चंद्र	
22/10/2074	
18/06/2076	
चंद्र	14/01/2075
बुध	12/04/2075
शुक्र	15/07/2075
सूर्य	10/09/2075
मंगल	12/11/2075
गुरु	19/01/2076
शनि	01/04/2076
केतु	18/06/2076

मंगल - बुध	
18/06/2076	
22/03/2078	
बुध	20/09/2076
शुक्र	29/12/2076
सूर्य	28/02/2077
मंगल	05/05/2077
गुरु	16/07/2077
शनि	01/10/2077
केतु	24/12/2077
चंद्र	22/03/2078

मंगल - शुक्र	
22/03/2078	
31/01/2080	
शुक्र	06/07/2078
सूर्य	08/09/2078
मंगल	18/11/2078
गुरु	02/02/2079
शनि	25/04/2079
केतु	22/07/2079
चंद्र	24/10/2079
बुध	31/01/2080

मंगल - सूर्य	
31/01/2080	
22/03/2081	
सूर्य	11/03/2080
मंगल	23/04/2080
गुरु	08/06/2080
शनि	28/07/2080
केतु	20/09/2080
चंद्र	16/11/2080
बुध	16/01/2081
शुक्र	22/03/2081

गुरु - गुरु	
22/03/2081	
05/09/2082	
गुरु	21/05/2081
शनि	24/07/2081
केतु	01/10/2081
चंद्र	13/12/2081
बुध	01/03/2082
शुक्र	23/05/2082
सूर्य	12/07/2082
मंगल	05/09/2082

गुरु - शनि	
05/09/2082	
31/03/2084	
शनि	13/11/2082
केतु	26/01/2083
चंद्र	15/04/2083
बुध	08/07/2083
शुक्र	05/10/2083
सूर्य	29/11/2083
मंगल	27/01/2084
गुरु	31/03/2084

गुरु - केतु	
31/03/2084	
05/12/2085	
केतु	18/06/2084
चंद्र	11/09/2084
बुध	10/12/2084
शुक्र	15/03/2085
सूर्य	13/05/2085
मंगल	15/07/2085
गुरु	22/09/2085
शनि	05/12/2085

गुरु - चंद्र	
05/12/2085	
21/09/2087	
चंद्र	05/03/2086
बुध	09/06/2086
शुक्र	19/09/2086
सूर्य	20/11/2086
मंगल	27/01/2087
गुरु	10/04/2087
शनि	28/06/2087
केतु	21/09/2087

गुरु - बुध	
21/09/2087	
17/08/2089	
बुध	01/01/2088
शुक्र	18/04/2088
सूर्य	23/06/2088
मंगल	03/09/2088
गुरु	20/11/2088
शनि	12/02/2089
केतु	13/05/2089
चंद्र	17/08/2089

गुरु - शुक्र	
17/08/2089	
24/08/2091	
शुक्र	09/12/2089
सूर्य	17/02/2090
मंगल	04/05/2090
गुरु	26/07/2090
शनि	23/10/2090
केतु	26/01/2091
चंद्र	08/05/2091
बुध	24/08/2091

गुरु - सूर्य	
24/08/2091	
16/11/2092	
सूर्य	05/10/2091
मंगल	21/11/2091
गुरु	10/01/2092
शनि	05/03/2092
केतु	02/05/2092
चंद्र	03/07/2092
बुध	07/09/2092
शुक्र	16/11/2092

Ranjit

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 3 मास 23 दिन

केतु 5 वर्ष	
10/04/1985	
04/08/1987	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
राहु	26/07/1985
गुरु	11/03/1986
शनि	06/12/1986
बुध	04/08/1987

शुक्र 13 वर्ष	
04/08/1987	
03/12/2000	
शुक्र	24/10/1989
सूर्य	24/06/1990
चंद्र	04/08/1991
मंगल	14/05/1992
राहु	15/05/1994
गुरु	23/02/1996
शनि	04/04/1998
बुध	23/02/2000
केतु	03/12/2000

सूर्य 4 वर्ष	
03/12/2000	
03/12/2004	
सूर्य	14/02/2001
चंद्र	16/06/2001
मंगल	09/09/2001
राहु	16/04/2002
गुरु	28/10/2002
शनि	16/06/2003
बुध	09/01/2004
केतु	04/04/2004
शुक्र	03/12/2004

चंद्र 7 वर्ष	
03/12/2004	
04/08/2011	
चंद्र	24/06/2005
मंगल	13/11/2005
राहु	13/11/2006
गुरु	04/10/2007
शनि	23/10/2008
बुध	03/10/2009
केतु	22/02/2010
शुक्र	04/04/2011
सूर्य	04/08/2011

मंगल 5 वर्ष	
04/08/2011	
04/04/2016	
मंगल	12/11/2011
राहु	24/07/2012
गुरु	08/03/2013
शनि	03/12/2013
बुध	02/08/2014
केतु	09/11/2014
शुक्र	20/08/2015
सूर्य	14/11/2015
चंद्र	04/04/2016

राहु 12 वर्ष	
04/04/2016	
04/04/2028	
राहु	21/01/2018
गुरु	28/08/2019
शनि	22/07/2021
बुध	04/04/2023
केतु	16/12/2023
शुक्र	16/12/2025
सूर्य	23/07/2026
चंद्र	23/07/2027
मंगल	04/04/2028

गुरु 11 वर्ष	
04/04/2028	
04/12/2038	
गुरु	05/09/2029
शनि	15/05/2031
बुध	17/11/2032
केतु	02/07/2033
शुक्र	12/04/2035
सूर्य	24/10/2035
चंद्र	13/09/2036
मंगल	28/04/2037
राहु	04/12/2038

शनि 13 वर्ष	
04/12/2038	
04/08/2051	
शनि	05/12/2040
बुध	22/09/2042
केतु	18/06/2043
शुक्र	28/07/2045
सूर्य	17/03/2046
चंद्र	06/04/2047
मंगल	01/01/2048
राहु	25/11/2049
गुरु	04/08/2051

बुध 11 वर्ष	
04/08/2051	
04/12/2062	
बुध	13/03/2053
केतु	09/11/2053
शुक्र	30/09/2055
सूर्य	24/04/2056
चंद्र	04/04/2057
मंगल	01/12/2057
राहु	14/08/2059
गुरु	16/02/2061
शनि	04/12/2062

केतु 5 वर्ष	
04/12/2062	
00/00/0000	
केतु	13/03/2063
शुक्र	22/12/2063
सूर्य	16/03/2064
चंद्र	05/08/2064
मंगल	13/11/2064
राहु	10/04/2065
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Ranjit

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु	
10/04/1985	
26/07/1985	
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
बुध	11/04/1985
केतु	26/04/1985
शुक्र	07/06/1985
सूर्य	20/06/1985
चंद्र	12/07/1985
मंगल	26/07/1985

केतु - गुरु	
26/07/1985	
11/03/1986	
गुरु	26/08/1985
शनि	01/10/1985
बुध	02/11/1985
केतु	15/11/1985
शुक्र	23/12/1985
सूर्य	03/01/1986
चंद्र	22/01/1986
मंगल	05/02/1986
राहु	11/03/1986

केतु - शनि	
11/03/1986	
06/12/1986	
शनि	22/04/1986
बुध	31/05/1986
केतु	15/06/1986
शुक्र	30/07/1986
सूर्य	13/08/1986
चंद्र	04/09/1986
मंगल	20/09/1986
राहु	31/10/1986
गुरु	06/12/1986

केतु - बुध	
06/12/1986	
04/08/1987	
बुध	09/01/1987
केतु	23/01/1987
शुक्र	04/03/1987
सूर्य	16/03/1987
चंद्र	05/04/1987
मंगल	19/04/1987
राहु	26/05/1987
गुरु	27/06/1987
शनि	04/08/1987

शुक्र - शुक्र	
04/08/1987	
24/10/1989	
शुक्र	17/12/1987
सूर्य	27/01/1988
चंद्र	04/04/1988
मंगल	21/05/1988
राहु	20/09/1988
गुरु	06/01/1989
शनि	14/05/1989
बुध	06/09/1989
केतु	24/10/1989

शुक्र - सूर्य	
24/10/1989	
24/06/1990	
सूर्य	05/11/1989
चंद्र	25/11/1989
मंगल	09/12/1989
राहु	15/01/1990
गुरु	16/02/1990
शनि	27/03/1990
बुध	30/04/1990
केतु	15/05/1990
शुक्र	24/06/1990

शुक्र - चंद्र	
24/06/1990	
04/08/1991	
चंद्र	28/07/1990
मंगल	21/08/1990
राहु	21/10/1990
गुरु	14/12/1990
शनि	16/02/1991
बुध	14/04/1991
केतु	08/05/1991
शुक्र	15/07/1991
सूर्य	04/08/1991

शुक्र - मंगल	
04/08/1991	
14/05/1992	
मंगल	21/08/1991
राहु	02/10/1991
गुरु	09/11/1991
शनि	24/12/1991
बुध	02/02/1992
केतु	19/02/1992
शुक्र	06/04/1992
सूर्य	20/04/1992
चंद्र	14/05/1992

शुक्र - राहु	
14/05/1992	
15/05/1994	
राहु	01/09/1992
गुरु	07/12/1992
शनि	02/04/1993
बुध	14/07/1993
केतु	26/08/1993
शुक्र	26/12/1993
सूर्य	31/01/1994
चंद्र	02/04/1994
मंगल	15/05/1994

शुक्र - गुरु	
15/05/1994	
23/02/1996	
गुरु	09/08/1994
शनि	20/11/1994
बुध	20/02/1995
केतु	30/03/1995
शुक्र	16/07/1995
सूर्य	18/08/1995
चंद्र	11/10/1995
मंगल	18/11/1995
राहु	23/02/1996

शुक्र - शनि	
23/02/1996	
04/04/1998	
शनि	24/06/1996
बुध	11/10/1996
केतु	25/11/1996
शुक्र	03/04/1997
सूर्य	11/05/1997
चंद्र	15/07/1997
मंगल	29/08/1997
राहु	22/12/1997
गुरु	04/04/1998

शुक्र - बुध	
04/04/1998	
23/02/2000	
बुध	11/07/1998
केतु	20/08/1998
शुक्र	13/12/1998
सूर्य	17/01/1999
चंद्र	15/03/1999
मंगल	24/04/1999
राहु	06/08/1999
गुरु	06/11/1999
शनि	23/02/2000

शुक्र - केतु	
23/02/2000	
03/12/2000	
केतु	11/03/2000
शुक्र	27/04/2000
सूर्य	11/05/2000
चंद्र	04/06/2000
मंगल	20/06/2000
राहु	02/08/2000
गुरु	09/09/2000
शनि	24/10/2000
बुध	03/12/2000

सूर्य - सूर्य	
03/12/2000	
14/02/2001	
सूर्य	07/12/2000
चंद्र	13/12/2000
मंगल	17/12/2000
राहु	28/12/2000
गुरु	07/01/2001
शनि	18/01/2001
बुध	29/01/2001
केतु	02/02/2001
शुक्र	14/02/2001

सूर्य - चंद्र	
14/02/2001	
16/06/2001	
चंद्र	24/02/2001
मंगल	03/03/2001
राहु	22/03/2001
गुरु	07/04/2001
शनि	26/04/2001
बुध	13/05/2001
केतु	21/05/2001
शुक्र	10/06/2001
सूर्य	16/06/2001

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल	
16/06/2001	
09/09/2001	
मंगल	21/06/2001
राहु	04/07/2001
गुरु	15/07/2001
शनि	28/07/2001
बुध	10/08/2001
केतु	15/08/2001
शुक्र	29/08/2001
सूर्य	02/09/2001
चंद्र	09/09/2001

सूर्य - राहु	
09/09/2001	
16/04/2002	
राहु	12/10/2001
गुरु	10/11/2001
शनि	15/12/2001
बुध	15/01/2002
केतु	28/01/2002
शुक्र	05/03/2002
सूर्य	16/03/2002
चंद्र	03/04/2002
मंगल	16/04/2002

सूर्य - गुरु	
16/04/2002	
28/10/2002	
गुरु	12/05/2002
शनि	12/06/2002
बुध	10/07/2002
केतु	21/07/2002
शुक्र	22/08/2002
सूर्य	01/09/2002
चंद्र	17/09/2002
मंगल	29/09/2002
राहु	28/10/2002

सूर्य - शनि	
28/10/2002	
16/06/2003	
शनि	04/12/2002
बुध	05/01/2003
केतु	19/01/2003
शुक्र	27/02/2003
सूर्य	10/03/2003
चंद्र	29/03/2003
मंगल	12/04/2003
राहु	17/05/2003
गुरु	16/06/2003

सूर्य - बुध	
16/06/2003	
09/01/2004	
बुध	16/07/2003
केतु	28/07/2003
शुक्र	31/08/2003
सूर्य	11/09/2003
चंद्र	28/09/2003
मंगल	10/10/2003
राहु	10/11/2003
गुरु	08/12/2003
शनि	09/01/2004

सूर्य - केतु	
09/01/2004	
04/04/2004	
केतु	14/01/2004
शुक्र	29/01/2004
सूर्य	02/02/2004
चंद्र	09/02/2004
मंगल	14/02/2004
राहु	27/02/2004
गुरु	09/03/2004
शनि	23/03/2004
बुध	04/04/2004

सूर्य - शुक्र	
04/04/2004	
03/12/2004	
शुक्र	14/05/2004
सूर्य	26/05/2004
चंद्र	16/06/2004
मंगल	30/06/2004
राहु	05/08/2004
गुरु	07/09/2004
शनि	15/10/2004
बुध	19/11/2004
केतु	03/12/2004

चंद्र - चंद्र	
03/12/2004	
24/06/2005	
चंद्र	20/12/2004
मंगल	01/01/2005
राहु	31/01/2005
गुरु	27/02/2005
शनि	31/03/2005
बुध	29/04/2005
केतु	11/05/2005
शुक्र	14/06/2005
सूर्य	24/06/2005

चंद्र - मंगल	
24/06/2005	
13/11/2005	
मंगल	02/07/2005
राहु	24/07/2005
गुरु	12/08/2005
शनि	03/09/2005
बुध	23/09/2005
केतु	01/10/2005
शुक्र	25/10/2005
सूर्य	01/11/2005
चंद्र	13/11/2005

चंद्र - राहु	
13/11/2005	
13/11/2006	
राहु	07/01/2006
गुरु	25/02/2006
शनि	23/04/2006
बुध	14/06/2006
केतु	05/07/2006
शुक्र	04/09/2006
सूर्य	23/09/2006
चंद्र	23/10/2006
मंगल	13/11/2006

चंद्र - गुरु	
13/11/2006	
04/10/2007	
गुरु	27/12/2006
शनि	16/02/2007
बुध	03/04/2007
केतु	22/04/2007
शुक्र	15/06/2007
सूर्य	01/07/2007
चंद्र	28/07/2007
मंगल	16/08/2007
राहु	04/10/2007

चंद्र - शनि	
04/10/2007	
23/10/2008	
शनि	04/12/2007
बुध	28/01/2008
केतु	19/02/2008
शुक्र	23/04/2008
सूर्य	13/05/2008
चंद्र	14/06/2008
मंगल	06/07/2008
राहु	02/09/2008
गुरु	23/10/2008

चंद्र - बुध	
23/10/2008	
03/10/2009	
बुध	11/12/2008
केतु	31/12/2008
शुक्र	27/02/2009
सूर्य	16/03/2009
चंद्र	14/04/2009
मंगल	04/05/2009
राहु	25/06/2009
गुरु	10/08/2009
शनि	03/10/2009

चंद्र - केतु	
03/10/2009	
22/02/2010	
केतु	12/10/2009
शुक्र	04/11/2009
सूर्य	12/11/2009
चंद्र	23/11/2009
मंगल	02/12/2009
राहु	23/12/2009
गुरु	11/01/2010
शनि	02/02/2010
बुध	22/02/2010

चंद्र - शुक्र	
22/02/2010	
04/04/2011	
शुक्र	01/05/2010
सूर्य	21/05/2010
चंद्र	24/06/2010
मंगल	18/07/2010
राहु	17/09/2010
गुरु	10/11/2010
शनि	13/01/2011
बुध	12/03/2011
केतु	04/04/2011

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य	
04/04/2011	
04/08/2011	
सूर्य	10/04/2011
चंद्र	21/04/2011
मंगल	28/04/2011
राहु	16/05/2011
गुरु	01/06/2011
शनि	20/06/2011
बुध	08/07/2011
केतु	15/07/2011
शुक्र	04/08/2011

मंगल - मंगल	
04/08/2011	
12/11/2011	
मंगल	10/08/2011
राहु	25/08/2011
गुरु	07/09/2011
शनि	23/09/2011
बुध	07/10/2011
केतु	13/10/2011
शुक्र	29/10/2011
सूर्य	03/11/2011
चंद्र	12/11/2011

मंगल - राहु	
12/11/2011	
24/07/2012	
राहु	20/12/2011
गुरु	23/01/2012
शनि	03/03/2012
बुध	09/04/2012
केतु	24/04/2012
शुक्र	05/06/2012
सूर्य	18/06/2012
चंद्र	09/07/2012
मंगल	24/07/2012

मंगल - गुरु	
24/07/2012	
08/03/2013	
गुरु	23/08/2012
शनि	28/09/2012
बुध	31/10/2012
केतु	13/11/2012
शुक्र	21/12/2012
सूर्य	01/01/2013
चंद्र	20/01/2013
मंगल	02/02/2013
राहु	08/03/2013

मंगल - शनि	
08/03/2013	
03/12/2013	
शनि	20/04/2013
बुध	28/05/2013
केतु	13/06/2013
शुक्र	28/07/2013
सूर्य	11/08/2013
चंद्र	02/09/2013
मंगल	18/09/2013
राहु	28/10/2013
गुरु	03/12/2013

मंगल - बुध	
03/12/2013	
02/08/2014	
बुध	07/01/2014
केतु	21/01/2014
शुक्र	02/03/2014
सूर्य	14/03/2014
चंद्र	03/04/2014
मंगल	17/04/2014
राहु	23/05/2014
गुरु	25/06/2014
शनि	02/08/2014

मंगल - केतु	
02/08/2014	
09/11/2014	
केतु	08/08/2014
शुक्र	24/08/2014
सूर्य	29/08/2014
चंद्र	06/09/2014
मंगल	12/09/2014
राहु	27/09/2014
गुरु	10/10/2014
शनि	26/10/2014
बुध	09/11/2014

मंगल - शुक्र	
09/11/2014	
20/08/2015	
शुक्र	27/12/2014
सूर्य	10/01/2015
चंद्र	02/02/2015
मंगल	19/02/2015
राहु	03/04/2015
गुरु	11/05/2015
शनि	24/06/2015
बुध	04/08/2015
केतु	20/08/2015

मंगल - सूर्य	
20/08/2015	
14/11/2015	
सूर्य	25/08/2015
चंद्र	01/09/2015
मंगल	06/09/2015
राहु	18/09/2015
गुरु	30/09/2015
शनि	13/10/2015
बुध	25/10/2015
केतु	30/10/2015
शुक्र	14/11/2015

मंगल - चंद्र	
14/11/2015	
04/04/2016	
चंद्र	25/11/2015
मंगल	04/12/2015
राहु	25/12/2015
गुरु	13/01/2016
शनि	04/02/2016
बुध	25/02/2016
केतु	04/03/2016
शुक्र	27/03/2016
सूर्य	04/04/2016

राहु - राहु	
04/04/2016	
21/01/2018	
राहु	11/07/2016
गुरु	07/10/2016
शनि	19/01/2017
बुध	22/04/2017
केतु	30/05/2017
शुक्र	17/09/2017
सूर्य	20/10/2017
चंद्र	14/12/2017
मंगल	21/01/2018

राहु - गुरु	
21/01/2018	
28/08/2019	
गुरु	09/04/2018
शनि	10/07/2018
बुध	01/10/2018
केतु	04/11/2018
शुक्र	10/02/2019
सूर्य	11/03/2019
चंद्र	29/04/2019
मंगल	02/06/2019
राहु	28/08/2019

राहु - शनि	
28/08/2019	
22/07/2021	
शनि	16/12/2019
बुध	24/03/2020
केतु	03/05/2020
शुक्र	27/08/2020
सूर्य	30/09/2020
चंद्र	27/11/2020
मंगल	07/01/2021
राहु	21/04/2021
गुरु	22/07/2021

राहु - बुध	
22/07/2021	
04/04/2023	
बुध	18/10/2021
केतु	24/11/2021
शुक्र	07/03/2022
सूर्य	07/04/2022
चंद्र	29/05/2022
मंगल	04/07/2022
राहु	05/10/2022
गुरु	27/12/2022
शनि	04/04/2023

राहु - केतु	
04/04/2023	
16/12/2023	
केतु	19/04/2023
शुक्र	01/06/2023
सूर्य	14/06/2023
चंद्र	05/07/2023
मंगल	20/07/2023
राहु	27/08/2023
गुरु	30/09/2023
शनि	10/11/2023
बुध	16/12/2023

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र	
16/12/2023	
16/12/2025	
शुक्र	16/04/2024
सूर्य	22/05/2024
चंद्र	22/07/2024
मंगल	03/09/2024
राहु	21/12/2024
गुरु	29/03/2025
शनि	22/07/2025
बुध	03/11/2025
केतु	16/12/2025

राहु - सूर्य	
16/12/2025	
23/07/2026	
सूर्य	26/12/2025
चंद्र	14/01/2026
मंगल	27/01/2026
राहु	28/02/2026
गुरु	30/03/2026
शनि	03/05/2026
बुध	03/06/2026
केतु	16/06/2026
शुक्र	23/07/2026

राहु - चंद्र	
23/07/2026	
23/07/2027	
चंद्र	22/08/2026
मंगल	12/09/2026
राहु	06/11/2026
गुरु	25/12/2026
शनि	21/02/2027
बुध	13/04/2027
केतु	05/05/2027
शुक्र	05/07/2027
सूर्य	23/07/2027

राहु - मंगल	
23/07/2027	
04/04/2028	
मंगल	07/08/2027
राहु	14/09/2027
गुरु	18/10/2027
शनि	28/11/2027
बुध	03/01/2028
केतु	18/01/2028
शुक्र	29/02/2028
सूर्य	13/03/2028
चंद्र	04/04/2028

गुरु - गुरु	
04/04/2028	
05/09/2029	
गुरु	12/06/2028
शनि	02/09/2028
बुध	15/11/2028
केतु	15/12/2028
शुक्र	12/03/2029
सूर्य	07/04/2029
चंद्र	20/05/2029
मंगल	19/06/2029
राहु	05/09/2029

गुरु - शनि	
05/09/2029	
15/05/2031	
शनि	12/12/2029
बुध	09/03/2030
केतु	14/04/2030
शुक्र	26/07/2030
सूर्य	26/08/2030
चंद्र	16/10/2030
मंगल	21/11/2030
राहु	22/02/2031
गुरु	15/05/2031

गुरु - बुध	
15/05/2031	
17/11/2032	
बुध	01/08/2031
केतु	02/09/2031
शुक्र	03/12/2031
सूर्य	31/12/2031
चंद्र	15/02/2032
मंगल	18/03/2032
राहु	09/06/2032
गुरु	21/08/2032
शनि	17/11/2032

गुरु - केतु	
17/11/2032	
02/07/2033	
केतु	30/11/2032
शुक्र	07/01/2033
सूर्य	18/01/2033
चंद्र	06/02/2033
मंगल	20/02/2033
राहु	26/03/2033
गुरु	25/04/2033
शनि	31/05/2033
बुध	02/07/2033

गुरु - शुक्र	
02/07/2033	
12/04/2035	
शुक्र	18/10/2033
सूर्य	20/11/2033
चंद्र	13/01/2034
मंगल	20/02/2034
राहु	28/05/2034
गुरु	23/08/2034
शनि	04/12/2034
बुध	06/03/2035
केतु	12/04/2035

गुरु - सूर्य	
12/04/2035	
24/10/2035	
सूर्य	22/04/2035
चंद्र	08/05/2035
मंगल	20/05/2035
राहु	18/06/2035
गुरु	14/07/2035
शनि	14/08/2035
बुध	10/09/2035
केतु	22/09/2035
शुक्र	24/10/2035

गुरु - चंद्र	
24/10/2035	
13/09/2036	
चंद्र	20/11/2035
मंगल	09/12/2035
राहु	27/01/2036
गुरु	10/03/2036
शनि	01/05/2036
बुध	16/06/2036
केतु	05/07/2036
शुक्र	28/08/2036
सूर्य	13/09/2036

गुरु - मंगल	
13/09/2036	
28/04/2037	
मंगल	26/09/2036
राहु	30/10/2036
गुरु	30/11/2036
शनि	05/01/2037
बुध	06/02/2037
केतु	19/02/2037
शुक्र	29/03/2037
सूर्य	09/04/2037
चंद्र	28/04/2037

गुरु - राहु	
28/04/2037	
04/12/2038	
राहु	25/07/2037
गुरु	11/10/2037
शनि	11/01/2038
बुध	04/04/2038
केतु	08/05/2038
शुक्र	14/08/2038
सूर्य	12/09/2038
चंद्र	30/10/2038
मंगल	04/12/2038

शनि - शनि	
04/12/2038	
05/12/2040	
शनि	30/03/2039
बुध	11/07/2039
केतु	23/08/2039
शुक्र	23/12/2039
सूर्य	29/01/2040
चंद्र	30/03/2040
मंगल	12/05/2040
राहु	29/08/2040
गुरु	05/12/2040

शनि - बुध	
05/12/2040	
22/09/2042	
बुध	08/03/2041
केतु	15/04/2041
शुक्र	02/08/2041
सूर्य	04/09/2041
चंद्र	29/10/2041
मंगल	06/12/2041
राहु	14/03/2042
गुरु	10/06/2042
शनि	22/09/2042

Ranjit

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु	
22/09/2042	
18/06/2043	
केतु	07/10/2042
शुक्र	21/11/2042
सूर्य	05/12/2042
चंद्र	27/12/2042
मंगल	12/01/2043
राहु	21/02/2043
गुरु	29/03/2043
शनि	11/05/2043
बुध	18/06/2043

शनि - शुक्र	
18/06/2043	
28/07/2045	
शुक्र	25/10/2043
सूर्य	02/12/2043
चंद्र	05/02/2044
मंगल	21/03/2044
राहु	14/07/2044
गुरु	25/10/2044
शनि	24/02/2045
बुध	14/06/2045
केतु	28/07/2045

शनि - सूर्य	
28/07/2045	
17/03/2046	
सूर्य	09/08/2045
चंद्र	28/08/2045
मंगल	11/09/2045
राहु	16/10/2045
गुरु	15/11/2045
शनि	22/12/2045
बुध	24/01/2046
केतु	06/02/2046
शुक्र	17/03/2046

शनि - चंद्र	
17/03/2046	
06/04/2047	
चंद्र	18/04/2046
मंगल	10/05/2046
राहु	07/07/2046
गुरु	28/08/2046
शनि	28/10/2046
बुध	21/12/2046
केतु	13/01/2047
शुक्र	18/03/2047
सूर्य	06/04/2047

शनि - मंगल	
06/04/2047	
01/01/2048	
मंगल	22/04/2047
राहु	02/06/2047
गुरु	08/07/2047
शनि	19/08/2047
बुध	27/09/2047
केतु	12/10/2047
शुक्र	26/11/2047
सूर्य	10/12/2047
चंद्र	01/01/2048

शनि - राहु	
01/01/2048	
25/11/2049	
राहु	14/04/2048
गुरु	16/07/2048
शनि	03/11/2048
बुध	09/02/2049
केतु	22/03/2049
शुक्र	15/07/2049
सूर्य	19/08/2049
चंद्र	16/10/2049
मंगल	25/11/2049

शनि - गुरु	
25/11/2049	
04/08/2051	
गुरु	15/02/2050
शनि	24/05/2050
बुध	20/08/2050
केतु	25/09/2050
शुक्र	05/01/2051
सूर्य	05/02/2051
चंद्र	29/03/2051
मंगल	04/05/2051
राहु	04/08/2051

बुध - बुध	
04/08/2051	
13/03/2053	
बुध	26/10/2051
केतु	29/11/2051
शुक्र	06/03/2052
सूर्य	04/04/2052
चंद्र	23/05/2052
मंगल	27/06/2052
राहु	22/09/2052
गुरु	10/12/2052
शनि	13/03/2053

बुध - केतु	
13/03/2053	
09/11/2053	
केतु	27/03/2053
शुक्र	06/05/2053
सूर्य	18/05/2053
चंद्र	07/06/2053
मंगल	21/06/2053
राहु	27/07/2053
गुरु	29/08/2053
शनि	06/10/2053
बुध	09/11/2053

बुध - शुक्र	
09/11/2053	
30/09/2055	
शुक्र	04/03/2054
सूर्य	07/04/2054
चंद्र	04/06/2054
मंगल	14/07/2054
राहु	26/10/2054
गुरु	26/01/2055
शनि	15/05/2055
बुध	21/08/2055
केतु	30/09/2055

बुध - सूर्य	
30/09/2055	
24/04/2056	
सूर्य	10/10/2055
चंद्र	27/10/2055
मंगल	09/11/2055
राहु	10/12/2055
गुरु	06/01/2056
शनि	08/02/2056
बुध	08/03/2056
केतु	20/03/2056
शुक्र	24/04/2056

बुध - चंद्र	
24/04/2056	
04/04/2057	
चंद्र	23/05/2056
मंगल	12/06/2056
राहु	02/08/2056
गुरु	17/09/2056
शनि	11/11/2056
बुध	30/12/2056
केतु	19/01/2057
शुक्र	18/03/2057
सूर्य	04/04/2057

बुध - मंगल	
04/04/2057	
01/12/2057	
मंगल	18/04/2057
राहु	24/05/2057
गुरु	25/06/2057
शनि	03/08/2057
बुध	06/09/2057
केतु	20/09/2057
शुक्र	30/10/2057
सूर्य	11/11/2057
चंद्र	01/12/2057

बुध - राहु	
01/12/2057	
14/08/2059	
राहु	04/03/2058
गुरु	26/05/2058
शनि	02/09/2058
बुध	29/11/2058
केतु	04/01/2059
शुक्र	17/04/2059
सूर्य	18/05/2059
चंद्र	09/07/2059
मंगल	14/08/2059

बुध - गुरु	
14/08/2059	
16/02/2061	
गुरु	27/10/2059
शनि	22/01/2060
बुध	09/04/2060
केतु	12/05/2060
शुक्र	12/08/2060
सूर्य	08/09/2060
चंद्र	24/10/2060
मंगल	25/11/2060
राहु	16/02/2061

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 1 मास 9 दिन

बुध 17 वर्ष	
10/04/1985	
21/05/1987	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
चंद्र	15/02/1986
मंगल	21/05/1987

शनि 10 वर्ष	
21/05/1987	
20/05/1997	
शनि	23/04/1988
गुरु	25/01/1990
राहु	07/03/1991
शुक्र	14/02/1993
सूर्य	05/09/1993
चंद्र	26/01/1995
मंगल	23/10/1995
बुध	20/05/1997

गुरु 19 वर्ष	
20/05/1997	
20/05/2016	
गुरु	22/09/2000
राहु	02/11/2002
शुक्र	13/07/2006
सूर्य	03/08/2007
चंद्र	24/03/2010
मंगल	20/08/2011
बुध	16/08/2014
शनि	20/05/2016

राहु 12 वर्ष	
20/05/2016	
20/05/2028	
राहु	19/09/2017
शुक्र	19/01/2020
सूर्य	19/09/2020
चंद्र	20/05/2022
मंगल	10/04/2023
बुध	28/02/2025
शनि	10/04/2026
गुरु	20/05/2028

शुक्र 21 वर्ष	
20/05/2028	
20/05/2049	
शुक्र	19/06/2032
सूर्य	19/08/2033
चंद्र	20/07/2036
मंगल	08/02/2038
बुध	30/05/2041
शनि	10/05/2043
गुरु	19/01/2047
राहु	20/05/2049

सूर्य 6 वर्ष	
20/05/2049	
21/05/2055	
सूर्य	19/09/2049
चंद्र	20/07/2050
मंगल	30/12/2050
बुध	09/12/2051
शनि	29/06/2052
गुरु	20/07/2053
राहु	20/03/2054
शुक्र	21/05/2055

चंद्र 15 वर्ष	
21/05/2055	
20/05/2070	
चंद्र	20/06/2057
मंगल	30/07/2058
बुध	09/12/2060
शनि	30/04/2062
गुरु	19/12/2064
राहु	20/08/2066
शुक्र	20/07/2069
सूर्य	20/05/2070

मंगल 8 वर्ष	
20/05/2070	
20/05/2078	
मंगल	23/12/2070
बुध	27/03/2072
शनि	22/12/2072
गुरु	20/05/2074
राहु	10/04/2075
शुक्र	29/10/2076
सूर्य	09/04/2077
चंद्र	20/05/2078

बुध 17 वर्ष	
20/05/2078	
00/00/0000	
बुध	22/01/2081
शनि	20/08/2082
गुरु	16/08/2085
राहु	07/07/2087
शुक्र	26/10/2090
सूर्य	06/10/2091
चंद्र	10/04/2093
	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Ranjit

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र	
10/04/1985	
15/02/1986	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/04/1985
राहु	14/07/1985
शुक्र	29/12/1985
सूर्य	15/02/1986

बुध - मंगल	
15/02/1986	
21/05/1987	
मंगल	21/03/1986
बुध	01/06/1986
शनि	14/07/1986
गुरु	03/10/1986
राहु	23/11/1986
शुक्र	20/02/1987
सूर्य	18/03/1987
चंद्र	21/05/1987

शनि - शनि	
21/05/1987	
23/04/1988	
शनि	21/06/1987
गुरु	19/08/1987
राहु	26/09/1987
शुक्र	01/12/1987
सूर्य	20/12/1987
चंद्र	04/02/1988
मंगल	01/03/1988
बुध	23/04/1988

शनि - गुरु	
23/04/1988	
25/01/1990	
गुरु	14/08/1988
राहु	24/10/1988
शुक्र	26/02/1989
सूर्य	03/04/1989
चंद्र	01/07/1989
मंगल	18/08/1989
बुध	27/11/1989
शनि	25/01/1990

शनि - राहु	
25/01/1990	
07/03/1991	
राहु	11/03/1990
शुक्र	29/05/1990
सूर्य	21/06/1990
चंद्र	16/08/1990
मंगल	15/09/1990
बुध	18/11/1990
शनि	26/12/1990
गुरु	07/03/1991

शनि - शुक्र	
07/03/1991	
14/02/1993	
शुक्र	23/07/1991
सूर्य	01/09/1991
चंद्र	08/12/1991
मंगल	30/01/1992
बुध	21/05/1992
शनि	26/07/1992
गुरु	27/11/1992
राहु	14/02/1993

शनि - सूर्य	
14/02/1993	
05/09/1993	
सूर्य	26/02/1993
चंद्र	26/03/1993
मंगल	10/04/1993
बुध	12/05/1993
शनि	31/05/1993
गुरु	05/07/1993
राहु	28/07/1993
शुक्र	05/09/1993

शनि - चंद्र	
05/09/1993	
26/01/1995	
चंद्र	15/11/1993
मंगल	22/12/1993
बुध	12/03/1994
शनि	28/04/1994
गुरु	26/07/1994
राहु	21/09/1994
शुक्र	28/12/1994
सूर्य	26/01/1995

शनि - मंगल	
26/01/1995	
23/10/1995	
मंगल	15/02/1995
बुध	29/03/1995
शनि	23/04/1995
गुरु	10/06/1995
राहु	10/07/1995
शुक्र	01/09/1995
सूर्य	16/09/1995
चंद्र	23/10/1995

शनि - बुध	
23/10/1995	
20/05/1997	
बुध	22/01/1996
शनि	15/03/1996
गुरु	24/06/1996
राहु	27/08/1996
शुक्र	17/12/1996
सूर्य	18/01/1997
चंद्र	07/04/1997
मंगल	20/05/1997

गुरु - गुरु	
20/05/1997	
22/09/2000	
गुरु	21/12/1997
राहु	06/05/1998
शुक्र	29/12/1998
सूर्य	07/03/1999
चंद्र	23/08/1999
मंगल	22/11/1999
बुध	01/06/2000
शनि	22/09/2000

गुरु - राहु	
22/09/2000	
02/11/2002	
राहु	17/12/2000
शुक्र	16/05/2001
सूर्य	27/06/2001
चंद्र	12/10/2001
मंगल	09/12/2001
बुध	09/04/2002
शनि	19/06/2002
गुरु	02/11/2002

गुरु - शुक्र	
02/11/2002	
13/07/2006	
शुक्र	22/07/2003
सूर्य	05/10/2003
चंद्र	10/04/2004
मंगल	19/07/2004
बुध	16/02/2005
शनि	21/06/2005
गुरु	13/02/2006
राहु	13/07/2006

गुरु - सूर्य	
13/07/2006	
03/08/2007	
सूर्य	04/08/2006
चंद्र	26/09/2006
मंगल	25/10/2006
बुध	25/12/2006
शनि	29/01/2007
गुरु	07/04/2007
राहु	20/05/2007
शुक्र	03/08/2007

गुरु - चंद्र	
03/08/2007	
24/03/2010	
चंद्र	15/12/2007
मंगल	24/02/2008
बुध	25/07/2008
शनि	22/10/2008
गुरु	10/04/2009
राहु	26/07/2009
शुक्र	29/01/2010
सूर्य	24/03/2010

Ranjit

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल	
24/03/2010	
20/08/2011	
मंगल	01/05/2010
बुध	21/07/2010
शनि	06/09/2010
गुरु	06/12/2010
राहु	01/02/2011
शुक्र	12/05/2011
सूर्य	09/06/2011
चंद्र	20/08/2011

गुरु - बुध	
20/08/2011	
16/08/2014	
बुध	08/02/2012
शनि	19/05/2012
गुरु	27/11/2012
राहु	29/03/2013
शुक्र	27/10/2013
सूर्य	27/12/2013
चंद्र	27/05/2014
मंगल	16/08/2014

गुरु - शनि	
16/08/2014	
20/05/2016	
शनि	15/10/2014
गुरु	05/02/2015
राहु	17/04/2015
शुक्र	20/08/2015
सूर्य	25/09/2015
चंद्र	23/12/2015
मंगल	09/02/2016
बुध	20/05/2016

राहु - राहु	
20/05/2016	
19/09/2017	
राहु	13/07/2016
शुक्र	16/10/2016
सूर्य	12/11/2016
चंद्र	18/01/2017
मंगल	23/02/2017
बुध	11/05/2017
शनि	25/06/2017
गुरु	19/09/2017

राहु - शुक्र	
19/09/2017	
19/01/2020	
शुक्र	04/03/2018
सूर्य	20/04/2018
चंद्र	16/08/2018
मंगल	18/10/2018
बुध	02/03/2019
शनि	19/05/2019
गुरु	16/10/2019
राहु	19/01/2020

राहु - सूर्य	
19/01/2020	
19/09/2020	
सूर्य	02/02/2020
चंद्र	06/03/2020
मंगल	24/03/2020
बुध	02/05/2020
शनि	24/05/2020
गुरु	06/07/2020
राहु	02/08/2020
शुक्र	19/09/2020

राहु - चंद्र	
19/09/2020	
20/05/2022	
चंद्र	12/12/2020
मंगल	26/01/2021
बुध	02/05/2021
शनि	27/06/2021
गुरु	12/10/2021
राहु	19/12/2021
शुक्र	16/04/2022
सूर्य	20/05/2022

राहु - मंगल	
20/05/2022	
10/04/2023	
मंगल	13/06/2022
बुध	03/08/2022
शनि	03/09/2022
गुरु	30/10/2022
राहु	05/12/2022
शुक्र	06/02/2023
सूर्य	24/02/2023
चंद्र	10/04/2023

राहु - बुध	
10/04/2023	
28/02/2025	
बुध	28/07/2023
शनि	29/09/2023
गुरु	29/01/2024
राहु	14/04/2024
शुक्र	27/08/2024
सूर्य	04/10/2024
चंद्र	08/01/2025
मंगल	28/02/2025

राहु - शनि	
28/02/2025	
10/04/2026	
शनि	06/04/2025
गुरु	17/06/2025
राहु	01/08/2025
शुक्र	19/10/2025
सूर्य	10/11/2025
चंद्र	06/01/2026
मंगल	05/02/2026
बुध	10/04/2026

राहु - गुरु	
10/04/2026	
20/05/2028	
गुरु	23/08/2026
राहु	17/11/2026
शुक्र	16/04/2027
सूर्य	29/05/2027
चंद्र	13/09/2027
मंगल	09/11/2027
बुध	09/03/2028
शनि	20/05/2028

शुक्र - शुक्र	
20/05/2028	
19/06/2032	
शुक्र	06/03/2029
सूर्य	28/05/2029
चंद्र	21/12/2029
मंगल	10/04/2030
बुध	01/12/2030
शनि	18/04/2031
गुरु	06/01/2032
राहु	19/06/2032

शुक्र - सूर्य	
19/06/2032	
19/08/2033	
सूर्य	13/07/2032
चंद्र	10/09/2032
मंगल	12/10/2032
बुध	18/12/2032
शनि	26/01/2033
गुरु	11/04/2033
राहु	29/05/2033
शुक्र	19/08/2033

शुक्र - चंद्र	
19/08/2033	
20/07/2036	
चंद्र	14/01/2034
मंगल	03/04/2034
बुध	18/09/2034
शनि	26/12/2034
गुरु	01/07/2035
राहु	27/10/2035
शुक्र	22/05/2036
सूर्य	20/07/2036

शुक्र - मंगल	
20/07/2036	
08/02/2038	
मंगल	31/08/2036
बुध	28/11/2036
शनि	20/01/2037
गुरु	30/04/2037
राहु	02/07/2037
शुक्र	20/10/2037
सूर्य	21/11/2037
चंद्र	08/02/2038

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध	
08/02/2038	30/05/2041
बुध	17/08/2038
शनि	07/12/2038
गुरु	07/07/2039
राहु	18/11/2039
शुक्र	10/07/2040
सूर्य	15/09/2040
चंद्र	02/03/2041
मंगल	30/05/2041

शुक्र - शनि	
30/05/2041	10/05/2043
शनि	04/08/2041
गुरु	07/12/2041
राहु	24/02/2042
शुक्र	12/07/2042
सूर्य	20/08/2042
चंद्र	27/11/2042
मंगल	19/01/2043
बुध	10/05/2043

शुक्र - गुरु	
10/05/2043	19/01/2047
गुरु	03/01/2044
राहु	01/06/2044
शुक्र	18/02/2045
सूर्य	04/05/2045
चंद्र	08/11/2045
मंगल	15/02/2046
बुध	16/09/2046
शनि	19/01/2047

शुक्र - राहु	
19/01/2047	20/05/2049
राहु	24/04/2047
शुक्र	06/10/2047
सूर्य	23/11/2047
चंद्र	20/03/2048
मंगल	22/05/2048
बुध	03/10/2048
शनि	21/12/2048
गुरु	20/05/2049

सूर्य - सूर्य	
20/05/2049	19/09/2049
सूर्य	27/05/2049
चंद्र	13/06/2049
मंगल	22/06/2049
बुध	11/07/2049
शनि	22/07/2049
गुरु	13/08/2049
राहु	26/08/2049
शुक्र	19/09/2049

सूर्य - चंद्र	
19/09/2049	20/07/2050
चंद्र	31/10/2049
मंगल	23/11/2049
बुध	10/01/2050
शनि	07/02/2050
गुरु	01/04/2050
राहु	05/05/2050
शुक्र	03/07/2050
सूर्य	20/07/2050

सूर्य - मंगल	
20/07/2050	30/12/2050
मंगल	01/08/2050
बुध	27/08/2050
शनि	11/09/2050
गुरु	09/10/2050
राहु	27/10/2050
शुक्र	28/11/2050
सूर्य	07/12/2050
चंद्र	30/12/2050

सूर्य - बुध	
30/12/2050	09/12/2051
बुध	22/02/2051
शनि	26/03/2051
गुरु	25/05/2051
राहु	03/07/2051
शुक्र	08/09/2051
सूर्य	27/09/2051
चंद्र	14/11/2051
मंगल	09/12/2051

सूर्य - शनि	
09/12/2051	29/06/2052
शनि	28/12/2051
गुरु	02/02/2052
राहु	25/02/2052
शुक्र	04/04/2052
सूर्य	15/04/2052
चंद्र	13/05/2052
मंगल	28/05/2052
बुध	29/06/2052

सूर्य - गुरु	
29/06/2052	20/07/2053
गुरु	05/09/2052
राहु	18/10/2052
शुक्र	01/01/2053
सूर्य	22/01/2053
चंद्र	17/03/2053
मंगल	15/04/2053
बुध	14/06/2053
शनि	20/07/2053

सूर्य - राहु	
20/07/2053	20/03/2054
राहु	16/08/2053
शुक्र	02/10/2053
सूर्य	16/10/2053
चंद्र	19/11/2053
मंगल	07/12/2053
बुध	14/01/2054
शनि	06/02/2054
गुरु	20/03/2054

सूर्य - शुक्र	
20/03/2054	21/05/2055
शुक्र	11/06/2054
सूर्य	05/07/2054
चंद्र	02/09/2054
मंगल	04/10/2054
बुध	10/12/2054
शनि	18/01/2055
गुरु	03/04/2055
राहु	21/05/2055

चंद्र - चंद्र	
21/05/2055	20/06/2057
चंद्र	03/09/2055
मंगल	30/10/2055
बुध	26/02/2056
शनि	07/05/2056
गुरु	18/09/2056
राहु	11/12/2056
शुक्र	08/05/2057
सूर्य	20/06/2057

चंद्र - मंगल	
20/06/2057	30/07/2058
मंगल	20/07/2057
बुध	21/09/2057
शनि	29/10/2057
गुरु	08/01/2058
राहु	23/02/2058
शुक्र	12/05/2058
सूर्य	04/06/2058
चंद्र	30/07/2058

चंद्र - बुध	
30/07/2058	09/12/2060
बुध	13/12/2058
शनि	03/03/2059
गुरु	02/08/2059
राहु	05/11/2059
शुक्र	21/04/2060
सूर्य	08/06/2060
चंद्र	06/10/2060
मंगल	09/12/2060

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि	
09/12/2060	30/04/2062
शनि	25/01/2061
गुरु	24/04/2061
राहु	19/06/2061
शुक्र	26/09/2061
सूर्य	24/10/2061
चंद्र	03/01/2062
मंगल	09/02/2062
बुध	30/04/2062

चंद्र - गुरु	
30/04/2062	19/12/2064
गुरु	17/10/2062
राहु	01/02/2063
शुक्र	07/08/2063
सूर्य	30/09/2063
चंद्र	11/02/2064
मंगल	22/04/2064
बुध	21/09/2064
शनि	19/12/2064

चंद्र - राहु	
19/12/2064	20/08/2066
राहु	25/02/2065
शुक्र	23/06/2065
सूर्य	27/07/2065
चंद्र	19/10/2065
मंगल	03/12/2065
बुध	09/03/2066
शनि	05/05/2066
गुरु	20/08/2066

चंद्र - शुक्र	
20/08/2066	20/07/2069
शुक्र	15/03/2067
सूर्य	13/05/2067
चंद्र	08/10/2067
मंगल	26/12/2067
बुध	11/06/2068
शनि	17/09/2068
गुरु	24/03/2069
राहु	20/07/2069

चंद्र - सूर्य	
20/07/2069	20/05/2070
सूर्य	06/08/2069
चंद्र	17/09/2069
मंगल	10/10/2069
बुध	27/11/2069
शनि	25/12/2069
गुरु	16/02/2070
राहु	22/03/2070
शुक्र	20/05/2070

मंगल - मंगल	
20/05/2070	23/12/2070
मंगल	05/06/2070
बुध	09/07/2070
शनि	29/07/2070
गुरु	06/09/2070
राहु	30/09/2070
शुक्र	11/11/2070
सूर्य	23/11/2070
चंद्र	23/12/2070

मंगल - बुध	
23/12/2070	27/03/2072
बुध	05/03/2071
शनि	17/04/2071
गुरु	07/07/2071
राहु	27/08/2071
शुक्र	24/11/2071
सूर्य	20/12/2071
चंद्र	22/02/2072
मंगल	27/03/2072

मंगल - शनि	
27/03/2072	22/12/2072
शनि	21/04/2072
गुरु	07/06/2072
राहु	07/07/2072
शुक्र	29/08/2072
सूर्य	13/09/2072
चंद्र	21/10/2072
मंगल	10/11/2072
बुध	22/12/2072

मंगल - गुरु	
22/12/2072	20/05/2074
गुरु	23/03/2073
राहु	19/05/2073
शुक्र	27/08/2073
सूर्य	24/09/2073
चंद्र	05/12/2073
मंगल	12/01/2074
बुध	03/04/2074
शनि	20/05/2074

मंगल - राहु	
20/05/2074	10/04/2075
राहु	25/06/2074
शुक्र	28/08/2074
सूर्य	15/09/2074
चंद्र	30/10/2074
मंगल	23/11/2074
बुध	13/01/2075
शनि	12/02/2075
गुरु	10/04/2075

मंगल - शुक्र	
10/04/2075	29/10/2076
शुक्र	29/07/2075
सूर्य	30/08/2075
चंद्र	17/11/2075
मंगल	29/12/2075
बुध	27/03/2076
शनि	19/05/2076
गुरु	27/08/2076
राहु	29/10/2076

मंगल - सूर्य	
29/10/2076	09/04/2077
सूर्य	07/11/2076
चंद्र	30/11/2076
मंगल	12/12/2076
बुध	06/01/2077
शनि	21/01/2077
गुरु	19/02/2077
राहु	09/03/2077
शुक्र	09/04/2077

मंगल - चंद्र	
09/04/2077	20/05/2078
चंद्र	05/06/2077
मंगल	05/07/2077
बुध	07/09/2077
शनि	14/10/2077
गुरु	25/12/2077
राहु	08/02/2078
शुक्र	28/04/2078
सूर्य	20/05/2078

बुध - बुध	
20/05/2078	22/01/2081
बुध	21/10/2078
शनि	20/01/2079
गुरु	11/07/2079
राहु	27/10/2079
शुक्र	04/05/2080
सूर्य	28/06/2080
चंद्र	10/11/2080
मंगल	22/01/2081

बुध - शनि	
22/01/2081	20/08/2082
शनि	16/03/2081
गुरु	25/06/2081
राहु	28/08/2081
शुक्र	18/12/2081
सूर्य	19/01/2082
चंद्र	09/04/2082
मंगल	21/05/2082
बुध	20/08/2082

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 2 वर्ष 11 मास 22 दिन

उल्का 6 वर्ष	
10/04/1985	
02/04/1988	
	00/00/0000
	10/04/1985
संक	02/10/1985
मंग	01/12/1985
पिंग	02/04/1986
धांय	02/10/1986
भ्राम	02/06/1987
भद्रि	02/04/1988

सिद्धा 7 वर्ष	
02/04/1988	
02/04/1995	
सिद्ध	12/08/1989
संक	03/03/1991
मंग	13/05/1991
पिंग	02/10/1991
धांय	02/05/1992
भ्राम	10/02/1993
भद्रि	31/01/1994
उल्क	02/04/1995

संकटा 8 वर्ष	
02/04/1995	
02/04/2003	
संक	11/01/1997
मंग	02/04/1997
पिंग	11/09/1997
धांय	13/05/1998
भ्राम	02/04/1999
भद्रि	12/05/2000
उल्क	11/09/2001
सिद्ध	02/04/2003

मंगला 1 वर्ष	
02/04/2003	
02/04/2004	
मंग	13/04/2003
पिंग	03/05/2003
धांय	02/06/2003
भ्राम	13/07/2003
भद्रि	02/09/2003
उल्क	02/11/2003
सिद्ध	12/01/2004
संक	02/04/2004

पिंगला 2 वर्ष	
02/04/2004	
02/04/2006	
पिंग	12/05/2004
धांय	12/07/2004
भ्राम	01/10/2004
भद्रि	11/01/2005
उल्क	13/05/2005
सिद्ध	02/10/2005
संक	13/03/2006
मंग	02/04/2006

धान्या 3 वर्ष	
02/04/2006	
02/04/2009	
धांय	03/07/2006
भ्राम	01/11/2006
भद्रि	02/04/2007
उल्क	02/10/2007
सिद्ध	02/05/2008
संक	01/01/2009
मंग	31/01/2009
पिंग	02/04/2009

भ्रामरी 4 वर्ष	
02/04/2009	
02/04/2013	
भ्राम	11/09/2009
भद्रि	02/04/2010
उल्क	02/12/2010
सिद्ध	12/09/2011
संक	01/08/2012
मंग	11/09/2012
पिंग	01/12/2012
धांय	02/04/2013

भद्रिका 5 वर्ष	
02/04/2013	
02/04/2018	
भद्रि	12/12/2013
उल्क	12/10/2014
सिद्ध	02/10/2015
संक	11/11/2016
मंग	01/01/2017
पिंग	12/04/2017
धांय	11/09/2017
भ्राम	02/04/2018

उल्का 6 वर्ष	
02/04/2018	
02/04/2024	
उल्क	02/04/2019
सिद्ध	02/06/2020
संक	02/10/2021
मंग	01/12/2021
पिंग	02/04/2022
धांय	02/10/2022
भ्राम	02/06/2023
भद्रि	02/04/2024

सिद्धा 7 वर्ष	
02/04/2024	
02/04/2031	
सिद्ध	12/08/2025
संक	03/03/2027
मंग	13/05/2027
पिंग	02/10/2027
धांय	02/05/2028
भ्राम	10/02/2029
भद्रि	31/01/2030
उल्क	02/04/2031

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Ranjit

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष	
02/04/2031	
02/04/2039	
संक	11/01/2033
मंग	02/04/2033
पिंग	11/09/2033
धांय	13/05/2034
भ्राम	02/04/2035
भद्रि	12/05/2036
उल्क	11/09/2037
सिद्ध	02/04/2039

मंगला 1 वर्ष	
02/04/2039	
02/04/2040	
मंग	13/04/2039
पिंग	03/05/2039
धांय	02/06/2039
भ्राम	13/07/2039
भद्रि	02/09/2039
उल्क	02/11/2039
सिद्ध	12/01/2040
संक	02/04/2040

पिंगला 2 वर्ष	
02/04/2040	
02/04/2042	
पिंग	12/05/2040
धांय	12/07/2040
भ्राम	01/10/2040
भद्रि	11/01/2041
उल्क	13/05/2041
सिद्ध	02/10/2041
संक	13/03/2042
मंग	02/04/2042

धान्या 3 वर्ष	
02/04/2042	
02/04/2045	
धांय	03/07/2042
भ्राम	01/11/2042
भद्रि	02/04/2043
उल्क	02/10/2043
सिद्ध	02/05/2044
संक	01/01/2045
मंग	31/01/2045
पिंग	02/04/2045

भ्रामरी 4 वर्ष	
02/04/2045	
02/04/2049	
भ्राम	11/09/2045
भद्रि	02/04/2046
उल्क	02/12/2046
सिद्ध	12/09/2047
संक	01/08/2048
मंग	11/09/2048
पिंग	01/12/2048
धांय	02/04/2049

भद्रिका 5 वर्ष	
02/04/2049	
02/04/2054	
भद्रि	12/12/2049
उल्क	12/10/2050
सिद्ध	02/10/2051
संक	11/11/2052
मंग	01/01/2053
पिंग	12/04/2053
धांय	11/09/2053
भ्राम	02/04/2054

उल्का 6 वर्ष	
02/04/2054	
02/04/2060	
उल्क	02/04/2055
सिद्ध	02/06/2056
संक	02/10/2057
मंग	01/12/2057
पिंग	02/04/2058
धांय	02/10/2058
भ्राम	02/06/2059
भद्रि	02/04/2060

सिद्धा 7 वर्ष	
02/04/2060	
02/04/2067	
सिद्ध	12/08/2061
संक	03/03/2063
मंग	13/05/2063
पिंग	02/10/2063
धांय	02/05/2064
भ्राम	10/02/2065
भद्रि	31/01/2066
उल्क	02/04/2067

संकटा 8 वर्ष	
02/04/2067	
02/04/2075	
संक	11/01/2069
मंग	02/04/2069
पिंग	11/09/2069
धांय	13/05/2070
भ्राम	02/04/2071
भद्रि	12/05/2072
उल्क	11/09/2073
सिद्ध	02/04/2075

मंगला 1 वर्ष	
02/04/2075	
02/04/2076	
मंग	13/04/2075
पिंग	03/05/2075
धांय	02/06/2075
भ्राम	13/07/2075
भद्रि	02/09/2075
उल्क	02/11/2075
सिद्ध	12/01/2076
संक	02/04/2076

पिंगला 2 वर्ष	
02/04/2076	
02/04/2078	
पिंग	12/05/2076
धांय	12/07/2076
भ्राम	01/10/2076
भद्रि	11/01/2077
उल्क	13/05/2077
सिद्ध	02/10/2077
संक	13/03/2078
मंग	02/04/2078

धान्या 3 वर्ष	
02/04/2078	
02/04/2081	
धांय	03/07/2078
भ्राम	01/11/2078
भद्रि	02/04/2079
उल्क	02/10/2079
सिद्ध	02/05/2080
संक	01/01/2081
मंग	31/01/2081
पिंग	02/04/2081

भ्रामरी 4 वर्ष	
02/04/2081	
02/04/2085	
भ्राम	11/09/2081
भद्रि	02/04/2082
उल्क	02/12/2082
सिद्ध	12/09/2083
संक	01/08/2084
मंग	11/09/2084
पिंग	01/12/2084
धांय	02/04/2085

भद्रिका 5 वर्ष	
02/04/2085	
02/04/2090	
भद्रि	12/12/2085
उल्क	12/10/2086
सिद्ध	02/10/2087
संक	11/11/2088
मंग	01/01/2089
पिंग	12/04/2089
धांय	11/09/2089
भ्राम	02/04/2090

उल्का 6 वर्ष	
02/04/2090	
00/00/0000	
उल्क	02/04/2091
सिद्ध	02/06/2092
संक	10/04/2093
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - संक	
12/08/2025	
03/03/2027	
संक	16/12/2025
मंग	01/01/2026
पिंग	01/02/2026
धांय	21/03/2026
भ्राम	23/05/2026
भद्रि	10/08/2026
उल्क	13/11/2026
सिद्ध	03/03/2027

सिद्ध - मंग	
03/03/2027	
13/05/2027	
मंग	05/03/2027
पिंग	09/03/2027
धांय	15/03/2027
भ्राम	23/03/2027
भद्रि	02/04/2027
उल्क	13/04/2027
सिद्ध	27/04/2027
संक	13/05/2027

सिद्ध - पिंग	
13/05/2027	
02/10/2027	
पिंग	21/05/2027
धांय	02/06/2027
भ्राम	18/06/2027
भद्रि	07/07/2027
उल्क	31/07/2027
सिद्ध	28/08/2027
संक	28/09/2027
मंग	02/10/2027

सिद्ध - धांय	
02/10/2027	
02/05/2028	
धांय	20/10/2027
भ्राम	13/11/2027
भद्रि	12/12/2027
उल्क	17/01/2028
सिद्ध	27/02/2028
संक	14/04/2028
मंग	20/04/2028
पिंग	02/05/2028

सिद्ध - भ्राम	
02/05/2028	
10/02/2029	
भ्राम	03/06/2028
भद्रि	12/07/2028
उल्क	29/08/2028
सिद्ध	23/10/2028
संक	25/12/2028
मंग	02/01/2029
पिंग	18/01/2029
धांय	10/02/2029

सिद्ध - भद्रि	
10/02/2029	
31/01/2030	
भद्रि	01/04/2029
उल्क	30/05/2029
सिद्ध	07/08/2029
संक	25/10/2029
मंग	04/11/2029
पिंग	23/11/2029
धांय	23/12/2029
भ्राम	31/01/2030

सिद्ध - उल्क	
31/01/2030	
02/04/2031	
उल्क	12/04/2030
सिद्ध	04/07/2030
संक	07/10/2030
मंग	19/10/2030
पिंग	11/11/2030
धांय	17/12/2030
भ्राम	02/02/2031
भद्रि	02/04/2031

संक - संक	
02/04/2031	
11/01/2033	
संक	25/08/2031
मंग	12/09/2031
पिंग	18/10/2031
धांय	11/12/2031
भ्राम	21/02/2032
भद्रि	21/05/2032
उल्क	07/09/2032
सिद्ध	11/01/2033

संक - मंग	
11/01/2033	
02/04/2033	
मंग	13/01/2033
पिंग	18/01/2033
धांय	24/01/2033
भ्राम	02/02/2033
भद्रि	14/02/2033
उल्क	27/02/2033
सिद्ध	15/03/2033
संक	02/04/2033

संक - पिंग	
02/04/2033	
11/09/2033	
पिंग	11/04/2033
धांय	25/04/2033
भ्राम	13/05/2033
भद्रि	04/06/2033
उल्क	01/07/2033
सिद्ध	02/08/2033
संक	07/09/2033
मंग	11/09/2033

संक - धांय	
11/09/2033	
13/05/2034	
धांय	02/10/2033
भ्राम	29/10/2033
भद्रि	01/12/2033
उल्क	11/01/2034
सिद्ध	27/02/2034
संक	23/04/2034
मंग	29/04/2034
पिंग	13/05/2034

संक - भ्राम	
13/05/2034	
02/04/2035	
भ्राम	18/06/2034
भद्रि	02/08/2034
उल्क	25/09/2034
सिद्ध	27/11/2034
संक	07/02/2035
मंग	16/02/2035
पिंग	06/03/2035
धांय	02/04/2035

संक - भद्रि	
02/04/2035	
12/05/2036	
भद्रि	29/05/2035
उल्क	04/08/2035
सिद्ध	22/10/2035
संक	21/01/2036
मंग	01/02/2036
पिंग	23/02/2036
धांय	28/03/2036
भ्राम	12/05/2036

संक - उल्क	
12/05/2036	
11/09/2037	
उल्क	01/08/2036
सिद्ध	04/11/2036
संक	20/02/2037
मंग	06/03/2037
पिंग	02/04/2037
धांय	13/05/2037
भ्राम	06/07/2037
भद्रि	11/09/2037

संक - सिद्ध	
11/09/2037	
02/04/2039	
सिद्ध	31/12/2037
संक	06/05/2038
मंग	22/05/2038
पिंग	22/06/2038
धांय	09/08/2038
भ्राम	11/10/2038
भद्रि	29/12/2038
उल्क	02/04/2039

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - मंग	
02/04/2039	13/04/2039
मंग	03/04/2039
पिंग	03/04/2039
धांय	04/04/2039
भ्राम	05/04/2039
भद्रि	07/04/2039
उल्क	08/04/2039
सिद्ध	10/04/2039
संक	13/04/2039

मंग - पिंग	
13/04/2039	03/05/2039
पिंग	14/04/2039
धांय	15/04/2039
भ्राम	18/04/2039
भद्रि	21/04/2039
उल्क	24/04/2039
सिद्ध	28/04/2039
संक	02/05/2039
मंग	03/05/2039

मंग - धांय	
03/05/2039	02/06/2039
धांय	05/05/2039
भ्राम	09/05/2039
भद्रि	13/05/2039
उल्क	18/05/2039
सिद्ध	24/05/2039
संक	31/05/2039
मंग	01/06/2039
पिंग	02/06/2039

मंग - भ्राम	
02/06/2039	13/07/2039
भ्राम	07/06/2039
भद्रि	13/06/2039
उल्क	19/06/2039
सिद्ध	27/06/2039
संक	06/07/2039
मंग	07/07/2039
पिंग	10/07/2039
धांय	13/07/2039

मंग - भद्रि	
13/07/2039	02/09/2039
भद्रि	20/07/2039
उल्क	28/07/2039
सिद्ध	07/08/2039
संक	19/08/2039
मंग	20/08/2039
पिंग	23/08/2039
धांय	27/08/2039
भ्राम	02/09/2039

मंग - उल्क	
02/09/2039	02/11/2039
उल्क	12/09/2039
सिद्ध	24/09/2039
संक	07/10/2039
मंग	09/10/2039
पिंग	12/10/2039
धांय	17/10/2039
भ्राम	24/10/2039
भद्रि	02/11/2039

मंग - सिद्ध	
02/11/2039	12/01/2040
सिद्ध	15/11/2039
संक	01/12/2039
मंग	03/12/2039
पिंग	07/12/2039
धांय	13/12/2039
भ्राम	21/12/2039
भद्रि	31/12/2039
उल्क	12/01/2040

मंग - संक	
12/01/2040	02/04/2040
संक	30/01/2040
मंग	01/02/2040
पिंग	05/02/2040
धांय	12/02/2040
भ्राम	21/02/2040
भद्रि	03/03/2040
उल्क	17/03/2040
सिद्ध	02/04/2040

पिंग - पिंग	
02/04/2040	12/05/2040
पिंग	04/04/2040
धांय	07/04/2040
भ्राम	12/04/2040
भद्रि	18/04/2040
उल्क	24/04/2040
सिद्ध	02/05/2040
संक	11/05/2040
मंग	12/05/2040

पिंग - धांय	
12/05/2040	12/07/2040
धांय	17/05/2040
भ्राम	24/05/2040
भद्रि	02/06/2040
उल्क	12/06/2040
सिद्ध	24/06/2040
संक	07/07/2040
मंग	09/07/2040
पिंग	12/07/2040

पिंग - भ्राम	
12/07/2040	01/10/2040
भ्राम	21/07/2040
भद्रि	01/08/2040
उल्क	15/08/2040
सिद्ध	31/08/2040
संक	18/09/2040
मंग	20/09/2040
पिंग	25/09/2040
धांय	01/10/2040

पिंग - भद्रि	
01/10/2040	11/01/2041
भद्रि	15/10/2040
उल्क	01/11/2040
सिद्ध	21/11/2040
संक	14/12/2040
मंग	16/12/2040
पिंग	22/12/2040
धांय	31/12/2040
भ्राम	11/01/2041

पिंग - उल्क	
11/01/2041	13/05/2041
उल्क	31/01/2041
सिद्ध	24/02/2041
संक	23/03/2041
मंग	26/03/2041
पिंग	02/04/2041
धांय	12/04/2041
भ्राम	26/04/2041
भद्रि	13/05/2041

पिंग - सिद्ध	
13/05/2041	02/10/2041
सिद्ध	09/06/2041
संक	11/07/2041
मंग	15/07/2041
पिंग	23/07/2041
धांय	03/08/2041
भ्राम	19/08/2041
भद्रि	08/09/2041
उल्क	02/10/2041

पिंग - संक	
02/10/2041	13/03/2042
संक	07/11/2041
मंग	11/11/2041
पिंग	20/11/2041
धांय	04/12/2041
भ्राम	22/12/2041
भद्रि	13/01/2042
उल्क	09/02/2042
सिद्ध	13/03/2042

Ranjit

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 14 वर्ष 8 मास 27 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : मूल - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

वृष 16 वर्ष	
10/04/1985	
06/01/2000	
वृष	06/02/1987
मेष	13/06/1988
मीन	18/05/1990
कुंभ	23/02/1991
मक	02/12/1991
धनु	05/11/1993
मेष	13/03/1995
वृष	13/04/1998
मिथु	06/01/2000

मेष 7 वर्ष	
06/01/2000	
06/01/2007	
मेष	09/08/2000
मीन	13/06/2001
कुंभ	14/10/2001
मक	14/02/2002
धनु	19/12/2002
मेष	23/07/2003
वृष	27/11/2004
मिथु	31/08/2005
वृष	06/01/2007

मीन 10 वर्ष	
06/01/2007	
06/01/2017	
मीन	21/03/2008
कुंभ	13/09/2008
मक	08/03/2009
धनु	22/05/2010
मेष	26/03/2011
वृष	27/02/2013
मिथु	30/03/2014
वृष	04/03/2016
मेष	06/01/2017

कुम्भ 4 वर्ष	
06/01/2017	
06/01/2021	
कुंभ	17/03/2017
मक	26/05/2017
धनु	18/11/2017
मेष	22/03/2018
वृष	28/12/2018
मिथु	05/06/2019
वृष	12/03/2020
मेष	14/07/2020
मीन	06/01/2021

मकर 4 वर्ष	
06/01/2021	
06/01/2025	
मक	17/03/2021
धनु	09/09/2021
मेष	10/01/2022
वृष	19/10/2022
मिथु	26/03/2023
वृष	02/01/2024
मेष	04/05/2024
मीन	27/10/2024
कुंभ	06/01/2025

धनु 10 वर्ष	
06/01/2025	
06/01/2035	
धनु	22/03/2026
मेष	24/01/2027
वृष	28/12/2028
मिथु	28/01/2030
वृष	02/01/2032
मेष	05/11/2032
मीन	19/01/2034
कुंभ	14/07/2034
मक	06/01/2035

मेष 7 वर्ष	
06/01/2035	
06/01/2042	
मेष	10/08/2035
वृष	15/12/2036
मिथु	18/09/2037
वृष	24/01/2039
मेष	27/08/2039
मीन	30/06/2040
कुंभ	01/11/2040
मक	04/03/2041
धनु	06/01/2042

वृष 16 वर्ष	
06/01/2042	
06/01/2058	
वृष	05/02/2045
मिथु	01/11/2046
वृष	02/12/2049
मेष	09/04/2051
मीन	13/03/2053
कुंभ	19/12/2053
मक	27/09/2054
धनु	31/08/2056
मेष	06/01/2058

मिथुन 9 वर्ष	
06/01/2058	
06/01/2067	
मिथु	28/12/2058
वृष	22/09/2060
मेष	26/06/2061
मीन	27/07/2062
कुंभ	02/01/2063
मक	09/06/2063
धनु	09/07/2064
मेष	12/04/2065
वृष	06/01/2067

वृष 16 वर्ष	
06/01/2067	
00/00/0000	
वृष	10/04/2068
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - धनु	
06/01/2025	
22/03/2026	
धनु	28/02/2025
मेष	06/04/2025
वृष	30/06/2025
मिथु	16/08/2025
वृष	09/11/2025
मेष	16/12/2025
मीन	07/02/2026
कुंभ	28/02/2026
मक	22/03/2026

धनु - मेष	
22/03/2026	
24/01/2027	
मेष	17/04/2026
वृष	15/06/2026
मिथु	18/07/2026
वृष	16/09/2026
मेष	12/10/2026
मीन	18/11/2026
कुंभ	03/12/2026
मक	18/12/2026
धनु	24/01/2027

धनु - वृष	
24/01/2027	
28/12/2028	
वृष	08/06/2027
मिथु	24/08/2027
वृष	06/01/2028
मेष	06/03/2028
मीन	30/05/2028
कुंभ	03/07/2028
मक	06/08/2028
धनु	29/10/2028
मेष	28/12/2028

धनु - मिथु	
28/12/2028	
28/01/2030	
मिथु	09/02/2029
वृष	26/04/2029
मेष	29/05/2029
मीन	16/07/2029
कुंभ	04/08/2029
मक	23/08/2029
धनु	10/10/2029
मेष	12/11/2029
वृष	28/01/2030

धनु - वृष	
28/01/2030	
02/01/2032	
वृष	13/06/2030
मेष	11/08/2030
मीन	04/11/2030
कुंभ	08/12/2030
मक	11/01/2031
धनु	05/04/2031
मेष	04/06/2031
वृष	18/10/2031
मिथु	02/01/2032

धनु - मेष	
02/01/2032	
05/11/2032	
मेष	28/01/2032
मीन	05/03/2032
कुंभ	20/03/2032
मक	04/04/2032
धनु	11/05/2032
मेष	06/06/2032
वृष	04/08/2032
मिथु	07/09/2032
वृष	05/11/2032

धनु - मीन	
05/11/2032	
19/01/2034	
मीन	28/12/2032
कुंभ	18/01/2033
मक	08/02/2033
धनु	02/04/2033
मेष	10/05/2033
वृष	02/08/2033
मिथु	19/09/2033
वृष	13/12/2033
मेष	19/01/2034

धनु - कुंभ	
19/01/2034	
14/07/2034	
कुंभ	28/01/2034
मक	05/02/2034
धनु	26/02/2034
मेष	13/03/2034
वृष	16/04/2034
मिथु	05/05/2034
वृष	08/06/2034
मेष	23/06/2034
मीन	14/07/2034

धनु - मक	
14/07/2034	
06/01/2035	
मक	23/07/2034
धनु	13/08/2034
मेष	28/08/2034
वृष	01/10/2034
मिथु	20/10/2034
वृष	23/11/2034
मेष	07/12/2034
मीन	29/12/2034
कुंभ	06/01/2035

मेष - मेष	
06/01/2035	
10/08/2035	
मेष	24/01/2035
वृष	07/03/2035
मिथु	30/03/2035
वृष	11/05/2035
मेष	29/05/2035
मीन	24/06/2035
कुंभ	04/07/2035
मक	15/07/2035
धनु	10/08/2035

मेष - वृष	
10/08/2035	
15/12/2036	
वृष	13/11/2035
मिथु	05/01/2036
वृष	09/04/2036
मेष	21/05/2036
मीन	19/07/2036
कुंभ	12/08/2036
मक	05/09/2036
धनु	03/11/2036
मेष	15/12/2036

मेष - मिथु	
15/12/2036	
18/09/2037	
मिथु	14/01/2037
वृष	08/03/2037
मेष	31/03/2037
मीन	04/05/2037
कुंभ	17/05/2037
मक	31/05/2037
धनु	03/07/2037
मेष	26/07/2037
वृष	18/09/2037

मेष - वृष	
18/09/2037	
24/01/2039	
वृष	22/12/2037
मेष	01/02/2038
मीन	02/04/2038
कुंभ	26/04/2038
मक	19/05/2038
धनु	18/07/2038
मेष	28/08/2038
वृष	01/12/2038
मिथु	24/01/2039

मेष - मेष	
24/01/2039	
27/08/2039	
मेष	11/02/2039
मीन	09/03/2039
कुंभ	19/03/2039
मक	30/03/2039
धनु	25/04/2039
मेष	13/05/2039
वृष	23/06/2039
मिथु	17/07/2039
वृष	27/08/2039

मेष - मीन	
27/08/2039	
30/06/2040	
मीन	03/10/2039
कुंभ	18/10/2039
मक	02/11/2039
धनु	09/12/2039
मेष	04/01/2040
वृष	04/03/2040
मिथु	06/04/2040
वृष	04/06/2040
मेष	30/06/2040

Ranjit

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - कुंभ	
30/06/2040	
01/11/2040	
कुंभ	06/07/2040
मक	12/07/2040
धनु	27/07/2040
मेष	06/08/2040
वृष	30/08/2040
मिथु	13/09/2040
वृष	06/10/2040
मेष	17/10/2040
मीन	01/11/2040

मेष - मक	
01/11/2040	
04/03/2041	
मक	07/11/2040
धनु	21/11/2040
मेष	02/12/2040
वृष	26/12/2040
मिथु	08/01/2041
वृष	01/02/2041
मेष	11/02/2041
मीन	26/02/2041
कुंभ	04/03/2041

मेष - धनु	
04/03/2041	
06/01/2042	
धनु	10/04/2041
मेष	06/05/2041
वृष	04/07/2041
मिथु	07/08/2041
वृष	05/10/2041
मेष	31/10/2041
मीन	07/12/2041
कुंभ	22/12/2041
मक	06/01/2042

वृष - वृष	
06/01/2042	
05/02/2045	
वृष	11/08/2042
मिथु	11/12/2042
वृष	16/07/2043
मेष	19/10/2043
मीन	03/03/2044
कुंभ	26/04/2044
मक	20/06/2044
धनु	02/11/2044
मेष	05/02/2045

वृष - मिथु	
05/02/2045	
01/11/2046	
मिथु	15/04/2045
वृष	15/08/2045
मेष	08/10/2045
मीन	23/12/2045
कुंभ	23/01/2046
मक	22/02/2046
धनु	09/05/2046
मेष	02/07/2046
वृष	01/11/2046

वृष - वृष	
01/11/2046	
02/12/2049	
वृष	06/06/2047
मेष	09/09/2047
मीन	23/01/2048
कुंभ	17/03/2048
मक	11/05/2048
धनु	23/09/2048
मेष	27/12/2048
वृष	01/08/2049
मिथु	02/12/2049

वृष - मेष	
02/12/2049	
09/04/2051	
मेष	12/01/2050
मीन	13/03/2050
कुंभ	05/04/2050
मक	29/04/2050
धनु	27/06/2050
मेष	08/08/2050
वृष	11/11/2050
मिथु	03/01/2051
वृष	09/04/2051

वृष - मीन	
09/04/2051	
13/03/2053	
मीन	02/07/2051
कुंभ	05/08/2051
मक	08/09/2051
धनु	02/12/2051
मेष	30/01/2052
वृष	14/06/2052
मिथु	29/08/2052
वृष	12/01/2053
मेष	13/03/2053

वृष - कुंभ	
13/03/2053	
19/12/2053	
कुंभ	26/03/2053
मक	09/04/2053
धनु	13/05/2053
मेष	05/06/2053
वृष	30/07/2053
मिथु	29/08/2053
वृष	23/10/2053
मेष	15/11/2053
मीन	19/12/2053

वृष - मक	
19/12/2053	
27/09/2054	
मक	02/01/2054
धनु	05/02/2054
मेष	28/02/2054
वृष	24/04/2054
मिथु	24/05/2054
वृष	18/07/2054
मेष	10/08/2054
मीन	13/09/2054
कुंभ	27/09/2054

वृष - धनु	
27/09/2054	
31/08/2056	
धनु	21/12/2054
मेष	18/02/2055
वृष	04/07/2055
मिथु	18/09/2055
वृष	01/02/2056
मेष	31/03/2056
मीन	24/06/2056
कुंभ	28/07/2056
मक	31/08/2056

वृष - मेष	
31/08/2056	
06/01/2058	
मेष	12/10/2056
वृष	15/01/2057
मिथु	09/03/2057
वृष	12/06/2057
मेष	24/07/2057
मीन	21/09/2057
कुंभ	15/10/2057
मक	07/11/2057
धनु	06/01/2058

मिथु - मिथु	
06/01/2058	
28/12/2058	
मिथु	13/02/2058
वृष	23/04/2058
मेष	23/05/2058
मीन	05/07/2058
कुंभ	22/07/2058
मक	09/08/2058
धनु	21/09/2058
मेष	21/10/2058
वृष	28/12/2058

मिथु - वृष	
28/12/2058	
22/09/2060	
वृष	29/04/2059
मेष	22/06/2059
मीन	06/09/2059
कुंभ	07/10/2059
मक	06/11/2059
धनु	22/01/2060
मेष	15/03/2060
वृष	15/07/2060
मिथु	22/09/2060

मिथु - मेष	
22/09/2060	
26/06/2061	
मेष	15/10/2060
मीन	18/11/2060
कुंभ	01/12/2060
मक	14/12/2060
धनु	17/01/2061
मेष	09/02/2061
वृष	04/04/2061
मिथु	04/05/2061
वृष	26/06/2061

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

चर दशा

भोग्य दशा काल : तुला 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

तुला 5 वर्ष	10/04/1985 – 11/04/1990
वृश्चि	09/09/1985
धनु	09/02/1986
मक	11/07/1986
कुंभ	10/12/1986
मीन	11/05/1987
मेष	10/10/1987
वृष	11/03/1988
मिथु	10/08/1988
कर्क	09/01/1989
सिंह	10/06/1989
कन्या	09/11/1989
तुला	11/04/1990

वृश्चिक 5 वर्ष	11/04/1990 – 11/04/1995
तुला	10/09/1990
कन्या	09/02/1991
सिंह	11/07/1991
कर्क	10/12/1991
मिथु	10/05/1992
वृष	10/10/1992
मेष	11/03/1993
मीन	10/08/1993
कुंभ	09/01/1994
मक	10/06/1994
धनु	10/11/1994
वृश्चि	11/04/1995

धनु 1 वर्ष	11/04/1995 – 10/04/1996
वृश्चि	11/05/1995
तुला	11/06/1995
कन्या	11/07/1995
सिंह	11/08/1995
कर्क	10/09/1995
मिथु	10/10/1995
वृष	10/11/1995
मेष	10/12/1995
मीन	10/01/1996
कुंभ	09/02/1996
मक	11/03/1996
धनु	10/04/1996

मकर 2 वर्ष	10/04/1996 – 11/04/1998
धनु	10/06/1996
वृश्चि	10/08/1996
तुला	10/10/1996
कन्या	10/12/1996
सिंह	08/02/1997
कर्क	10/04/1997
मिथु	10/06/1997
वृष	10/08/1997
मेष	10/10/1997
मीन	10/12/1997
कुंभ	09/02/1998
मक	11/04/1998

कुम्भ 10 वर्ष	11/04/1998 – 10/04/2008
मीन	09/02/1999
मेष	10/12/1999
वृष	10/10/2000
मिथु	10/08/2001
कर्क	10/06/2002
सिंह	11/04/2003
कन्या	09/02/2004
तुला	10/12/2004
वृश्चि	10/10/2005
धनु	10/08/2006
मक	11/06/2007
कुंभ	10/04/2008

मीन 2 वर्ष	10/04/2008 – 11/04/2010
मेष	10/06/2008
वृष	10/08/2008
मिथु	10/10/2008
कर्क	10/12/2008
सिंह	08/02/2009
कन्या	10/04/2009
तुला	10/06/2009
वृश्चि	10/08/2009
धनु	10/10/2009
मक	10/12/2009
कुंभ	09/02/2010
मीन	11/04/2010

मेष 12 वर्ष	11/04/2010 – 11/04/2022
वृष	11/04/2011
मिथु	10/04/2012
कर्क	10/04/2013
सिंह	11/04/2014
कन्या	11/04/2015
तुला	10/04/2016
वृश्चि	10/04/2017
धनु	11/04/2018
मक	11/04/2019
कुंभ	10/04/2020
मीन	10/04/2021
मेष	11/04/2022

वृष 10 वर्ष	11/04/2022 – 10/04/2032
मेष	09/02/2023
मीन	10/12/2023
कुंभ	10/10/2024
मक	10/08/2025
धनु	10/06/2026
वृश्चि	11/04/2027
तुला	09/02/2028
कन्या	10/12/2028
सिंह	10/10/2029
कर्क	10/08/2030
मिथु	11/06/2031
वृष	10/04/2032

मिथुन 9 वर्ष	10/04/2032 – 10/04/2041
वृष	09/01/2033
मेष	10/10/2033
मीन	11/07/2034
कुंभ	11/04/2035
मक	10/01/2036
धनु	10/10/2036
वृश्चि	11/07/2037
तुला	11/04/2038
कन्या	09/01/2039
सिंह	10/10/2039
कर्क	10/07/2040
मिथु	10/04/2041

कर्क 7 वर्ष	10/04/2041 – 10/04/2048
मिथु	09/11/2041
वृष	10/06/2042
मेष	09/01/2043
मीन	11/08/2043
कुंभ	11/03/2044
मक	10/10/2044
धनु	11/05/2045
वृश्चि	10/12/2045
तुला	11/07/2046
कन्या	09/02/2047
सिंह	10/09/2047
कर्क	10/04/2048

सिंह 5 वर्ष	10/04/2048 – 10/04/2053
कन्या	09/09/2048
तुला	08/02/2049
वृश्चि	11/07/2049
धनु	10/12/2049
मक	11/05/2050
कुंभ	10/10/2050
मीन	11/03/2051
मेष	11/08/2051
वृष	10/01/2052
मिथु	10/06/2052
कर्क	09/11/2052
सिंह	10/04/2053

कन्या 6 वर्ष	10/04/2053 – 11/04/2059
तुला	10/10/2053
वृश्चि	11/04/2054
धनु	10/10/2054
मक	11/04/2055
कुंभ	10/10/2055
मीन	10/04/2056
मेष	10/10/2056
वृष	10/04/2057
मिथु	10/10/2057
कर्क	11/04/2058
सिंह	10/10/2058
कन्या	11/04/2059

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - धनु	
10/08/2025	10/06/2026
वृश्चि	04/09/2025
तुला	30/09/2025
कन्या	25/10/2025
सिंह	20/11/2025
कर्क	15/12/2025
मिथु	09/01/2026
वृष	04/02/2026
मेष	01/03/2026
मीन	26/03/2026
कुंभ	21/04/2026
मक	16/05/2026
धनु	10/06/2026

वृष - वृश्चि	
10/06/2026	11/04/2027
तुला	06/07/2026
कन्या	31/07/2026
सिंह	26/08/2026
कर्क	20/09/2026
मिथु	15/10/2026
वृष	10/11/2026
मेष	05/12/2026
मीन	30/12/2026
कुंभ	25/01/2027
मक	19/02/2027
धनु	16/03/2027
वृश्चि	11/04/2027

वृष - तुला	
11/04/2027	09/02/2028
वृश्चि	06/05/2027
धनु	01/06/2027
मक	26/06/2027
कुंभ	21/07/2027
मीन	16/08/2027
मेष	10/09/2027
वृष	05/10/2027
मिथु	31/10/2027
कर्क	25/11/2027
सिंह	20/12/2027
कन्या	15/01/2028
तुला	09/02/2028

वृष - कन्या	
09/02/2028	10/12/2028
तुला	06/03/2028
वृश्चि	31/03/2028
धनु	25/04/2028
मक	21/05/2028
कुंभ	15/06/2028
मीन	10/07/2028
मेष	05/08/2028
वृष	30/08/2028
मिथु	24/09/2028
कर्क	20/10/2028
सिंह	14/11/2028
कन्या	10/12/2028

वृष - सिंह	
10/12/2028	10/10/2029
कन्या	04/01/2029
तुला	29/01/2029
वृश्चि	24/02/2029
धनु	21/03/2029
मक	15/04/2029
कुंभ	11/05/2029
मीन	05/06/2029
मेष	30/06/2029
वृष	26/07/2029
मिथु	20/08/2029
कर्क	15/09/2029
सिंह	10/10/2029

वृष - कर्क	
10/10/2029	10/08/2030
मिथु	04/11/2029
वृष	30/11/2029
मेष	25/12/2029
मीन	19/01/2030
कुंभ	14/02/2030
मक	11/03/2030
धनु	05/04/2030
वृश्चि	01/05/2030
तुला	26/05/2030
कन्या	21/06/2030
सिंह	16/07/2030
कर्क	10/08/2030

वृष - मिथु	
10/08/2030	11/06/2031
वृष	05/09/2030
मेष	30/09/2030
मीन	25/10/2030
कुंभ	20/11/2030
मक	15/12/2030
धनु	09/01/2031
वृश्चि	04/02/2031
तुला	01/03/2031
कन्या	27/03/2031
सिंह	21/04/2031
कर्क	16/05/2031
मिथु	11/06/2031

वृष - वृष	
11/06/2031	10/04/2032
मेष	06/07/2031
मीन	31/07/2031
कुंभ	26/08/2031
मक	20/09/2031
धनु	15/10/2031
वृश्चि	10/11/2031
तुला	05/12/2031
कन्या	31/12/2031
सिंह	25/01/2032
कर्क	19/02/2032
मिथु	16/03/2032
वृष	10/04/2032

मिथु - वृष	
10/04/2032	09/01/2033
मेष	03/05/2032
मीन	26/05/2032
कुंभ	18/06/2032
मक	10/07/2032
धनु	02/08/2032
वृश्चि	25/08/2032
तुला	17/09/2032
कन्या	10/10/2032
सिंह	01/11/2032
कर्क	24/11/2032
मिथु	17/12/2032
वृष	09/01/2033

मिथु - मेष	
09/01/2033	10/10/2033
वृष	01/02/2033
मिथु	24/02/2033
कर्क	18/03/2033
सिंह	10/04/2033
कन्या	03/05/2033
तुला	26/05/2033
वृश्चि	18/06/2033
धनु	11/07/2033
मक	02/08/2033
कुंभ	25/08/2033
मीन	17/09/2033
मेष	10/10/2033

मिथु - मीन	
10/10/2033	11/07/2034
मेष	02/11/2033
वृष	25/11/2033
मिथु	17/12/2033
कर्क	09/01/2034
सिंह	01/02/2034
कन्या	24/02/2034
तुला	19/03/2034
वृश्चि	11/04/2034
धनु	03/05/2034
मक	26/05/2034
कुंभ	18/06/2034
मीन	11/07/2034

मिथु - कुंभ	
11/07/2034	11/04/2035
मीन	03/08/2034
मेष	26/08/2034
वृष	17/09/2034
मिथु	10/10/2034
कर्क	02/11/2034
सिंह	25/11/2034
कन्या	18/12/2034
तुला	09/01/2035
वृश्चि	01/02/2035
धनु	24/02/2035
मक	19/03/2035
कुंभ	11/04/2035

मिथु - मक	
11/04/2035	10/01/2036
धनु	04/05/2035
वृश्चि	26/05/2035
तुला	18/06/2035
कन्या	11/07/2035
सिंह	03/08/2035
कर्क	26/08/2035
मिथु	18/09/2035
वृष	10/10/2035
मेष	02/11/2035
मीन	25/11/2035
कुंभ	18/12/2035
मक	10/01/2036

मिथु - धनु	
10/01/2036	10/10/2036
वृश्चि	02/02/2036
तुला	24/02/2036
कन्या	18/03/2036
सिंह	10/04/2036
कर्क	03/05/2036
मिथु	26/05/2036
वृष	18/06/2036
मेष	10/07/2036
मीन	02/08/2036
कुंभ	25/08/2036
मक	17/09/2036
धनु	10/10/2036

मिथु - वृश्चि	
10/10/2036	11/07/2037
तुला	01/11/2036
कन्या	24/11/2036
सिंह	17/12/2036
कर्क	09/01/2037
मिथु	01/02/2037
वृष	24/02/2037
मेष	18/03/2037
मीन	10/04/2037
कुंभ	03/05/2037
मक	26/05/2037
धनु	18/06/2037
वृश्चि	11/07/2037

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - तुला	
11/07/2037	11/04/2038
वृश्चि	02/08/2037
धनु	25/08/2037
मक	17/09/2037
कुंभ	10/10/2037
मीन	02/11/2037
मेष	25/11/2037
वृष	17/12/2037
मिथु	09/01/2038
कर्क	01/02/2038
सिंह	24/02/2038
कन्या	19/03/2038
तुला	11/04/2038

मिथु - कन्या	
11/04/2038	09/01/2039
तुला	03/05/2038
वृश्चि	26/05/2038
धनु	18/06/2038
मक	11/07/2038
कुंभ	03/08/2038
मीन	26/08/2038
मेष	17/09/2038
वृष	10/10/2038
मिथु	02/11/2038
कर्क	25/11/2038
सिंह	18/12/2038
कन्या	09/01/2039

मिथु - सिंह	
09/01/2039	10/10/2039
कन्या	01/02/2039
तुला	24/02/2039
वृश्चि	19/03/2039
धनु	11/04/2039
मक	04/05/2039
कुंभ	26/05/2039
मीन	18/06/2039
मेष	11/07/2039
वृष	03/08/2039
मिथु	26/08/2039
कर्क	18/09/2039
सिंह	10/10/2039

मिथु - कर्क	
10/10/2039	10/07/2040
मिथु	02/11/2039
वृष	25/11/2039
मेष	18/12/2039
मीन	10/01/2040
कुंभ	02/02/2040
मक	24/02/2040
धनु	18/03/2040
वृश्चि	10/04/2040
तुला	03/05/2040
कन्या	26/05/2040
सिंह	18/06/2040
कर्क	10/07/2040

मिथु - मिथु	
10/07/2040	10/04/2041
वृष	02/08/2040
मेष	25/08/2040
मीन	17/09/2040
कुंभ	10/10/2040
मक	01/11/2040
धनु	24/11/2040
वृश्चि	17/12/2040
तुला	09/01/2041
कन्या	01/02/2041
सिंह	24/02/2041
कर्क	18/03/2041
मिथु	10/04/2041

कर्क - मिथु	
10/04/2041	09/11/2041
वृष	28/04/2041
मेष	16/05/2041
मीन	03/06/2041
कुंभ	20/06/2041
मक	08/07/2041
धनु	26/07/2041
वृश्चि	13/08/2041
तुला	30/08/2041
कन्या	17/09/2041
सिंह	05/10/2041
कर्क	23/10/2041
मिथु	09/11/2041

कर्क - वृष	
09/11/2041	10/06/2042
मेष	27/11/2041
मीन	15/12/2041
कुंभ	02/01/2042
मक	19/01/2042
धनु	06/02/2042
वृश्चि	24/02/2042
तुला	14/03/2042
कन्या	31/03/2042
सिंह	18/04/2042
कर्क	06/05/2042
मिथु	24/05/2042
वृष	10/06/2042

कर्क - मेष	
10/06/2042	09/01/2043
वृष	28/06/2042
मिथु	16/07/2042
कर्क	03/08/2042
सिंह	20/08/2042
कन्या	07/09/2042
तुला	25/09/2042
वृश्चि	13/10/2042
धनु	30/10/2042
मक	17/11/2042
कुंभ	05/12/2042
मीन	23/12/2042
मेष	09/01/2043

कर्क - मीन	
09/01/2043	11/08/2043
मेष	27/01/2043
वृष	14/02/2043
मिथु	04/03/2043
कर्क	22/03/2043
सिंह	08/04/2043
कन्या	26/04/2043
तुला	14/05/2043
वृश्चि	01/06/2043
धनु	18/06/2043
मक	06/07/2043
कुंभ	24/07/2043
मीन	11/08/2043

कर्क - कुंभ	
11/08/2043	11/03/2044
मीन	28/08/2043
मेष	15/09/2043
वृष	03/10/2043
मिथु	21/10/2043
कर्क	07/11/2043
सिंह	25/11/2043
कन्या	13/12/2043
तुला	31/12/2043
वृश्चि	17/01/2044
धनु	04/02/2044
मक	22/02/2044
कुंभ	11/03/2044

कर्क - मक	
11/03/2044	10/10/2044
धनु	28/03/2044
वृश्चि	15/04/2044
तुला	03/05/2044
कन्या	21/05/2044
सिंह	07/06/2044
कर्क	25/06/2044
मिथु	13/07/2044
वृष	31/07/2044
मेष	17/08/2044
मीन	04/09/2044
कुंभ	22/09/2044
मक	10/10/2044

कर्क - धनु	
10/10/2044	11/05/2045
वृश्चि	27/10/2044
तुला	14/11/2044
कन्या	02/12/2044
सिंह	20/12/2044
कर्क	06/01/2045
मिथु	24/01/2045
वृष	11/02/2045
मेष	01/03/2045
मीन	18/03/2045
कुंभ	05/04/2045
मक	23/04/2045
धनु	11/05/2045

कर्क - वृश्चि	
11/05/2045	10/12/2045
तुला	28/05/2045
कन्या	15/06/2045
सिंह	03/07/2045
कर्क	21/07/2045
मिथु	08/08/2045
वृष	25/08/2045
मेष	12/09/2045
मीन	30/09/2045
कुंभ	18/10/2045
मक	04/11/2045
धनु	22/11/2045
वृश्चि	10/12/2045

कर्क - तुला	
10/12/2045	11/07/2046
वृश्चि	28/12/2045
धनु	14/01/2046
मक	01/02/2046
कुंभ	19/02/2046
मीन	09/03/2046
मेष	26/03/2046
वृष	13/04/2046
मिथु	01/05/2046
कर्क	19/05/2046
सिंह	05/06/2046
कन्या	23/06/2046
तुला	11/07/2046

कर्क - कन्या	
11/07/2046	09/02/2047
तुला	29/07/2046
वृश्चि	15/08/2046
धनु	02/09/2046
मक	20/09/2046
कुंभ	08/10/2046
मीन	25/10/2046
मेष	12/11/2046
वृष	30/11/2046
मिथु	18/12/2046
कर्क	04/01/2047
सिंह	22/01/2047
कन्या	09/02/2047

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	91%	धन, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	66%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	53%	दम्पति
लहसुनिया	केतु	53%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	50%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	31%	दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	25%	ग्रह कलेश, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	12%	शत्रु व रोग, हानि

रत्न की शुभता

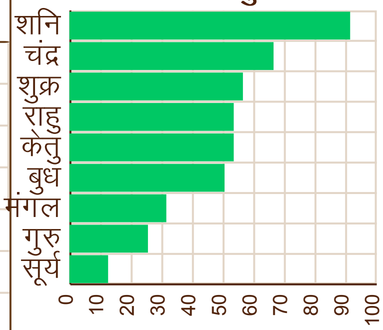

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	30/09/1988	0%	53%	43%	50%	25%	62%	78%	31%	66%
शुक्र	30/09/2008	0%	53%	31%	56%	25%	69%	97%	59%	59%
सूर्य	30/09/2014	38%	72%	43%	50%	38%	38%	78%	31%	31%
चंद्र	30/09/2024	25%	78%	31%	56%	25%	56%	91%	31%	31%
मंगल	01/10/2031	25%	72%	53%	25%	38%	56%	91%	31%	59%
राहु	30/09/2049	0%	53%	6%	50%	25%	62%	97%	66%	31%
गुरु	30/09/2065	25%	72%	43%	25%	50%	38%	91%	53%	53%
शनि	30/09/2084	0%	53%	6%	56%	25%	62%	100%	59%	31%
बुध	01/10/2101	25%	53%	31%	62%	25%	62%	91%	53%	53%

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान–सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान–प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

नीलम आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मोती, हीरा, गोमेद, लहसुनिया एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :—

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान–प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पति की वृद्धि करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते है। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सर्वोत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि–भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे– उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5–6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। चंद्र रत्न मोती धारण कर आप पराक्रम से धन प्राप्त करने में सफल हो सकते है। मोती रत्न आपको धार्मिक, यशस्वी, प्रसन्न, आस्तिक एवं मधुरभाषी बनायेगा। मोती रत्न बन्धु बान्धवों से रिश्ते मजबूत होंगे। रत्न प्रभाव आपके चरित्र को उत्तम रखेगा और आप सत्य का साथ देंगे। मोती रत्न से आपके वितीय विषय आपके पक्ष में रहेंगे। छोटी यात्राएं आपके लिए सुखद रहेंगी। चंद्र रत्न आपकी धर्य शक्ति का विकास कर रहा है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी

मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ–बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्यो से आय प्राप्ति के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालण कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नम : का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे– चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे – सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र–पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई–बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते

समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे– चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे– तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8–10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख–सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार ह्रदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन–यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है– सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8–10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना धारण करने से आपके विवेक भाव में वृद्धि होगी। तथा रत्न प्रभाव से आप अपने परिश्रम के बल पर सफलता अर्जित करेंगे। आप आत्मविश्वासी और पुरुषाथी बनेंगे। यह रत्न आपको स्वभाव से तार्किक और विनोदी बनाएगा। शत्रुओं की अधिकता होने पर भी आप उन्हें शांत रखने में सफल रहेंगे। पन्ना रत्न आपकी मित्रता किसी बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति से करा सकता है। रत्न शुभता से आप अच्छे कार्यों पर व्यय करेंगे।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी

शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यो में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे – मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपके जीवन साथी के क्रोध भाव में वृद्धि हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन दुःखमयी हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपका विवाह देरी से हो सकता है। जीवनसाथी के साथ व्यवहार में सरसता की कमी अलगाव तक लेकर जा सकती है। रत्न प्रभाव आपको बेचैनी और चिडचिडापन देने के साथ–साथ तर्क और बहस करने वाला भी बना सकता है। सफलता के लिए आपको कडी मेहनत करनी पड़ सकती है। रत्न धारण से वात रोग, पेट से संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तथा मुकद्दमों में धन हानि के योग बन सकते है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको कुटुंब सुख और धन संचय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से आपको परिश्रम और बुद्धि का सहयोग पूर्ण रूप से नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको सभा में भाषण देने में संकोच भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। मूंगा रत्न धारण से आपका जीवन साथी अत्यधिक क्रोध करने वाला हो सकता है। रत्न प्रभाव आपके जीवन साथी में अत्यधिक जोश, ऊर्जा और उत्तेजना दे सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद व्यापारिक साझेदार से अनबन हो सकती है। ग्रहस्थ जीवन में तनाव, क्लेश और अंशान्ति की स्थिति बन सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने

सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप सामान्य से अधिक महत्वाकांक्षी और शुभकर्मो से दूर रहने वाले हो सकते है। अपना घर प्राप्त करने में आपको लम्बी प्रतिक्षा करनी पड सकती है। यह रत्न वाहन सुख में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको अपनी योग्यतानुसार सम्मान नहीं मिल पाएगा। आपके व्यय चिकित्सा और व्यर्थ के विषयों पर अधिक होने के योग बन सकते है। पुखराज रत्न के प्रभाव से आपका व्यापार मंद गति से आगे बढ़ेगा। सरकार द्वारा दंड का सामना भी आपको करना पड़ सकता है। सुख–सुविधाओं का अभाव आपको महसूस हो सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु ग्रह की शुभता में कमी के कारण गुरु रत्न पुखराज की अनुकूलता आपके लिए नहीं बन रही है। अतः इस रत्न को धारण करने पर आपमें आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। कार्यो को करने से पूर्व ही आपके मन में नकारात्मक भाव आ सकते है। तीसरे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण यह रत्न आपमें साहस और पुरुषार्थ की कमी कर सकता है। योग्यता और कुशलता से धन अर्जित करने में इस रत्न की प्रतिकूलता आपके लिए बनी हुई है। गुरु रत्न पुखराज धारण आपकी उच्च शिक्षा और नौकरी दोनों क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में परेशानियां दे सकता है। बौद्धिक क्षमता का सहयोग आपको समय पर नहीं मिल पाएगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋृण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते है। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते है। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। कुंडली के अन्य ग्रह योगों के कारण सूर्य को अपने शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आप अपने जीवन लक्ष्य को समय पर प्राप्त करने में असफल हो सकते है। यह रत्न आपकी उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकता है। धन–संपत्ति तथा बड़े भाई बहनों के लिए रत्न की प्रतिकूलता बनी हुई है। यह रत्न आपका अरिष्ट कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप विपत्तियों में पड़ सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको राज सत्ता और सरकारी पद पर कार्य करने में परेशानियां दे सकता है। माणिक्य रत्न संतान में कमी, भोग–विलास तथा आंडबर प्रिय और तानाशाही की प्रवृति आपको दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(30/09/2024 - 01/10/2031)

मंगल की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, गोमेद, माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(01/10/2031 - 30/09/2049)

राहु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(30/09/2049 - 30/09/2065)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, हीरा, माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

शनि
(30/09/2065 - 30/09/2084)

शनि की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(30/09/2084 - 01/10/2101)

बुध की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न – ओपल

आपका जन्म तुला राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शुक्र होता है। शुक्र ज्योतिषशास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है, शुक्र को असुरों का देव भी माना जाता है। सभी विलासिता देने वाला शुक्र ग्रह होता है जो जातक को सभी सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य प्रदान करता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः तुला राशि के लग्न वाले जातकों को तुला राशि के स्वामी ग्रह शुक्र को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शुक्र ग्रह के लिये ओपल रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शुक्र राजा के सलाहकार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज दरबार में सलाहकार तुल्य अधिकार प्राप्त तथा उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने जीवन साथी का सहयोग भी प्राप्त होता है। शुक्र ग्रह यौन अंगों एवं यौन सुखों आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको यौन रोग हों या यौन सुख से संबंधित कष्ट हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

ओपल रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है और सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के कारण उसको ग्रहों का राजा माना जाता है। ओपल रत्न शुक्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शुक्रवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल शुक्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। शुक्रवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय शुक्र की होरा का होता है। ओपल को यदि शुक्रवार के साथ–साथ शुक्र के नक्षत्र अर्थात् भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ओपल को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शुक्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

शुक्र का मंत्र – ऊँ शुं शुक्राय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शुक्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चांदी, सफेद कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो ओपल रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी शुक्र का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या दुर्गा मां की पूजा–स्तुति तथा दुर्गा चालीसा का पाठ करें तो यह ओपल रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शुक्रवार को दुर्गा सप्तशती का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

तुला लग्न वाले जातक यदि ओपल रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान–सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग–अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों–बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी–कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग–अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान–सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी – गुरू ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन–संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहू ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख–शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक–पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश–कीर्ति, मान–प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता हैं। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते है। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज–सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेरशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं। हमेशा आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव हैं। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता हैं। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्टेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखो की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन–संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता हैं। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते है।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा –मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग,ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों–छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे

सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	10/04/1985-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	--------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	--------------------------	--------------------------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	--------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है । दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं

द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय–समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या– 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।

4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर – ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय–समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि–विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे – कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन–पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता–पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार–बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।

6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा–फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार–बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर–बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।

9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ–दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने–संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्‌देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील व्यक्ति होंगे। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी–कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगे। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगे। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील व्यक्ति रहेंगे। इन गुणों, वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगे। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगे। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आप परोपकारवादी, बहुतों के पोषक बनेंगे। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगे। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगे।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट–कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका भाग्यांक 1 है, जो आपका मूंलाक भी है। इसका स्वामी सूर्य ग्रह है। मूलांक एवं भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर सूर्य के गुण–अवगुणों की मात्रा द्विगुणित हो जाएगी। इसके प्रभाववश आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति काफी अच्छी तरह होगी एवं स्वतंत्र

निर्णय लेने की शक्ति का विस्तार होगा। आपके अधिसंख्य कार्य मूलांक 1 के प्रभाव से संचालित होंगे। भाग्य के संबंध में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे एवं अपनी मेहनत तथा लगन से समाज में अपनी यश पताका फहराएंगे। आप समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करेंगे एवं अपने अनुयायियों को सही मार्गदर्शन देंगे।

भाग्यांक 1 तथा मूलांक 1 के प्रभाववश आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से विकसित होते हुए 28 वें वर्ष की अवस्था में उच्चतम रहेगा एवं 37 वें वर्ष में पूर्ण भाग्योदय को प्राप्त करेंगे।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक भाग्यांक एक ही होने से मूलांक भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8, होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें

सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा – कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर

समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र – आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में उच्चाभिलाषी वर्गानुसार जन्म लग्न तुला के उदय काल हुआ था। तुला नवमांश एवं तुला द्रेष्काण के उदय कालीन प्रभाव वर्गोत्तम दशा में अनेकानेक शुभ संकेतों का सृजन कर रहा है। फलस्वरूप आप आरामदायक, उच्च आनन्द प्रदायक जीवन का प्रसन्नता युक्त सुखपूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

यह सुनिश्चित है कि आप अपनी अभिरूचि के अनुसार अपनी जीवन संगिनी अर्थात् अपनी पत्नी का चयन करेंगे। आप कामुक प्राणी है। इस प्रभाव से आप अपना अधिक समय प्रेम–प्रसंग के चिंतन तथा प्रेम संबंध स्थापित करने में व्यतीत करेंगे। आप उच्च स्तर के भावुक प्राणी है। आप अपनी संगिनी को हार्दिक प्यार करते हो तथा अनुग्रहपूर्वक वासनात्मक प्रवृत्ति से व्यवहार करते हों। आप पूर्ण रूपेण अपनी संगिनी के प्रति समर्पित प्राणी हैं। यदि आपका संगिनी आपकी अभिरूचि के अनुरूप अथवा आशा के अनुकूल आचरण नहीं करती है तो दोनों के समक्ष संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। जब आप भी अपनी संगिनी को कुछ उपहार नहीं देते हो लेकिन सामंजस्य स्थापित करने के प्रति कार्यरत हो जाते हैं। आप अपने स्वाभावानुकूल उस व्यक्ति के साथ तारतम्य स्थापित कर सकेंगे, जिनकी राशि मिथुन हो अथवा कुंभ राशि में जन्म हुआ हो। आप यह निश्चित मान कर चले कि आपका मेल मीन मकर एवं कर्क राशि अर्थात् जलीय गुणयुक्त प्राणी से असंभव है।

आपका रंग रूप उत्तम एवं पूर्ण विकसित शरीर होगा। आप पूर्ण युवा शक्ति संपन्न होंगे। परिणामस्वरूप आपके मित्र संबंधित एवं व्यवसायिक मित्रों के मध्य प्रख्यात होंगे। आप पूर्णरूपेण आश्वस्त हैं कि आप अपने व्यक्तित्व का प्रयोग कर अपनी अच्छी पहचान जन सामान्य की दृष्टि में बनाकर, लाभ प्राप्ति के क्षेत्र में उच्च स्तर प्राप्त करेंगे।

फलस्वरूप आप थोक धन की आय करेंगे तथा बहुतायत में खर्च भी करेंगे। आप यदा कदा बेतुकी बात करके आनन्द प्राप्त करेंगे। आपमें विभिन्न आकर्षक विद्यमान है। आप मुक्त हस्त से धन का व्यय करते हैं। आप सदैव सहृदयता पूर्वक धन का कुछ अंश व्यय करने के लिए उद्यत रहते हैं। आप किसी भी प्रकार की करूण कथा सुन कर यदा कदा किसी को भी मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग करते हैं।

कुछ व्यक्ति आपकी इस प्रकार की उदारतापूर्ण व्यवहार एवं भाव वृद्धि को अनुपयुक्त समझकर आपको अज्ञानी समझते हैं। अतः आप इस प्रकार की उदारतापूर्ण प्रवृत्ति के प्रति अपने विचारों को मेड़ने की शिक्षा ग्रहण करें।

सभी मिला जुलाकर आप बहुत अच्छे एवं सौम्य व्यक्ति हैं। परन्तु यदा–कदा किसी भी सुअवसर पर आप अपने धैर्य की अवनति कर सकते हैं तथा आप प्रतिशोध ले सकते हैं। आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर भली प्रकार प्रतिरोध लगाना होगा। अन्यथा आपकी छवि पर कोई कलंक लग सकता है।

आप सौभाग्यवश शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं निरोग रहेंगे। आप अपनी मध्यावस्था तक अपने शारीरिक वृद्धि की प्रवृत्ति के प्रति विमुख रहें। उत्तम तो यह है कि आप अधिक भोजन पर अश्रित न रहें तथा भोजन पर नियंत्रण रखें। संप्रति आप किसी प्रकार के रोग से संक्रमित तथा अधीन हो सकते हैं। आप किडनी के रोग एवं मूत्र संबंधी रोग के प्रति सतर्क रहे। आपके लिए यह निर्देश है कि आप अपने घर पर अपने मित्रों के साथ कोई व्रण क्षत के शिकार हो सकते हैं। आपको इस बात के प्रति अनुभव अर्थात् पश्चात करना चाहिए कि बिना मित्र के सहयोग से आपके लिए दायित्व को पूरा करना सहज बात नहीं है।

आपके लिए सेवा व्यवसायों में उपयुक्त एवं प्रभावी कार्य सामाजिक जीवन का नेतृत्व अति अनुकूल प्रतीत होता है। आप गर्वनमेंट सेवक एवं अधिकारी के साथ लोक माध्यम का कार्य करें तो अच्छा है। यदि आप अनुमोदन करे तो आप स्वयं रासायनिक व्यवसाय तरल पदार्थों का व्यवसाय जैसे तेल–धृत आदि अथवा इसके अतिरिक्त आप विधिवेत्ता (वकील) अर्किटेक्ट विक्रय प्रतिनिधि, लेखक गायन वाद्य यंत्रवादक, पार्श्व गायक के साथ–साथ आप राजनीति से भी स्रोत स्थापित रख सकते हैं।

आपके लिए रंगों में उत्कृष्ट नारंगी एवं लाल रंग शुभकारक एवं भाग्यवर्द्धक है। आप पीला एवं हरे रंगों का त्याग कर दें।

आपके लिए अंको में 8 अंक उत्तम एवं धनोपार्जन अथवा धन निवेश हेतु अनुकूल है। साथ ही अंक 1, 2, 4 और 7 अंक सर्वथा अनुकूल है। परन्तु अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए प्रतिकूल अंक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जतक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन

में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक–पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता–पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा– भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं सुगठित शरीर के होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है फलतः अन्य जनों को प्रभावित करने में ये समर्थ रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति स्नेह का भाव रहता है। साथ ही सुन्दर वस्तुओं या दृश्यों के प्रति इनके मन में आकर्षण होता है। स्वभाव से ये अन्य जनों को कष्ट नही देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे इनकी सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहती है। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा इस क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण इनको वांछित सफलता भी मिलती है जिससे ये धनैश्वर्य एवं सुखसंसाधन अर्जित करके जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। नीति के ये ज्ञाता होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व की प्राप्ति करने में भी समर्थ रहते हैं लेकिन इनका कोई एक सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार इसमें परिवर्तन करते रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव उत्तम रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। गंभीरता आपको रूचिकर नहीं लगेगी अतः हंसी मजाक समय समय पर करते रहेंगे। बच्चों के प्रति आपका स्नेह एवं आकर्षण रहेगा कला एवं प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आप रूचिशील रहेंगे तथा समयानुसार इन स्थानों का भ्रमण भी करेंगे।

राजनीति या कार्य क्षेत्र में आप प्रभावशाली होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित आदर तथा सहयोग प्रदान करेंगे। आप जीवन में स्वपरिश्रम पराक्रम एवं योग्यता से किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन करके इच्छित धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधन प्राप्त करेंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता उत्पन्न होगी। आप में पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव भी रहेगा तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे तथा अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे। संतति से भी आप युक्त होंगे तथा उनसे आपको यथोचित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। नैतिक कर्तव्यों का भी आप अनुपालन करेंगे तथा सत्कर्मों को करने में रूचिशील रहेंगे जिससे प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

कार्यक्षेत्र में आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपको इच्छित सहयोग एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही किसी सम्मानित या उच्च पद पर आपकी नियुक्ति होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगे। साथ ही व्यापारादि कार्यों में भी आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपकी तेजस्विता यदा कदा उग्रता में परिवर्तन हो सकती है जिससे आपको अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

मित्र वर्ग से आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आप इच्छित सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। इस प्रकार आप स्वस्थ, पराक्रमी तेजस्वी एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा जीवन में उपरोक्त गुणों से युक्त होकर धनैश्वर्य मानसम्मान प्रसिद्धि तथा सुख संसाधन अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी अपनी नीच राशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको इच्छित सांसारिक एवं अन्य सुखों की प्राप्ति में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पडेगा इसमें विलम्ब भी होगा परंतु आप एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति है। अतः सुखार्जन के लिए नित्य तत्पर होंगे एवं न्यूनाधिक रूप से इसकी प्राप्ति में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त ऐश्वर्य एवं वैभव मध्यम रूप से ही आपके पास रहेगा लेकिन आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा अपने कार्यो को करने में तत्पर रहना चाहिए।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी यद्यपि आपको प्राप्त होगा परंतु इसकी मात्रा यथोचित नहीं होगी जिससे आप को मानसिक असन्तुष्टि बनी रहेगी। इसके साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति से संबंधित विवादों से भी आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः विवादित सम्पत्ति से आपको किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहिए।

आपका घर मध्यम श्रेणी का होगा परंतु यथोचित उपकरणों एवं सुख–सुविधाओं से युक्त होगा। मध्यावस्था में आपको अच्छे घर की प्राप्ति होगी। यह किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे लेकिन आपसी संबंधों में मधुरता का भाव कम ही होगा। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी सामान्य होगा परंतु युवावस्था के बाद आप इसका उपयोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माताजी शिक्षित, बुद्धिमान परंतु तेजस्वी वृति की महिला होंगी तथा उनके विचार आधुनिक एवं भौतिकता वादी होंगे। पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा यथोचित पालन करने में तत्पर होंगी आपका एक दूसरे के प्रति सदभाव बना रहेगा परंतु यदा कदा मतभेदों की प्रधानता के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। अतः यदि आप सामंजस्य स्थापित करें तो एकदूसरे के लिए सहयोगी बन सकते है।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही परिश्रम से सफलता अर्जित करेंगे परंतु छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक प्राप्त करने में समर्थ होंगे लेकिन स्नातक परीक्षा में काफी परिश्रम करना पड़ सकता है। यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी शिक्षा का पाढ्यक्रम करें तो उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उन्नति के मार्ग पर भी अग्रसर होंगे।

नीच बृहस्पति की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव के युवावस्था के बाद आपको न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतः इसके लिए आपको उचित खान–पान का ध्यान रखना चाहिए। इसके आप सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य–कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम–प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता–पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता–पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता–पिता की तन–मन–धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है लेकिन राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता चिड़चिड़ापन तथा विनम्रता के भाव की न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी उग्रस्वभाव की महिला होंगी परन्तु साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें बना रहेगा। वह अपने सांसारिक कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। राहु के प्रभाव से विनम्रता एवं कर्तव्य परायणता की भी न्यूनता रहेगी अतः परिवार एवं समाज के प्रति वे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगी जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्रभावित होगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की महिला होंगी एवं उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक रूप से वह दुर्बल रहेंगी परन्तु अन्य अंग भी पुष्ट एवं सुडौल होंगे। इससे उनका आकर्षण बना रहेगा लेकिन सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति का उन पर विशेष प्रभाव रहेगा तथा भौतिकता के प्रति विशेष समर्पित रहेंगी।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा परन्तु राहु की स्थिति से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते है। विवाह के बाद आपका जीवन सामान्य रहेगा एवं परस्पर प्रेम एवं आकर्षण की कमी रहेगी एवं दोनों की स्वाभिमानी एवं तेजस्वी प्रवृति के कारण संबंधों में मधुरता की अपेक्षा तनाव रहेगा। अतः यदि संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यवहार किया जाय तभी किंचित सुख की प्राप्ति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी सामान्य रहेगी। विवाह के बाद सास–ससुर से आपके संबंध अच्छे नहीं होंगे तथा परस्पर विश्वास सम्मान स्नेह एवं सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार तथा कटु सभाषण से असन्तुष्ट होंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार से सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल होगी एवं इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः साझेदारी की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबंधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निर्धारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आपका जन्म मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, नाड़ी आद्य, योनि श्वान तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का शुभारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा– यथा भगत सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस चरण में जन्म लेने से जातक के लिए स्वयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इसकी शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे उस दिन जपे हुए नक्षत्र के दंशाश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से इसकी शान्ति करने के उपरान्त सम्बन्धित जातक को कोई भी कष्ट नही होता हैं तथा वह सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करता हैं।

मंत्र – ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मद
मानसागरी

आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपको वाहन सुख की प्राप्ति भी होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इसका उपभोग कर सकेंगे। शारीरिक बल से भी आप पूर्ण रूपेण युक्त रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि से किसी भी कार्य को सम्पन्न करेंगे शीघ्रता या चंचलता पूर्वक कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे तथा वे भी आपसे अत्यन्त भय ग्रस्त रहेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा समाज में विद्वान के रूप में यश प्राप्त करेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप एक वाक्पटु पुरुष होंगे तथा अपनी इस विशेषता से अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में सफल हो जाएंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा तथा यदा कदा समाज में अन्य जनों के समक्ष इसका आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी अधिकाँश बातों

को प्रमाण के अभाव में अन्य लोग शीघ्रता से स्वीकार नही करेंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आप आजीवन धन ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वदा समृद्ध रहेंगे तथा इनका आपके जीवन में अभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप दृढतापूर्वक कार्य करना पसन्द करेंगे अस्थिर होकर कार्य करने में आपको कोई आनन्द नहीं आएगा। आपके पास स्थिर वैभव भी रहेगा।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके कंठ एवं मुख की आकृति दीर्घ होगी तथा दान्त, कान एवं ओठ भी देखने में स्थूल रहेंगे। साथ ही दोनों भुजाएं कोमल तथा मांसल होगी। आप को पिता द्वारा प्रचुर मात्रा में धनादि की प्राप्ति होगी जिसका आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी लेखन कार्य में भी रूचि रहेगी तथा इसी सन्दर्भ में काव्य आदि सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी वक्तृत्व शक्ति अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी जिससे लोग आपकी बातों को ध्यान पूर्वक सुनेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप दक्षता का परिचय

देंगे। चित्रकारी या शिल्प कला में आप विशिष्ट योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आप प्रकृति से गम्भीर रहेंगे तथा धर्म के विषय में काफी ज्ञान स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। अपने भाई बन्धुओं से आपके संबंध औपचारिक ही अधिक रहेंगे। उत्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रेम तथा सम्मान सहित ही वश में किये जा सकेंगे। बल पूर्वक या आपकी इच्छा के विरूद्ध कुछ नही किया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें गोलाकृति की तथा हाथ एवं कन्धे सामान्य से अधिक लम्बाई से युक्त रहेंगे। उम्र के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। आप को पानी के किनारे निवास करना या भ्रमण करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अतः इसके लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही हृदय से आप हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेंगी अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार मानेंगे तथा ह्दय से उनका धन्यवाद भी करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऽस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप किसी न किसी प्रकार के कार्य में अपने को हमेशा व्यस्त रखेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे एवं इसके द्वारा आपके काफी कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जाएंगे। आपका अर्न्तमन त्याग की भावना से परिपूर्ण रहेगा। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा एवं साहसी प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपके शत्रु प्रायः आपसे हारे हुए रहेंगे एवं आपसे भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग एवं धनाढ्य लोगों के प्रिय रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण मान सम्मान प्राप्त होगा।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः
फलदीपिका

आप विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में निपुण रहेंगे। आपका चरित्र भी निर्मल रहेगा। आप हमेशा सत्य बोलने में विश्वास करेंगे तथा इसी प्रवृति का आप पालन

करते रहेंगे। इसके साथ ही आप व्यय करने में अत्यन्त सावधानी का परिचय देंगे एवं आय के अनुसार ही व्यय करके अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे। आप अपने परिवार में प्रधान एवं श्रेष्ठ रहेंगे। सभी परिवार जन आपको यथा योग्य सम्मान तथा स्नेह प्रदान करेंगे। आप विशेष रूप से इंजीनियरिंग या चित्रकला से क्षेत्र में विशिष्ट सफलता भी अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर पुरूष होंगे तथा सत्य का अनुपालन करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप स्थिर बुद्धि के होंगे अतः स्थिर कार्य करना ही पसन्द करेंगे। आप में सत्व गुण की भी प्रधानता विद्यमान रहेगी एवं मन में अन्य जनों के प्रति स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा। किसी प्रकार से द्वेष या वैमनस्य का भाव रखना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। आप एक सुन्दर पुरूष होंगे तथा गुणवती एवं बुद्धिमती पत्नी के पति होंगे। नाना प्रकार के खेलों तथा नाटकों के प्रति आपके मन में रूचि रहेगी। आपका शरीर भी स्थूलता को प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप ऐसा कार्य सम्पन्न करेंगे जिससे आपके परिवार या कुल को परेशानी हो सकती है। लेकिन समाज में आप पूर्ण रूपेण लोकप्रिय रहेंगे।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप सर्वगुणों से सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। अपने अन्य भाई बहनों में आप श्रेष्ठ एवं मुख्य रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशिष्ट श्रद्धा का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा। आपकी गमनगति अत्यन्त ही आकर्षक रहेगी तथा सहनशीलता के भाव का सर्वथा अभाव रहेगा फलतः कई बार आपको हतोत्साहित भी होना पड़ सकता हैं।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुर्वगैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।

मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप को अधिक बोलने वाले होंगे तथा मन से दया एवं कोमल भावों का प्रदर्शन अल्प मात्रा में ही करेंगे। आपकी प्रवृति साहसी होगी तथा साहसपूर्वक आपके अधिकाँश कार्य सुसम्पन्न होंगे। आप शीघ्र अकारण ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आपकी प्रवृति अन्य लोगों से विवाद करने की भी रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा फलतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता का अनुभव कर सकते हैं। साथ ही आप का शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक होगा। इसके अतिरिक्त आप यदा कदा अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिससे श्रोता आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में पैदा होने के कारण आप हमेशा अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप में हमेशा उत्साह की भावना रहेगी। अतः अधिकाँश कार्य आप इसी प्रवृति से करने में सफल हो जाएंगे। आपकी प्रवृति साहस से भी युक्त रहेगी अतः आपकी समस्त समस्याओं का साहस पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे। आपकी बन्धुवर्ग से विशेष घनिष्ठता कम ही रहेगी। तथा माता पिता के प्रति आप अत्यन्त ही श्रद्धालु रहेंगे एवं निःस्वार्थ भाव से आजीवन उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा

भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा कष्ट तथा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी।

यदि समय आपके लिए अशुभ चल रहा हो मन में परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं गुरूवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पीत वस्त्र, पीत पुष्प, पीत चन्दन, सोना, पुखराज , चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम किसी योग्य विद्वान से 16000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र– ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भावों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर–बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर–बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या

करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में सूर्य पड़ा है। इसकी वजह से आपको ननिहाल से सुख मिलेगा और मुकद्दमें में जीत होगी। मित्र और शत्रु आप से दब कर रहेंगे। आप अपने भाग्य से संतुष्ट रहेंगे। आप अपने भाग्य पर भरोसा रखेंगे, बेफिक्र रहेंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा। शारीरिक सुख अच्छा रहेगा। पुत्र जन्म के बाद अगर बुरा समय हो तो अच्छा समय आएगा अर्थात् लड़के की पैदाइश के बाद आपका जीवन स्थिर हो जाएगा और आपका भाग्योदय होगा। पिता का रुतबा और बढ़ेगा। पत्नी एवं संतान का सुख मिलेगा। आप अधिक पुत्रवान होंगे। दूसरी औरत के साथ संबंध रहेगा ऐसी संभावना है। आपके चरित्र पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप अपना काम बदल सकते हैं और उस बदले हुए काम से अच्छा फल मिलेगा। बुढ़ापे में रात का आराम, पूजा–पाठ, दान–पुण्य का शुभ असर मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के काम से लाभ होगा।

यदि आपने बहन से धन की ठगी की, सरकारी अधिकारियों से धोखा किया और मुकद्दमेबाजी में अपना ध्यान रखा, हर समय दूसरों की तरफ मांगने की नीयत रखी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर, कोर्ट में मुकद्दमों पर अधिक खर्च होगा। पांव में खराबी हो सकती है। पापी ग्रहों के संयोग से बुरा समय आरंभ होगा। जीवन में एक बार पतन होना संभव है। मामा का हाल खराब रहेगा। गुस्सा अधिक आएगा या रक्तचाप का रोग होगा। आपके नौकरी–व्यापार में बार–बार तबदीली हो सकती है। सूर्य का मंदा समय 21–22 साल की उम्र में होगा, स्त्री पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आप अपने बाप या बेटे के साथ एक शहर या गांव में रह कर धन नहीं कमा सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन से झगड़ा न करें।
2. समय कैसा भी रहे दान या कर्ज न मांगें।

उपाय :

1. चांदी या दरिया का पानी घर में कायम करें।
2. बंदर को गेहूं–गुड़ खिलायें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि न होगी। आप मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण रहेंगे।

चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन–दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगे। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव के होंगे। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि–सिद्धि की साधना के मालिक होंगे। गृहस्थी, धन–दौलत के भंडारी होंगे। आपके परिवार में मर्दों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में स्त्रियों में इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पत्नी से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगे। आपके पिता को कम और माता को अधिक सुख मिलेगा। माता या पिता में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगे। आपको शतरंज–तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द–बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई–बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई–बहन को अपमानित किया या भाई–बहन को दु:खी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन–भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्या दान करें।
2. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।
3. लड़के जन्म पर गुड़–गेहूं–तांबा दान करें।
4. लड़की के जन्म पर दूध–चावल–चांदी का दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल सातवें पड़ा है। इसकी वजह से आप शाही जीवन बिताएंगे, आपको भाई से लाभ मिलेगा। आपकी संतान की वृद्धि होगी। हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। परिजनों से सहायता मिलेगी। पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप धर्मात्मा, नेकनामी और वक्त मुसीबत में रोते को सहारा देने वाले होंगे। रोते हुए को हंसाना आप में एक विशेष गुण होगा। आप इन्साफ पसंद आदमी होंगे। ज्योतिष विद्या में रुचि रहेगी। आपकी सरकारी विभाग में नौकरी हुई तो आपका रुतबा बढ़ेगा। आप विदेश की यात्रा करेंगे। पार्टनरशिप का धंधा भी ठीक

रहेगा। आप जो भी चाहेंगे, एक बार अवश्य ही मिलेगा। मगर बार–बार मिलने की उम्मीद नहीं है। आप विष्णु भागवान की तरह खानदान की परवरिश करते रहेंगे। आपको जज या सरपंच या ऐसा अधिकार प्राप्त होगा जिसमें सच्चाई ढूंढना और इंसाफ करना होता है।

यदि आपने लोगों से झगड़ा–फसाद किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, बेटी पैदा होने के बाद आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने साथ विधवा बहन–बुआ या साली को पास नहीं रखें जीवन का फल अशुभ होगा। एक से अधिक या कई औरतों से आपका संबंध रहेगा। परस्त्री के संबंध से आपकी आयु अल्प हो सकती है। आपको रक्त संबंधी दोष हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चाल–चलन ठीक रखें।
2. घर में बेलदार पौधे न लगावें।

उपाय :
1. बहन–बेटी को मीठा या मिठाई देवें।
2. भतीजा–भतीजी की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से ऐसा लगता है कि आप मनमौजी होंगे। आप कम बोलेंगे परंतु गंभीर बात ही बोलेंगे। आपकी शिक्षा थोड़ी–बहुत बाधा के उपरांत पूरी होगी। दिमागी कार्य, व्यापार आदि से पूर्ण लाभ मिलेगा। आप विदेश का भ्रमण करेंगे। समुद्री यात्रा से पूर्ण लाभ प्राप्त होने की आशा है। आपके पास कृषि योग्य भूमि होगी। अमूमन आपका किसी के साथ झगड़ा विवाद नहीं होगा। यदि कारण–अकारण किसी से झगड़ा–मुकद्दमा हुआ भी तो आप की जीत होगी। प्रामाणिकता से धन कमाने से आपको यश भी मिलेगा। पत्नी धनी परिवार से मिलेगी। आप स्वयं सम्पत्तिवान होंगे। 34 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण संतान सुख मिलेगा। वृद्धावस्था अच्छी गुजरेगी। आपके मुंह से निकली बातें पूरी होंगी। अपनी विद्या, दिमागी काम, व्यापार से अच्छा धन कमाएंगे। कृषि कार्य, भाषण देना, लिखने–पढ़ने के काम आपके लिए अनुकूल होंगे। लेखन, प्रिंटिंग या छपाई के कामों में अच्छा फल मिलेगा। आपको राजयोग का सुख मिलेगा। आपके पास दौलत और जमीन–जायदाद अच्छी रहेगी।

यदि आपके घर का मुख्य दरवाजा उत्तर दिशा में होगा या घर से उत्तर दिशा में लड़की का विवाह किया, ननिहाल वालों से झगड़ा किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से 34 वर्ष की उम्र के लगभग माता की मृत्यु हो सकती है। विवाह के बाद 37 वर्ष पत्नी सुख मिलेगा, दो विवाह योग, एक 34 से

पहले दूसरा 34 वर्ष के बाद होने की संभावना है। आपको नेत्र रोग भी हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लड़की/बहन का विवाह घर से उत्तर दिशा की तरफ न करें।
2. सेवक/नौकरों से बचें।

उपाय :
1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्‌टी के बर्तन में दूध भर कर वीराने में दबायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से वकील–जज या उच्च पद प्राप्त होगा। आपके दिमाग में उपजी बातें अवश्य पूरी होगी। आप दूसरों का भला करते समय अपने नुकसान का ख्याल नहीं रखेंगे। आपको लॉटरी से या अचानक धन की प्राप्ति हो ऐसी उम्मीद है। आपको सरकार द्वारा भी लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन एवं सवारी का सुख मिलेगा। 24वें वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप बहुत ही चालाक और भाग्यवान होंगे। आप सभी के मददगार होंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से ऊंचा होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करेंगे तो आप अच्छे अफसर हो सकते हैं। सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलेगा। आपके माता–पिता की दीर्घायु, चाचा–ताऊ सुखी होंगे। आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे आपको मानसिक शांति तथा मन को प्रसन्नता मिलेगी। आप भूमि के स्वामी होंगे तथा आपका मकान आलीशान होगा। लक्ष्मी आपके घर में निवास करेगी। आपको स्त्री–औलाद और माता–पिता का अच्छा सुख मिलेगा। भूमि में गड़े धन की प्राप्ति हो सकती है। लोहा आदि, मशीनरी के काम से बहुत लाभ उठाएंगे।

यदि आपका निर्धन व्यक्ति से संबंध रहा, टूटा सामान या टूटे हुए खिलौने चिपकाने या जोड़ने वाले पदार्थों आदि से जोड़ कर रखे होंगे, परस्त्री संबंध हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अपनी बेड़ी डोव मल्लाह की तरह आपका हाल होगा। आपके जीवन का 23, 34, 48 एवं 55वां वर्ष अच्छा होगा परंतु इन वर्षों में माता पर बुरा असर पड़ेगा। आप पर कुछ लांछन लग जाएं या सम्मान को खतरा पहुंचे ऐसी आशंका है। आप पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आएगी। एक से अधिक औरतों से संबंध रखने का फल अच्छा नहीं होगा। राजा होते हुए भी फकीरी लेने का विचार दिमाग में आता रहेगा। आपकी पत्नी के वक्षस्थल या गर्भाशय में कैंसर हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :
1. टूटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित की सेवा करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन कमा पाएंगे। आप अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा और प्रेम भी करेंगे। आपके जीवन में पुत्र की अपेक्षा अधिक कन्याओं के सुख की संभावना है। आपको अधिक संख्या में संतान के सुख प्राप्ति की संभावना है। आप स्वस्थ रहेंगे। आपकी नेत्र की शक्ति बरकरार रहेगी। आप रुचिपूर्ण भोजन पसंद करेंगे। आपको वृद्धावस्था में अधिक सुख प्राप्त होगा। आप अपनी प्राप्त शिक्षा से हट कर काम करेंगे। आपके पिता के साथ–साथ आपकी किस्मत भी अच्छी है।

यदि आपकी पुत्रियां अधिक हुई, स्त्री से झगड़ा किया या आपकी स्त्री को नंगे पैर घूमने की आदत हुई, बहन–बुआ–साली–बेटी से धन लिया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विद्या अध्ययन में रुकावट, पिता सुख का अभाव रहेगा। काम शक्ति में नुक्स होने की शंका है। विलंब से पुत्र का सुख मिलेगा। धन–संपत्ति की हानि भी हो सकती है। आपके सामने लड़ाई–झगड़े की भी समस्याएं पेश आती रहेंगी। लड़ाई–झगड़े से परेशान रहेंगे। आपकी बुद्धि भ्रमित रहेगी। आपके पशु की चोरी या धन–दौलत के गुम हो जाने भी संभावना है। आपका कारोबार अच्छा नहीं रहे। राज पक्ष से भी कोई समस्या पैदा होगी, ऐसी आशंका है। लोग आपको कई बार बदनाम भी कर देंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. स्त्री का अपमान न करें।
2. पत्नी को नंगे पैर न चलने देवें।

उपाय :
1. पत्नी लाल दवाई से गुप्तांग धोयें।
2. ठोस चांदी घर में रखें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान–प्रतिष्ठा से युक्त होंगे। आप ईश्वर भक्त और पूजा–पाठ करने वाले होंगे। आप आजन्म मुखिया बने रहेंगे। कमाई और खर्चा बराबर हो जाएगा। आप अपनी पहली कन्या का लालन–पालन ससुराल पक्ष को सौप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में प्रभावशाली नहीं लगेंगे परंतु अपनी शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगे। कभी–कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकते हैं। आपको माता का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान–मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों–द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों के कच्चे, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाले होंगे। 28वें 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका जुआं आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरु हो जायेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :
1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान–प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगे। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकते हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश

की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगे। यदि आप अपने धन पर नियंत्रण नहीं रख सके तो सगे–संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पत्नी से मार–पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई–बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा–धड़ी की तो आपकी आयु क्षीण होगी। पत्नी से मन–मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पत्नी से जुदाई मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। आपके जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन–संपत्ति एवं पत्नी के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पत्नी को सिरदर्द की बीमारी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घर में कुत्ता न पालें।
2. बिजली, पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :
1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगे। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता के लिए वरदान सिद्ध होंगे। आप पिता की सेवा करेंगे। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगे तो एक अच्छे सरकारी आफिसर हो सकते हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता पर भी अच्छा प्रभाव ही रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नहीं है कि माता पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन–देन करेंगे परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु–पिता के सेवक होंगे।

यदि आप अपने पिता से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है। नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आपको गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपको लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिरी मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले–सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई–बहन, माता–पिता, दादा–दादी, पुत्र–पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस–मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल–चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री–परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग–बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40–43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति –रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिखा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे।गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ–साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुबिधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभुषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने मे सफल रहेंगे।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का

सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल मेंबच्चेके स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नताएवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध मेंस्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने–पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकरघूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी–मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकीकिसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जूनके बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती हैअथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते है। द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रो का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया शुभ रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही समाज में अन्य लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके शत्रु प्रबल रहेंगे तथा उनसे आप भयभीत तथा चिंतित रहेंगे। जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्नता तथा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी तथा कई अनावश्यक विध्नबाधाएं भी उत्पन्न होंगी। साथ ही आपका कोई कार्य बंद हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन होने की संभावना बनेगी। समाज में अन्य लोगों से इस मास में आपका अनावश्यक विवाद या संघर्ष होगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शारीरिक कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप वातजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार की क्षति या हानि हो सकती है। अतः सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको द्रव्य लाभ का योग बनेगा। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों को भी आप सुनेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से आप लाभार्जन करने में भी सफल हो सकते हैं। इस समय आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिबृद्धि होगी तथा समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होगी। अतः मन से आप पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये सामान्यतया अशुभ रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस समय आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति तथा उद्विग्नता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आपके धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय आपको पूर्ण सहयोग रखना चाहिए तथा उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा आप दण्डित भी किए जा सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे एवं धन का व्यय भी अनावश्यक रूप में होता रहेगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप शिथिल हो सकते है। साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आप को बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके संबधों में भी इस समय तनाव का वातावरण रहेगा तथा समाज से भी आप उपेक्षा प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पितजनित रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा दुर्घटना अदि से भी शरीर में रक्त विकार की संभावना हो सकती है। इसके अतिरिक्त इस समय अग्नि के द्वारा भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप स्त्री पक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रुओं की

ओर से भी चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। इस मास में आपके उत्साह में भी कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के बाद भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होंगे। शारीरिक अस्वस्थता भी इस समय बनी रहेगी तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव में वृद्धि होगी। अपने बंधु एवं मित्र वर्ग से आपके संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव चलता रहेगा।मित्र वर्ग भी इस समय शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिसके कारण मन अशान्त तथा असंतुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके सामाजिक जनों से भी वादविवाद या संघर्ष होने की संभावना बनी रहेगी जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होते रहेंगे। अतः स्त्री से सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा बुद्धिबल से आपके कार्य सफल भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में रूचि उत्पन्न होगी। इस प्रकार आपका यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को अर्जित करेंगे। इस समय शत्रुप क्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे एवं घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेंगी। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप शारीरिक तथा मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। इस समय आप दूर या समीप की कोई यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं।आपके सांसरिक कार्य इस मास में अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्यय अधिक होगा। अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आपको समय समय पर शुभफल भी प्राप्त होंगे।अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं महिला सहयोगियों से भी लाभार्जन करेंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं धनार्जन प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। इस मास में धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे तथा समाज में आपको पूर्ण यश प्राप्त होगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ तथा भाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आपके धर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा।संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं श्रद्धा पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। समाज में इस समय

आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा। इस मास में आपकी लाभ दायक यात्रा का योग भी बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सम्मान तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज में आप एक सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा तथा सुख साधनों को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा व्याप्त रहेगी।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्ता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज में आपको उचित सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग अर्जित होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे मानसिक रूप से शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप सरकार या अधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस समय आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों आदि की भी आपको इस समय प्राप्ति हो सकती है।अतः यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख तथा प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी इस मास में आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन भी पूर्ण प्रसन्न रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में आपको मनोच्छित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी आप

सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में यश तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।अतः इस मास को आप सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रूप से व्यतीत होगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुष्ट मनुष्यों की संगति से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय आप आर्थिक संकट से भी उलझे रहेंगे। अतः मानसिक रूप से भी अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अत्यन्त परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी आप यथोचित पूजन तथा सत्कार नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप हानि प्राप्त करेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से लाभ अर्जित करेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी। जिसके फलस्वरूप कोई धार्मिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इस प्रकार यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी अतः इस समय आपके शत्रु वर्ग कमजोर रहेंगे एवं आप से प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग से इस समय सम्मान एवं सहयोग अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करेंगे। अतः आपकी अर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी इससे समाज तथा मित्रवर्ग में प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी तथा पूर्व विलंबित हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही सांसारिक कायों में भी आप सफल रहेंगे एवं सर्वत्र आनन्द एवं प्रसन्नता का वातावरण विद्यमान रहेगा।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी।अतः

आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है।अतः शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहें। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी क्षति हो सकती है।अतः सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपको अपने पारिवारिक जनों तथा बन्धु वर्ग के मध्य यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित होगी तथा परस्पर संबध भी मधुर रहेंगे। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। फलतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाएंगे। आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी इस मास पूर्ण रूचि रहेगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा रहेगा तथा उसमें बल की वृद्धि होती रहेगी। शत्रुपक्ष को पराजित तथा भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे तथा सभी जनों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। फलतः आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार अदि कार्यो में भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिये अत्यंत ही शुभफलदायक रहेगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुखी रहेंगे तथा सन्तति पक्ष से भी सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या वस्तुओं की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः प्रसन्नता पूर्वक इस मास को व्यतीत करने में आप सफल रहेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर करे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्टस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआधन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई–बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की

कोशिश करेंगें और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता हैं। दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में सफलता मिलेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नमम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह–सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो के लिए समय अच्छा है।

यात्रा–तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दुर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे है। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।
- अपने माता–पिता की सेवा करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्य मान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके विशेष अच्छे संबघ नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल

रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छठे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छठे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधिओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन–देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे परिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नही तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरु हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना हरेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा–दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से

विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा–पाठ के प्रति ज्यादा आकर्शित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा–पाठ करेंगे। जैसे– माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहें हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान–सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नती के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापर को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक–दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद–प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई–लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा–तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा–पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार–चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्चे ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नही तो पैसा फंस सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक–दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ

लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंग। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई–लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह–सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा–तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय

आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर–परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ–चढ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधो में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये–नये तकनीकी विषय की ओर रूझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा–तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के

गोचरीय प्रभाव से छोटी–मोटभ् यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14 जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बड़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिएयह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारणव्यावसायिक जीवन में थोडे बहुत झटके आएंगे।आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर–परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक

दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है। 23 अक्तूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकीशिक्षा–दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिएसमय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान–पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरु हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा–तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी–मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी–लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है।आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य–व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कृत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान–संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार–चढाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर–परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए

हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा–तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी–मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा–पाठ, यज्ञ–अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी–बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहें हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां–बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा–दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी–मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकुल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई

नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उतरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी। आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा–तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करे।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला–जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

आपके भाई–बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा–दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान–पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में है उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा–तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा–पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।
बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें–

ऊँ गं गणपतये नमः

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये–नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि–भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी–छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई–लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान–पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई–लिखाई पर भी आपका पैसे खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत–सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये–नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफि शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर–परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा

होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है। परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान–सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक–ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा–तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भुमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद–विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर–परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें

सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यामान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा–दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के

लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा–तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। हालांकि 5 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके व्यापार में सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि, वाहन व शिक्षा से जुड़े लोगों का चौमुखी विकास होगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से मान सम्मान व यश में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने से आपके सारे कार्य प्रभावित होंगे। आपके प्रतिद्वंदी आपको किसी कानूनी प्रक्रिया में फंसा सकते हैं। अतः जितना हो सके वाद–विवाद व कोर्ट कचहरी से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा पुराने कार्यों को ही अच्छे ढंग से चलाएं। किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें तथा अपने मन की बात सब के साथ शेयर न करें। 4 नवम्बर के बाद व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। परन्तु 5 अप्रैल के बाद अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आय के स्रोत बढ़ेंगे तथा रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वेतन में अचानक बढ़ोत्तरी होगी तथा आपको बड़े अधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए। 4

नवम्बर के बाद आर्थिक लेन देन व निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर–परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों को अनदेखा न करें नहीं तो आपका पारिवारिक वातावरण ज्यादा प्रभावित हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना होगा। परन्तु 5 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाई बहनों की उन्नति होगी। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

13 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। ससुराल एवं मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ नहीं है। इस समय के अंतराल में घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। ऐसे में आप अपनी धैर्य शक्ति बढ़ाएं तथा पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने के लिए पूर्ण प्रयास करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च के बाद आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परन्तु 2 जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। द्वादशस्थ शनि के कारण आपको ऐसा लगेगा कि आप धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु 5 अप्रैल

से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। खान पान तथा दिनचर्या पर आप विशेष ध्यान देंगे। अपने दैनिक जीवन नवीन गतिविधियो को शामिल करेंगे। जैसे सुबह व्यायाम करना या खेल कूद व प्रतियोगिता में शामिल होगा।

13 जुलाई से राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। आपकी दैनिक दिनचर्या भी खराब हो सकती है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 5 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, यह प्रस्ताव आपके लिए अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है। जो व्यक्ति विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे है। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी क्योंकि नवमस्थ राहु के कारण पूर्व निर्धारित यात्राएं निरस्त होंगी।

5 अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा हेतु आपकी विदेश यात्रा होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी बहुत ही जरूरी है क्योंकि 13 जुलाई के बाद राहु एवं शनि का गोचर दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। 5 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे।

सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में सोमवार के दिन धारण करें।
- तुला दान मतलब अपने बजन के बराबर अन्न का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी आगे बढ़ेगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते है। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है ऐसी विषम परिस्थिति में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ सफलता मिलेगी। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। काम धंधा अच्छा नहीं चलेगा। लेन देन के व्यापार में हानि होने की संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

धन संपत्ति

मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध बिगड़ सकता है। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपनी व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें।

नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में भी आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा।

घर–परिवार, समाज

परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्य पूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट–मित्र अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में केतु की स्थिति इस बात के संकेत कर रही है कि यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके सम्बंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन–सहन व दिनर्चया बिगड़ सकती है, जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है तथा कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान–पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप अपने को स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है। किसी यात्रा के दौरान भी आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः अनावश्यक यात्राएं करना भी ठीक नहीं होगा। गलत प्रवृत्तियों पर भी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। किसी कानूनी मामले में पड़कर चिंता करना भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा। खान–पान पर संयम रखें अन्यथा उदर विकार होने की सम्भावना है। आपको समय–समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह साल श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते है तो यह समय उत्तम है।

यदि आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

यात्रा–तबादला

इस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद आपकी छोटी मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफि लाभप्रद रहेगी। सामुद्रिक यात्रा या जलीय स्थान की यात्रा अधिक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह साल अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आप अपना धर्म समझेंगे।

- वीरवार के दिन पीला वस्तु केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 25 सतम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला–जुला रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यापारिक उन्नति के लिए कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपको सरकारी अफसरों और अनुभवी लोगों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से मिलता रहेगा।

6 मई से 30 जुलाई तक आपके कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। मित्र के साझेदारी में कड़वाहट आने की संभावना बन रही है। जुलाई के बाद आप अपने कार्यक्षेत्र को लेकर कुछ नई योजनाएं बनाएंगे तथा आपके कार्यो में सुधार होगा। वर्षान्त में आप व्यवसाय में अधिक व्यस्त रहेंगे। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी व आय के साधनो में सुधार होने के प्रबल योग हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए इस वर्ष आपको ज्यादा सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है। कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकते हैं। 6 मई के बाद आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। शेयर बाजार व सट्टे–लॉटरी में धन लगाने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करेंगे। थोड़ी सूझ–बूझ और अवसर को पहचान कर आप धन कमाने में सफल रहेंगे। अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। 25 सितम्बर के बाद धन संपत्ति के मामले में सुधार देखने को मिलेगा। जीवनसाथी को अपने कार्यक्षेत्र में कोई सफलता मिलने से आपको आर्थिक सहयोग मिलना संभव है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। संतान या पिता के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। 6 मई के बाद अचानक धर्मपत्नी के साथ संबंधो में खटास

आने की संभावना बन रही है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने के कारण आप कुछ परेशान रह सकते हैं, परन्तु 30 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अनुकूलता के साथ–साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। वर्षान्त दाम्पत्य जीवन के लिए काफी शुभ है। पति–पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पुराने परिचितों से मिलने–जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा। यह समय आपके दूसरी संतान के लिए ज्यादा शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के लिए शुभ है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। लग्नस्थ गुरू के कारण आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। खाने पीने पर आप विशेष ध्यान देंगे।

6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके स्वास्थ्य में कुछ कमी आने की संभावना बन रही है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों की वर्ष के प्रारम्भ में पढ़ाई–लिखाई में रुचि बढ़ेगी। स्मरण शक्ति अच्छी होने से आप कठिन विषयों को बड़ी आसानी से समझने में सफल होंगे। उच्च शिक्षा तथा रिसर्च से जुड़े छात्रों को अपनी मेहनत के अनुपात में ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनको 6 मई के बाद नये अवसर मिलने की उम्मीद है तथा 25 सितम्बर के बाद शिक्षा संबंधित सभी कार्यो में सफलता मिलने की प्रबल संभावना बन रहा है।

यात्रा–तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक लम्बी यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटक स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रहा है। 6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके व्यवसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठा व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतित होगा। गुरु भक्ति व मन्त्र सिद्धि के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- नीलम रत्न धारण करें।
- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं लग्न स्थान मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घ ातक होगा।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करना बहुत जरूरी है तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम का स्रोत बना रहेगा। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में अधिक खर्च करेंगे।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच–विचार कर निर्णय लें। यह वर्ष जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है। संपत्ति के क्रय–विक्रय संबंधी कार्यों के लिए 22 जून को राहु ग्रह का गोचर सफलता लेकर आ रहा है। अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान–सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। सप्तमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि जीवनसाथी की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों को बताता है। द्वितीय स्थान में गुरु की स्थिति परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बना रही है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक मामलों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। वर्षान्त में घर में मांगलिक कार्य भी संभव होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपकी आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें और अपने खान–पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

जून के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से बिगड़ सकता है। अतः खान–पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घ ुटनो में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल चल रहा है जिसके कारण आपको धोखा मिल सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 22 जून के बाद वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में छोटी–मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 10 जून के बाद आप बड़ी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से

दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। जून के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित होगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होगा। किसी तीर्थ स्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग में आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरुवाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता–पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं छटे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष अच्छे परिणाम के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। संपर्कसूत्रों से निश्चित ही आपका भला होने वाला है। शब्दों में मिठास लाएं इससे आपको अधूरे कार्य पूरे करने में मदद मिलेगी। अपने अधिकारों में थोड़ी कटौती करें। यह आपके लिए अच्छा होगा। कार्यक्षेत्र में कुछ लोगों से किये गए समझौते में दरार आने की संभावना दिख रही है। इस दिशा पर तुरंत कार्यवाही करें। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो सभी कार्यों में पारदर्शिता रखें नहीं तो मित्रता में दरार आ सकती है। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी सहायता करते रहेंगे।

11 सितम्बर के बाद आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें इच्छित लाभ मिलेगा तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। अपने अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य पर पैसे खर्च करा सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा।

30 जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा वापिस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले सावधान रहना बहुत जरूरी है।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयो के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहने वाला है। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि पत्नी की सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।

तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 30 जुलाई को द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

19 सितम्बर के बाद सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। शिक्षा–दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेगा। सामाजिक गतिविधियों की व्यस्तताओं के चलते आपको अपने स्वास्थ्य की चिंता नहीं रहेगी तथा आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक शान्ति भंग होगी। सुबह जल्दी उठ कर पार्क में घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को और ज्यादा प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना दूर हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप सभी विषयों का अभ्यास बहुत ही अच्छे तरीके से करेंगे परिणामस्वरूप नतीजों में सकारात्मकता देखने को मिलेगी। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

19 सितम्बर के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अधिक मेहनत करनी होगी। आपको धैर्य और बुद्धिमत्ता से अपना काम संभालना होगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा–तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी–मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको काफी लाभ मिलेगा। लग्न स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ सकता है तथा घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन अभिमन्त्रित कर गले में धारण करें।
- नियमित रूप से श्रीसूक्तं और दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि कोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः बिना किसी पर विश्वास किए आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। आपकी सफलता में आपके सहकर्मियों का विशेष सहयोग होगा। आप नई योजनाएं बनाकर भविष्य में लाभ प्राप्त करेंगे।

16 फरवरी के बाद नौकरी करने वालों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा यही आपकी सफलता का कारण बनेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें आ सकती हैं।

16 फरवरी के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा हो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर–परिवार, समाज

16 फरवरी तक का समय पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद श्रेष्ठ हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। उनका प्यार आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा। भाई बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का

राहु आपको संतान संबंधित परेशानी दे सकता है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं।

संतान

इस वर्ष आप संतान को लेकर अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम स्थान का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधानी से रहें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

16 फरवरी के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप छोटी–मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो आपको परहेज की ज्यादा जरूरत है। आंख, पेट, पाचन और नसों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। ईलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

द्वितीय स्थान का शनि स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा–दीक्षा प्रभावित कर सकता है तथा करियर के प्रति एकाग्रता बनाए रखें क्योंकि आपका मन अशान्त रहा सकता है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी'–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा के योग बना रही है। सामुद्रिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी–मोटी परेशानियां भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम स्थान का राहु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। इस वर्ष आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा–पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएगी। 16 फरवरी के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई पूजा अर्चना करेंगे, जिसमें आप अपने सगे सम्बन्धियों को भी आमंत्रित करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह–सुबह पीपल के वृक्ष को जल दें तथा संन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपनी दिनचर्या सुधारें व तामसिक वस्तुओं का सेवन कम करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में कुछ अच्छा करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। दशम भाव पर गुरु की दृष्टि पदोन्नति की प्रबल संभावना बना रही है। आपके आत्मविश्वास व कार्य क्षमता में अधिक पैनापन आएगा। समय–समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। नया काम शुरु करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि इस वर्ष शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है अतः जल्दीबाजी में आप कोई गलत निर्णय ले सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य फलदायक रहेगा। आपके परिवार में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी परेशानियां आ सकती हैं जिससे आपका धन खर्च हो सकता है परंतु आपको पैतृक संपत्ति प्राप्ति के योग भी हैं। वर्ष के प्रारम्भ में वाहन व संपत्ति क्रय संबंधी योजनाएं बनेंगी।

15 जून के बाद अपने परिवार में किसी व्यक्ति को उधार पैसा न दें वरना वापसी की उम्मीद कम बन रही है। किसी मांगलिक कार्य या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है। वर्ष का पूर्वार्द्ध आर्थिक दृष्टि से सामान्य होगा एवं वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अत्यधिक अनुकूल है। आपकी आय में वृद्धि के शुभ संकेत हैं।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा परन्तु 2 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित रहने वाला है। परिवार में भावनात्मक लगाव की कमी होगी, जिससे परिवार में वैमनस्य व वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो द्वितीय स्थान का शनि एवं चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं।

आपकी माता के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है, उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप संतान के मामले में अधिक चिंतित रहेंगे। पंचम स्थान का राहु संतान की उन्नति में व्यवधान डाल सकता है। गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अति श्रेष्ठ रहने वाला है। संतान की तरक्की के योग हैं जिससे आपको गर्भ की अनुभूति होगी। संतान के करियर, शिक्षा व विवाह के लिए शुभ योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। इस वर्ष शनि के जलीय राशि में होने के कारण कफ, मोटापा तथा मधुमेह की समस्या आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना परम आवश्यक है। खाने–पीने की वस्तुओं से परहेज रखें। स्वास्थ्य में छोटी मोटी समस्याएं रहेंगी परंतु कार्य क्षमता बनी रहेगी। मानसिक तनाव से बचें व व्यवहारिक होकर अपनी समस्याओं का निराकरण करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवशकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका भी आपके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु का गोचर आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा क्योंकि पंचम स्थान का गुरु स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ होता है। इसकी नवम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि होगी। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आप योग, ध्यान आदि क्रियाओं में रुचि लेंगे तथा आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला–जुला रहने वाला है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए पहले से अधिक लगन और मेहनत से काम करना होगा। पंचम स्थान का राहु अचानक आपकी शिक्षा–दीक्षा को भी प्रभावित कर सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए शुभ रहने वाला हैं। प्रतिद्वंदियों की नीतियां आपको परेशान नहीं कर पाएंगी। परीक्षाओं का परिणाम आपके पक्ष में आने के पूर्ण योग बन रहे हैं। यह अवधि आपके करियर के लिए निर्णायक साबित हो सकती है।

यात्रा–तबादला

गुरु के गोचरीय प्रभाव के कारण इस वर्ष पूर्वार्द्ध में आप अपनी मातृभूमि की यात्रा करेंगे तथा आपका मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने की प्रबल संभावनाएं भी स्पष्ट हो रही हैं। उत्तरार्द्ध में यात्रा के योग बन रहे हैं।

इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है। यह यात्रा आपके अपने व्यावसायिक कार्य हेतु होगी एवं इससे अपको धन लाभ होगा। वर्षारम्भ में आपकी तीर्थ यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंदता के कारण आप अधिक पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है।

- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।
- गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय–समय पर खट्टा–मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :– मंगल
(30/09/2024 - 01/10/2031)

मंगल की महादशा 30/09/2024 को आरम्भ और 7 वर्ष की होकर 01/10/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि प्रथम, द्वितीय तथा दशम भाव पर है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी जीवन वृत्ति उत्तम रही होगी और यश, ख्याति तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति हुई होगी। मंगल की दशा के दौरान आपका धन–संग्रह होगा, साझेदारी में लाभ होगा और यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

ताप संबंधित कुछ कष्ट को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के कारण समस्याएं कुछ बढ़ सकती हैं। आप–ज्वर, सरदर्द, पित्तदोष तथा सर्दी–जुकाम आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपकी जननेन्द्रिय प्रभावित हो सकती है। इन मामूली गड़बड़ियों को छोड़, जिन पर नियंत्रण किया जा सकता है, आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आप धन–संग्रह कर सकते हैं। व्यापार में कमाई में वृद्धि होगी। व्यावसायिक आय में भी दशा विकास के साथ वृद्धि होगी। जीविका के लिये सिविल इन्जीनियरिंग, प्रशासनिक सेवाओं, सैन्य सेवाओं, सर्जन अथवा दन्त चिकित्सक के कार्य, सुरक्षा वैज्ञानिक का कार्य अथवा औद्योगिक–प्रतिष्ठान में नौकरी का चयन कर सकते हैं। लोहा–इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे के सामान, खनिज, दवा आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सार्वजनिक सेवा अथवा कार्यालय में कार्य कर रहे लोग अच्छा करेंगे। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि, पदोन्नति और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति प्रतिष्ठा और सम्मान मे वृद्धि होगी तथा दशा की प्रगति के साथ–साथ व्यवसाय–व्यापार में तरक्की होगी।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

शनि की अन्तर्दशा में आपको वाहन सुख की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी सम्पत्ति का विकास होगा। इस दशा में आपको मकान अथवा अन्य जमीन–जायदाद की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को इस दशा में सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में लम्बी और लाभदायक यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आप अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे। आप खेल तथा अन्य कार्यक्रमों में भाग लेंगे। आपकी कला के कार्यों में रुचि होगी। आपको अपनी स्थिति बरकरार रखने के लिए कठिन

परिश्रम करना होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति तथा कर्मशक्ति प्रचुर मात्रा में होगी और आप अपने नेतृत्व गुणों का उपयोग करेंगे। सार्वजनिक मामलों, गणित, विज्ञान, विधि, इन्जीनियरिंग, व्यापार आदि में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय तथा उद्‌यमी होंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या होगी किन्तु, वे क्रियाशील, स्फूर्तिवान और आत्मविश्वासी होंगे। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन–जायदाद, यश और ख्याति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, मनोकामनाओं की पूर्ति होगी और उनके मित्रों की संख्या विशाल होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को सट्टे में कुछ हानि के साथ लाभ और उत्तम तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि बड़ों के लिए समय समृद्धिशाली रहेगा। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम रहेंगे। आपके व्यापारिक सहयोगियों की संख्या विशाल होगी और आपको उनके साथ का आनन्द मिलेगा। सामाजिक स्तर पर सफलता की सम्भावना है।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के कारण आपका विवाह होगा और संपत्ति, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी। आगे आनेवाली राहु की दशा में कुछ समस्याए उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य संबंधी गड़बड़ी तथा छोटी यात्रा हो सकती है। शनि की अन्तर्दशा आपके लिए अति उत्तम होगी और आपको बच्चों से सुख, आराम तथा धन की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी लम्बी यात्राएं होंगी ओर धन, सुख व पिता से लाभ मिलेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव होगा। लग्नेश शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपके व्यवसाय में तरक्की होगी।

अंर्तदशा :– मंगल – राहु
(26/02/2025 - 17/03/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 26/02/2025 को प्रारंभ होकर 17/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके विदेशियों से व्यापारिक संबंध बन सकते हैं। शत्रुओं पर विजय होगी। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जनसंपर्क बढ़ेगा। विवाह हो सकता है। विवाह से धनलाभ होगा। जीवन में खूब तरक्की होगी। आप साहसी और तीव्रता से निर्णय लेने वाले होंगे। सम्मान और उच्चपद का संकेत है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता धनार्जन करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई–बहन निवेश और सट्टेबाजी से लाभ कमा सकते हैं।

आपकी संतान को परिश्रम करना होगा। उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर से कार्यरत हैं तो खूब धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारी धनी बनेंगे और अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :– मंगल – गुरु
(17/03/2026 - 21/02/2027)

आपकी मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/03/2026 को प्रारंभ होकर 21/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको घरेलू सुख मिलेगा। धन और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। भूमि से आमदनी अच्छी होगी। अदालत में जायदाद संबंधी मुकदमे में जीत होगी। शिक्षा के लिए समय अच्छा है। निवास बदलने के लिए समय शुभ है। सरकार से फ़ायदा हो सकता है। उत्तम कार्यक्षमता और परिश्रम के लिए प्रसिद्ध होंगे। धन और जायदाद की अचानक प्राप्ति हो सकती है। शत्रुओं पर विजय होगी। यात्रा हो सकती है। आध्यात्मिकता की ओर रुझान होगा।

आपके जीवनसाथी की किस्मत चमकेगी। धन प्राप्त करेंगे, व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन हो सकता है या धन कमाएंगे। माता भाग्यशाली होंगी। आपके भाई–बहन धन प्राप्त करेंगे, उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख होगा, कार्यों में सफल होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा और धनसंचय की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति या वांछित तबादले का संकेत है। परामर्शदाताओं को कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा मगर बदपरहेजी न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शनि
(21/02/2027 - 31/03/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/02/2027 को प्रारंभ होकर 31/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आर्थिक मामलों में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं, मगर धन के स्तर में स्थायित्व आएगा। सुख–सुविधाएं प्राप्त होंगी, मगर कुछ बाधाएं आ सकती हैं। प्रशासनिक क्षमता उत्तम रहेगी। पराविद्या में रुचि हो सकती है। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकते हैं। आपके पिता प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे। माता धनी बनेंगी। भाई–बहनों को कार्यक्षेत्र में निराशा हो सकती है मगर वे बाधाओं को पार कर लेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, स्थिति में सुधार होगा।

आपकी संतान को कठोर परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो धनार्जन करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, लाभ होगा। परामर्शदाता अतीत में किये अचल संपत्ति में निवेश से लाभान्वित होंगे। व्यापार में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांत और नेत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार को उपवास करें।

अंर्तदशा :– मंगल – बुध
(31/03/2028 - 29/03/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 31/03/2028 को प्रारंभ होकर 29/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपके उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, उच्चपद प्राप्त होगा। सरकार से लाभ मिल सकता है। शत्रुओं पर मधुरवाणी से विजय मिलेगी। शुभकार्यों पर खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापार से, विशेषकर विदेश से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। सफलता में बाधा आ सकती है जिसे परिश्रम और कर्मठता से पार कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। उनके पड़ौसियों से उत्तम संबंध रहेंगे। आपके भाई–बहनों को जायदाद मिल सकती है, शिक्षा उत्तम होगी, अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, प्रसिद्धि, धन और उच्च पद प्राप्त होंगे।

आपकी संतान भाषण, वाद–विवाद आदि में भाग ले सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा। परामर्शदाता समृद्ध बनेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे।

त्वचा और पाचनतंत्र का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – केतु
(29/03/2029 - 25/08/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/03/2029 को प्रारंभ होकर 25/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक शांति, प्रसिद्धि और धनलाभ का योग है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा, संतान से खुशी मिलेगी। आप स्वभाव से मददगार हैं। किसी फैसले को करने से पहले गहन विश्लेषण करते हैं। आप साहस का परिचय देंगे। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी माता की तीर्थयात्रा हो सकती है; उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके भाई–बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी। उन्हें

सफलता और समृद्धि मिलेंगी, बाधाओं को पार करेंगे।

आपकी संतान के पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है; भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; अप्रत्याशित धन मिल सकता है। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे; सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शुक्र
(25/08/2029 - 25/10/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/08/2029 को प्रारंभ होकर 25/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। मामापक्ष से लाभ होगा। विलास के साधनों पर धन खर्च हो सकता है। कर्ज़ का भुगतान करने में सक्षम होंगे। विवाद या मुकदमे में विजय होगी। मातहत सहयोग करेंगे। जीवन में सब सुख होंगे। धन, अचल संपत्ति और वाहन का संकेत है।

आपके जीवनसाथी धन का संचय करेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे। आपके पिता की आय पर्याप्त होगी, लोकप्रिय बनेंगे। माता को धन और सफलता प्राप्त होंगे। भाई–बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, परिवार से संबंध मधुर होंगे, उन्हें जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है। आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा, जबकि व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है; विशेषकर चोट, उत्सर्जन तंत्र और उदर की व्याधियों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :– मंगल – सूर्य
(25/10/2030 - 02/03/2031)

आपकी मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

25/10/2030 को प्रारंभ होकर 02/03/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रतिद्वंद्वियों पर विजय होगी। आप स्वस्थ और ऊर्जावान होंगे और सब बाधाओं को पार कर लेंगे। उच्चपद प्राप्त होगा, जीवन में उन्नति होगी। प्रसिद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता और प्रसन्नता मिलेगी। औषधियों से संबंधित कार्य में सफलता मिल सकती है। प्रशासनिक क्षमता उत्तम रहेगी। प्राच्य विद्या में रुचि होगी। दूर की यात्रा संभव है या निवास परिवार से दूर हो सकता है।

जीवनसाथी बाधाओं को पार करेंगे और प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे। आपके पिता की साख उत्तम रहेगी। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। भाई–बहनों की शिक्षा उत्तम रहेगी, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, सरकार से लाभ होगा, बहुत से मित्र होंगे।

आपकी संतान को धनलाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं, धनलाभ और अधिक खर्चे का योग है।

रोगों से प्रतिरोध की शक्ति अच्छी होगी। फिर भी नेत्र, हृदय और कार्यक्षमता से संबंधित विकारों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :– मंगल – चन्द्र
(02/03/2031 - 01/10/2031)

आपके लिए मंगल की महादशा 30/09/2024 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 02/03/2031 को प्रारंभ होकर 01/10/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

आप इस अवधि में बहुत सफल होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी। कला, संगीत, नृत्य, साहित्य आदि में सफल हो सकते हैं। आपका मष्तिष्क सक्रिय है। लघु यात्राएं हो सकती हैं, नये वातावरण में बसने का मन बनेगा। व्यापारिक यात्राओं और कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। घर में मेहमानों का शुभागमन हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। पिता सुख–चैन की ज़िदगी बसर करेंगे ; घरेलू सुख और धनलाभ का संकेत है। माता सफल होंगी, मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। भाई–बहन धनी बनेंगे, सुख –सुविधाओं से युक्त होंगे।

आपकी संतान अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो धनलाभ, सफलता प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो बहुत सफल होंगे और सम्मानित होंगे। परामर्शदाताओं के

महादशा :– राहु
(01/10/2031 - 30/09/2049)

राहु की महादशा 01/10/2031 को आरम्भ और 30/09/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य–व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा–फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य–व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र–उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार–लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन–चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू–सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग

लेंगे। दवा, कम्प्यूटर–विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व–गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन–चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य–समस्या और वाणिज्य–व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई–बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई–बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

अंर्तदशा :– राहु – राहु
(01/10/2031 - 13/06/2034)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 13/06/2034 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि ऐशो–आराम और अय्याशी में हो सकती है। निम्न कोटि के या विदेश के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :– राहु – गुरु
(13/06/2034 - 05/11/2036)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 13/06/2034 को प्रारंभ होकर 05/11/2036 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग–बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। आप संतुष्ट और प्रसन्नचित्त रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप विद्वान और दार्शनिक प्रवृत्ति के होंगे ; आलोचकों के साथ कठोरता से पेश आएंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की

अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा–उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :– राहु – शनि
(05/11/2036 - 12/09/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 05/11/2036 को प्रारंभ होकर 12/09/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 4, 8, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप खूब परिश्रम करेंगे, मगर फल उससे बहुत कम मिलेगा। आय में गिरावट आएगी। कटु वाणी के कारण समाज में बदनामी होगी। व्यर्थ इधर–उधर भटक सकते हैं। अवसर उपलब्ध होंगे, मगर उनका लाभ उठाने में असमर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जीवन दुखमय हो सकता है। धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकों से संबंधित कार्यों में खूब लाभ हो सकता है और सब कष्ट दूर हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

अंर्तदशा :– राहु – बुध
(12/09/2039 - 01/04/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 12/09/2039 को प्रारंभ होकर 01/04/2042 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के

द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस दशा की अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है, आलस्य की भावना हो सकती है। शिक्षा में बाधा आ सकती है। आप झगड़ालू और दिखावापसंद हो सकते हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपका व्यवहार उत्तेजनापूर्ण हो सकता है, इस कारण कोई स्नायविक या मानसिक व्याधि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – केतु
(01/04/2042 - 19/04/2043)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 01/04/2042 को प्रारंभ होकर 19/04/2043 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

लग्न में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप किसी व्याधि से ग्रसित हो सकते हैं। शरीर दुर्बल हो सकता है। फोड़े–फुंसी हो सकते हैं। साख में गिरावट आ सकती है। मष्तिष्क बेचैन रह सकता है। उत्तेजना अधिक रहेगी। इस कारण विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – शुक्र
(19/04/2043 - 19/04/2046)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2031 को प्रारंभ होकर 30/09/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 19/04/2043 को प्रारंभ होकर 19/04/2046 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व

को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के व्यक्ति आपसे रुष्ट रह सकते हैं। वे आपका चरित्र बर्बाद कर सकते हैं। शत्रु इस अवधि में समाप्त हो जाएंगे। विषय–वासना में अधिक रुचि के कारण स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार–चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू – स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

एस्ट्रोग्राफ – 2026

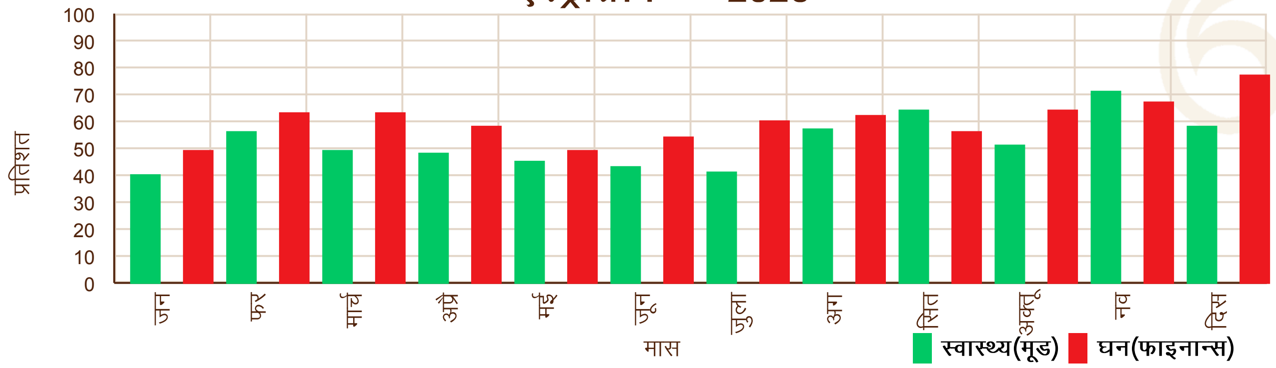

एस्ट्रोग्राफ – 2027

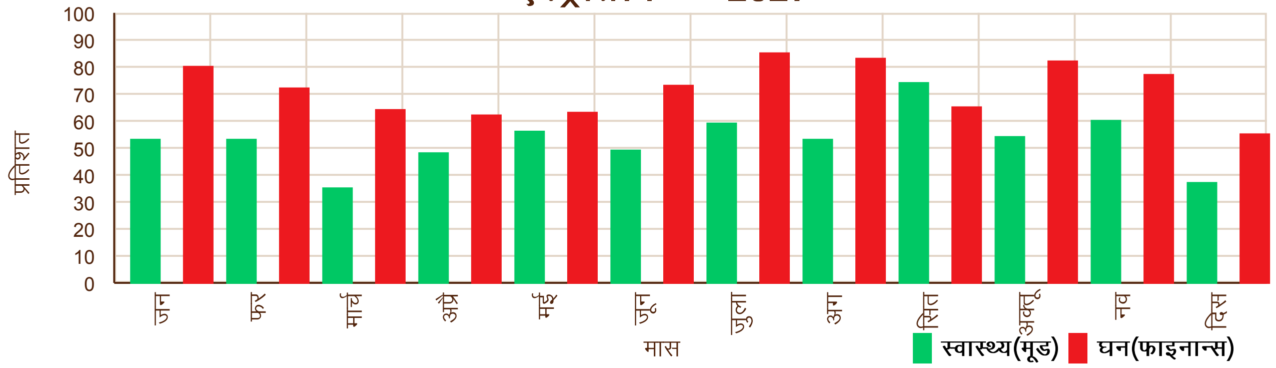

एस्ट्रोग्राफ – 2028

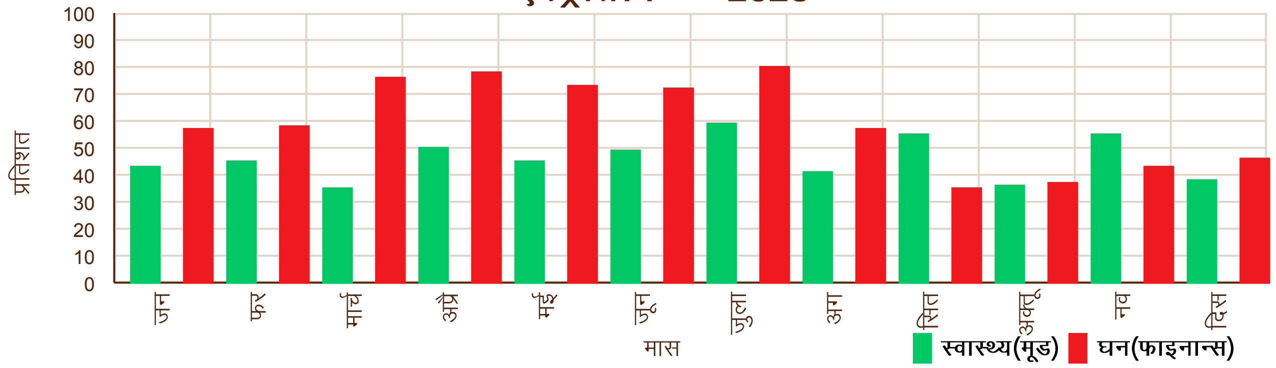

एस्ट्रोग्राफ – 2029

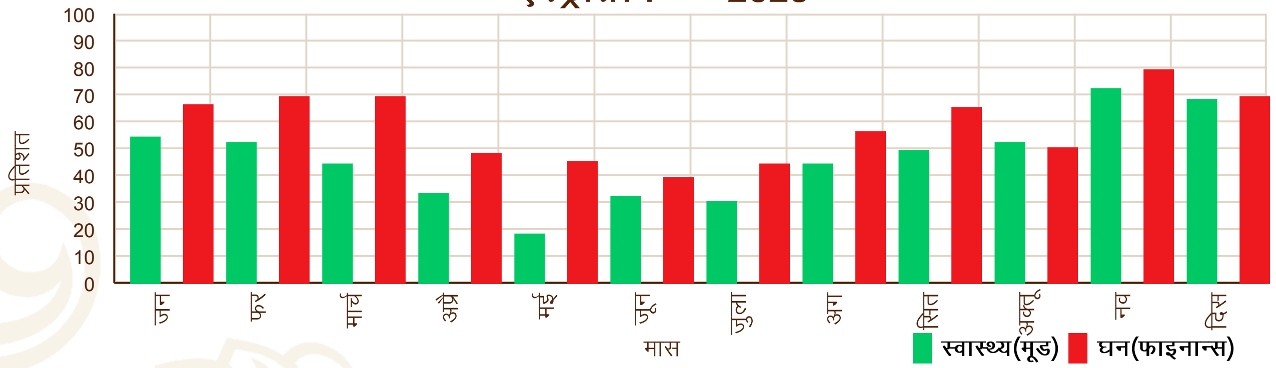

Ranjit

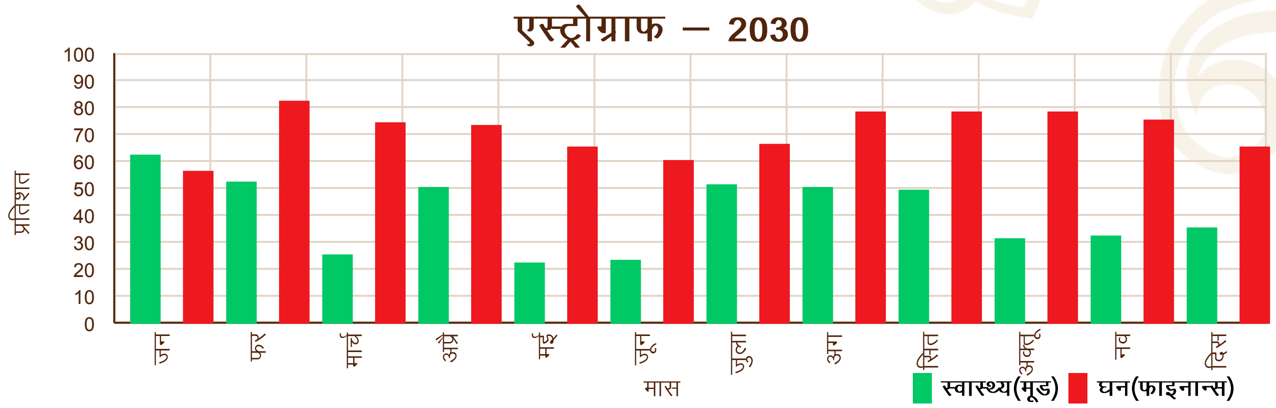

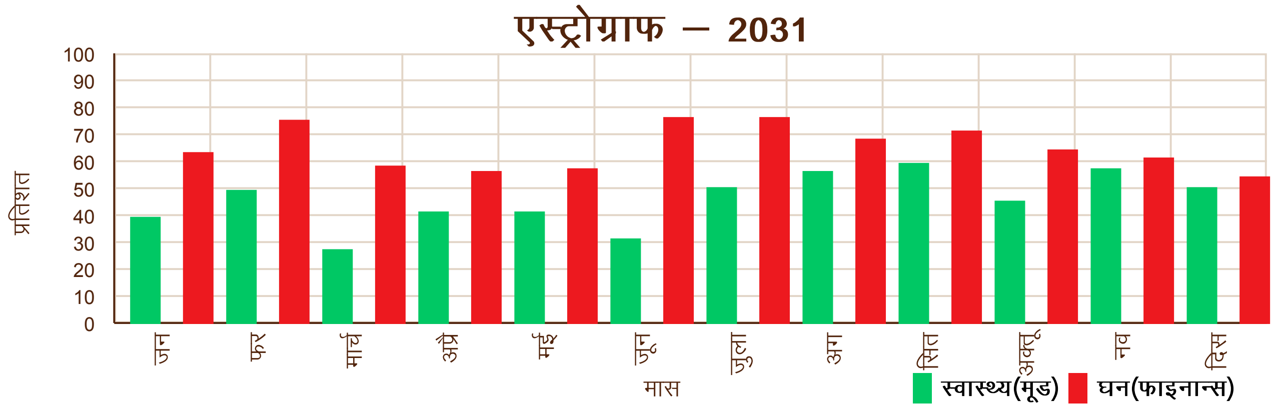

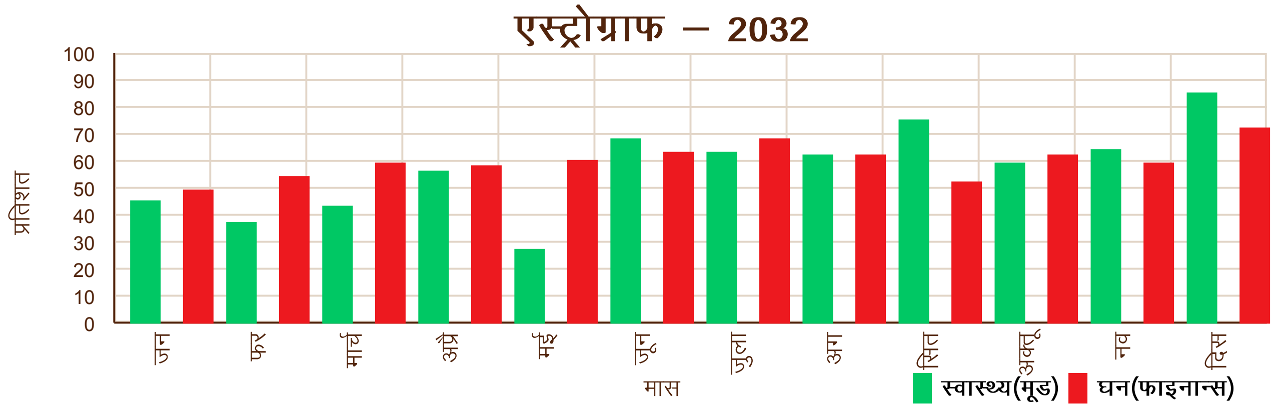

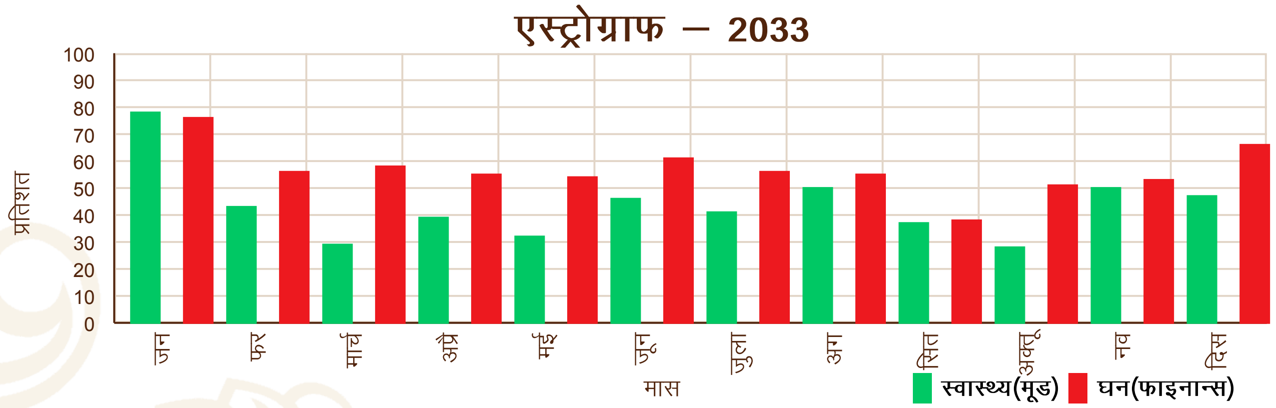

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

एस्ट्रोग्राफ – 2034

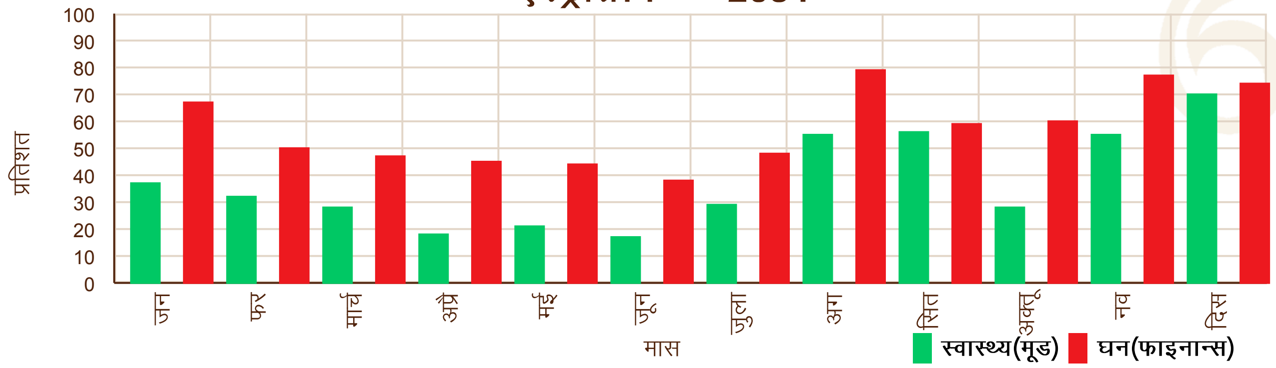

एस्ट्रोग्राफ – 2035

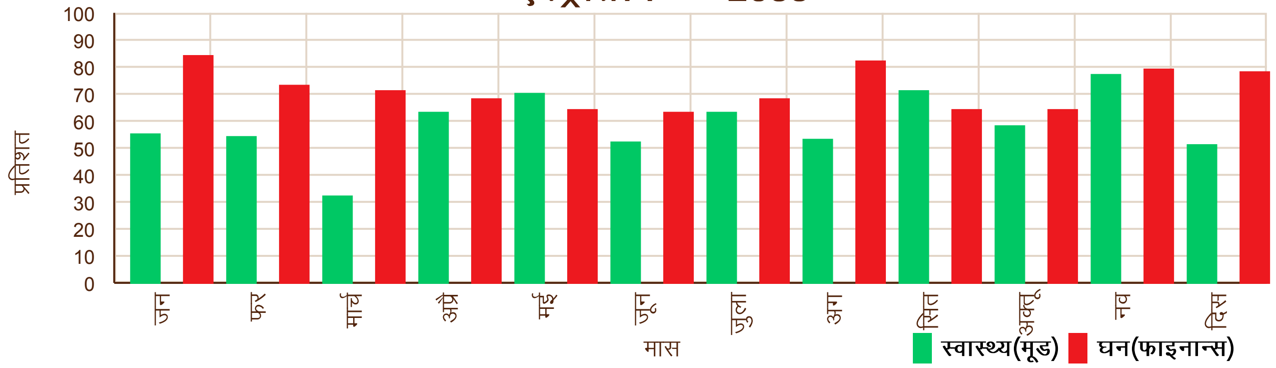

एस्ट्रोग्राफ – 2036

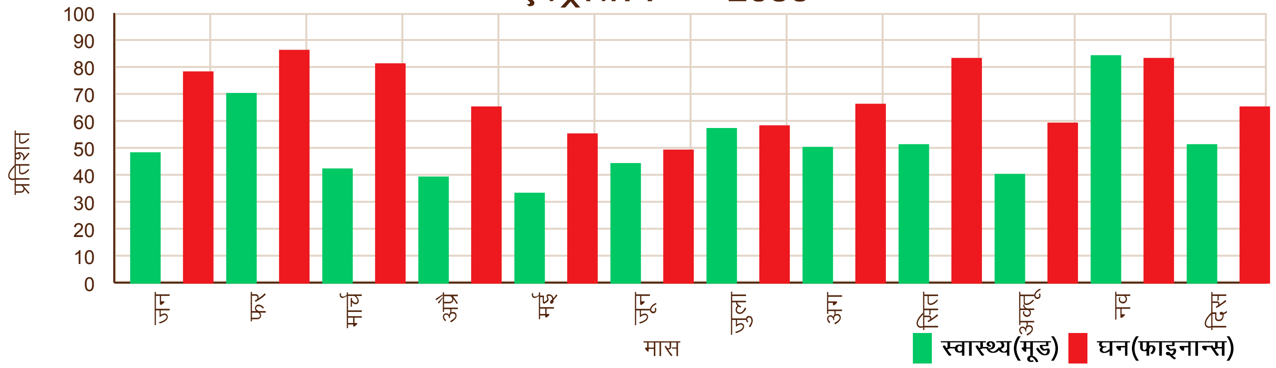

एस्ट्रोग्राफ – 2037

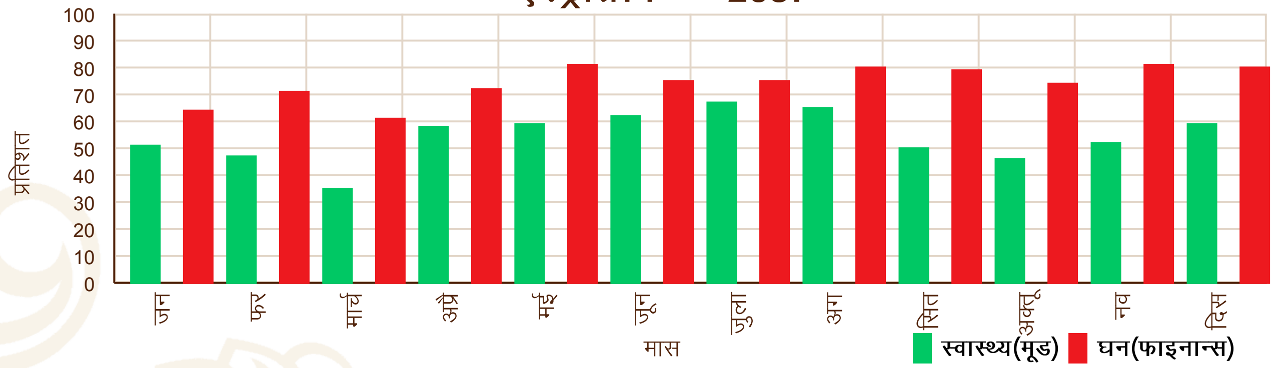

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

एस्ट्रोग्राफ – 2038

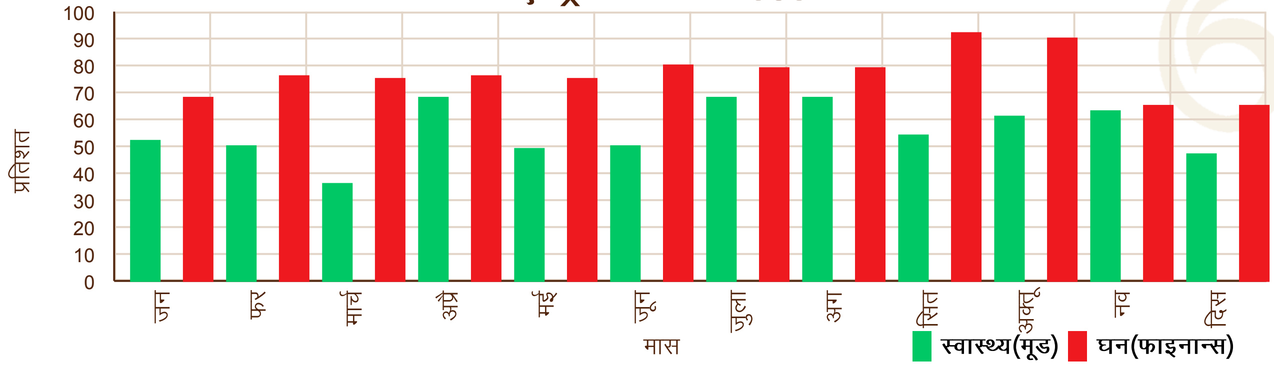

एस्ट्रोग्राफ – 2039

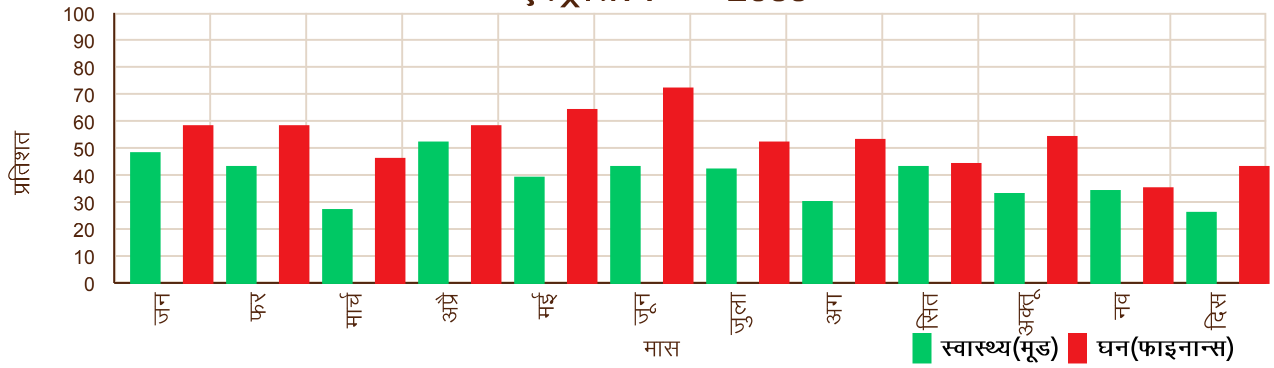

एस्ट्रोग्राफ – 2040

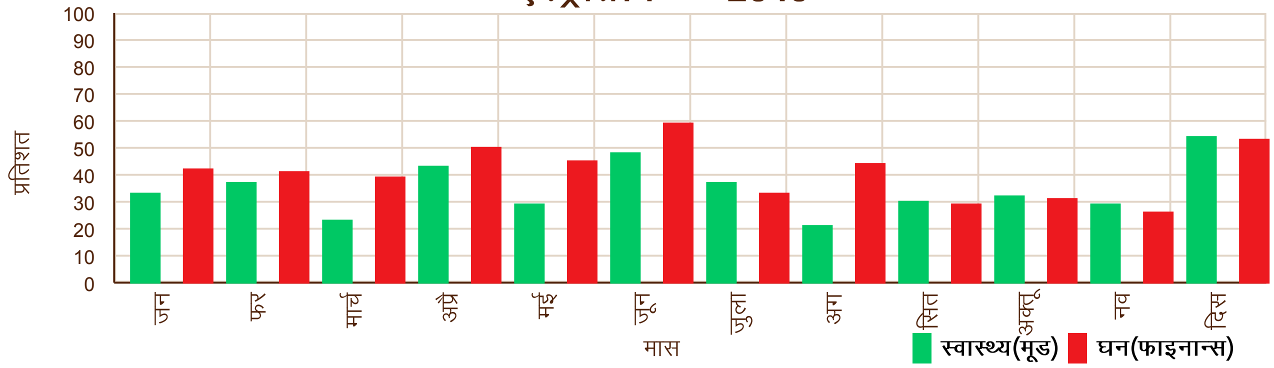

एस्ट्रोग्राफ – 2041

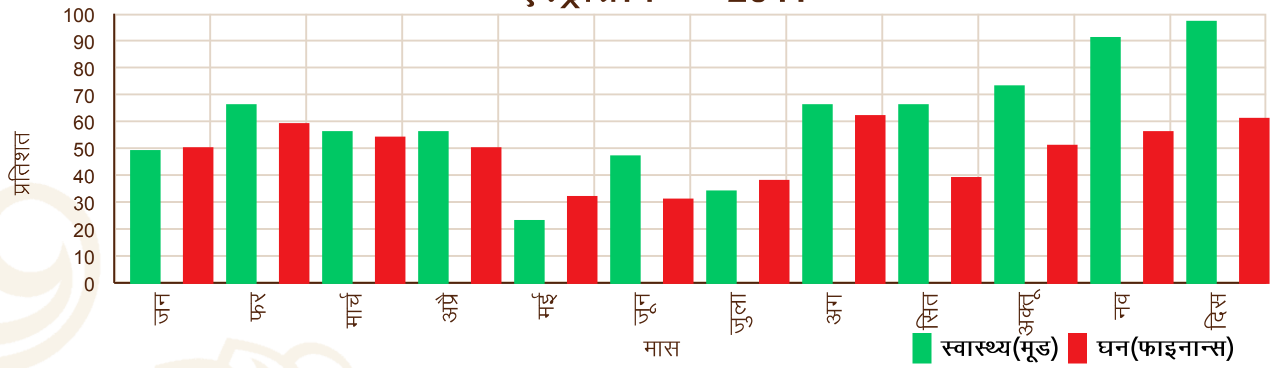

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

Ranjit

एस्ट्रोग्राफ – 2042

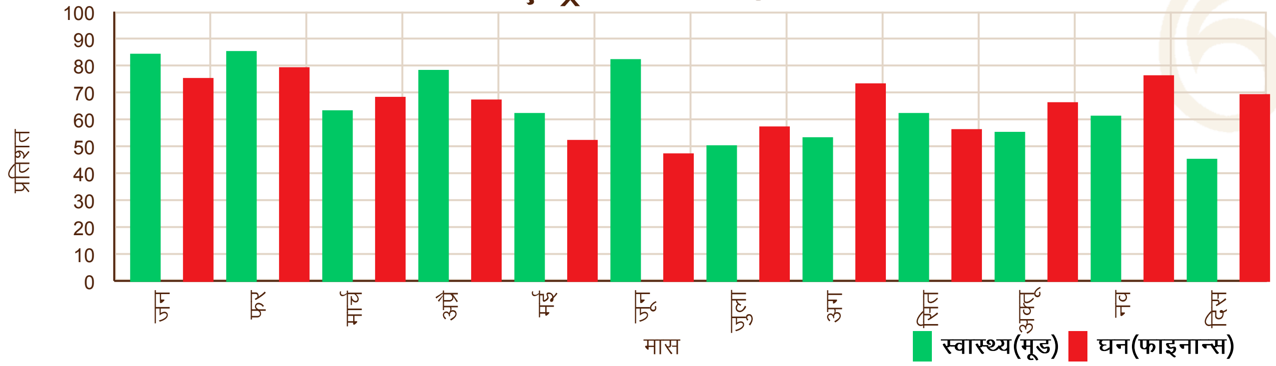

एस्ट्रोग्राफ – 2043

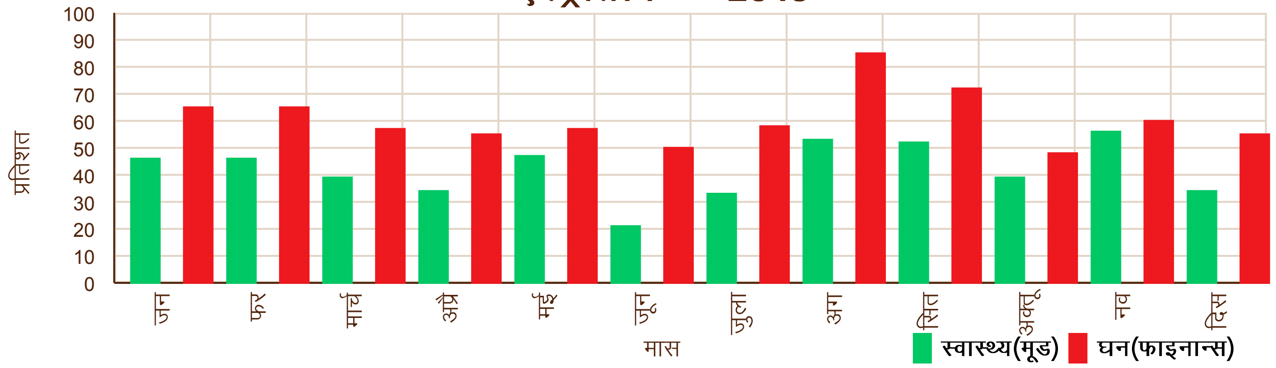

एस्ट्रोग्राफ – 2044

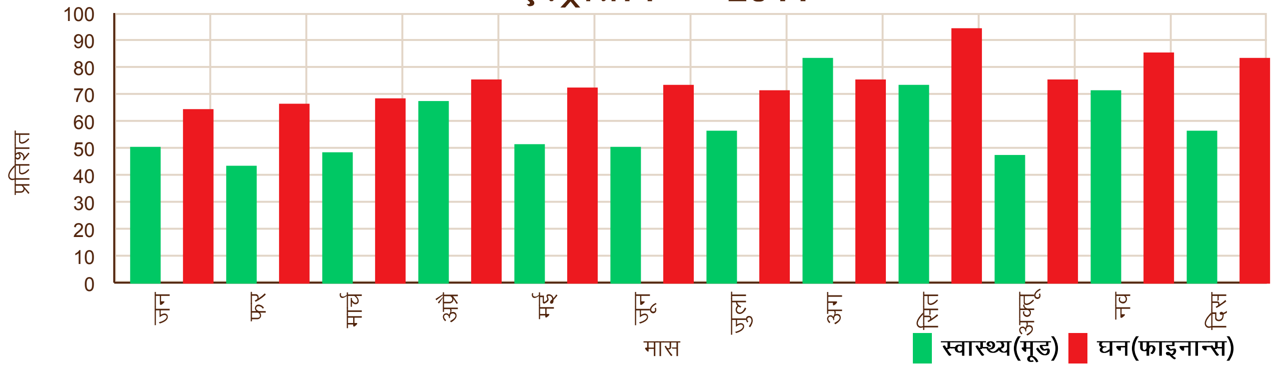

एस्ट्रोग्राफ – 2045

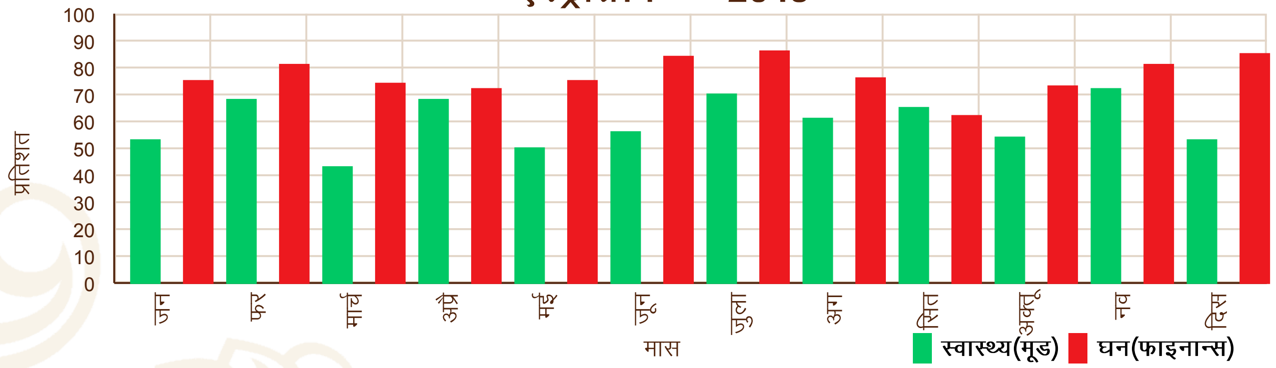

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग–अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि–
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा–
विझाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3–5

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल　　　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।

सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 6

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र — योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षित हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध — योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

नौका योग

होरादिकष्टकेभ्यः सप्तर्क्षगतैः क्रमेण योगाः स्युः।
सलिलोपजीविविभवा बह्वाशाः ख्यातकीर्तयो हृष्टाः।
कृपणा बलिनो लुब्धा नौसम्भूताश्चलाः पुरुषाः ।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 11, 21

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से सप्तम स्थान तक ही सातों ग्रह स्थित हों तो नौका योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र,श — योग की संभावना : 45 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में नौकायोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप जल द्वारा जीविका करके अधिक विभव तथा धन लाभ कर्त्ता, प्रसिद्ध, यशस्वी, आशावान, प्रसन्न चित्त, कृपण, बली, लालची और चंचल स्वभाव के प्राणी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–41

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरू से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–49

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.–285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–59

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो

तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.–148

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–35

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–9

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि | योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.– 3/श्लो.–1

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : मंगल | योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–3/श्लो.–11

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,मंगल | योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पत्नी योग

स्वर्क्षे कुटुम्बाधिपतौ कलत्रनाथे यदा त्वेककलत्रभाक् स्यात्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ–6/श्लो.–13

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश और सप्तमेश अपनी–अपनी राशि में स्थित हो अर्थात् दोनों स्वराशिगत हो तो एक स्त्रीवाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक ही जीवनसाथी से सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–15

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–19

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–30

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–62

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

षष्ठेंगपे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश षष्ठ भाव में चला गया हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु   योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र   योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,गुरु,शुक्र,राहु   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51 ।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,राहु,सूर्य   योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

Pt. Rakesh Bhatt, J3 Astrology
303, Power Colony, Indl. Area,
Phase-2, Panchkula
+918728883111